PROJECT REPORT

UGC SPONSORED

MINOR RESEARCH PROJECT

(Approval Letter F.No.23-2403/10(WRO) Date-11/05/2011

On

''मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में 'शिक्षा समस्याएँ' : एक अध्ययन'' (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के सदंर्भ में)

Submitted by

Prof. Suvarna Narsu Kamble

M.A.,B.Ed.,M.Phil.,NET/SET

ASSISTANT PROFESSOR,

DEPARTMENT OF HINDI

ARTS & COMMERCE COLLEGE, SATARA

MARCH – 2014.

CERTIFICATE

This is to certify that the minor research project entitled ''मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में 'शिक्षा समस्याएँ' : एक अध्ययन'' (इदननमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के संदर्भ मे) Which is being submitted herewith for the fulfillment of minor research project of university Grants Commission, Western Regional Office, Ganesh Khind, Pune is the result of the original research work completed by Prof. Suvarna N. Kamble.

Place – Satara.

Date –

(Dr.Y.S.Patne)

Principal,
Arts & Commerce College,
Satara.

प्रख्यापन

प्रमाणित किया जाता है की, प्रा.सुवर्णा नरसू कांबळे जी ने युजीसी के अंतर्गत ‘‘मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में शिक्षा समस्याएँ : एक अध्ययन’’ (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के संदर्भ में) इस विषय पर लघु शोध - प्रबन्ध पूरा किया है। प्रस्तुत लघु शोध - प्रबन्ध के लिए यथोचित संदर्भो का प्रमाण दिया गया है।

प्रा.सुवर्णा नरसू कांबळे जी ने यह कृति इससे पहले किसी अन्य विश्वविद्यालय की उपाधी के लिए प्रस्तुत नहीं की है।

तिथी :- 27 मार्च 2014

स्थान :- सातारा.

प्राचार्य,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा.

प्रतिज्ञापत्र

मैं प्रा.कु. सुवर्णा नरसू कांबळे सहायक प्राध्यापक के रूप में कला व वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा मे कार्यरत हूँ। मैंने ‘‘मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में शिक्षा समस्याएँ : एक अध्ययन’’ (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के संदर्भ में) इस विषय पर लघु शोध - प्रबन्ध पर शोधकार्य संशोधन किया है। लघु शोध - प्रबन्ध के लिए किसी भी किताब की नक्कल नही की है। आवश्यकता के अनुसार यथोचित संदर्भो को लेते हुए लघु शोध - प्रबन्ध का लेखन कार्य किया है।

तिथी :27 मार्च 2014

स्थान :- सातारा.

प्रा.सौ.सुवर्णा नरसू कांबळे
कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा.

प्राक्कथन

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। मानव जीवन के संस्कृति एवं सभ्यता का दर्शन साहित्य में अपरिहार्य बन जाता है। आज मानव मन की आकांक्षाओं, विद्रोह, शक्ति, सहानुभूति, कारूण्य, प्रेम, ईर्ष्या, हिंसाचार, स्वार्थ आदि का चित्रण साहित्य में खुलकर होने लगा है। हिंदी साहित्य जगत् के उपन्यास विधा में भी मनुष्य जीवन का लेखा जोखा प्रस्तुत हो रहा है। आधुनिकिकरण, पाश्चीमात्यकरण, वैश्विकीकरण के परिणाम स्वरूप; भारतीय समाज को बदलाव के साथ - साथ अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है । इक्कीसवी शताब्दी में पदार्पण करते मनुष्य जीवन की समस्त वास्तविकता, परिवेशगत जीवन्तता, जीवन के व्यापक गहन और जटिल अनुभवों और अन्तर्विरोधों के कई स्तरों का चित्रण आज के उपन्यासों में हो रहा है । मनुष्य जीवन की गुत्थिओं, समस्याओं को सुलझाने में 'शिक्षा' एक साधन, एक पथदर्शक के रूप में प्रस्तुत होती है। मनुष्य जीवन में प्राप्त परिस्थितियों से समायोजन करके जीवन की नय्या पार करने के लिये सुकाणू की तरह 'शिक्षा' सहाय्य करती है। 'शिक्षा' मनुष्य जीवन से पूर्ण रूप से संलग्न प्रक्रिया है, जिसकी हमे शारिरिक एवं जैविक तथा सामाजिक दोनों दृष्टिकोनों से आवश्यकता है। आज करोडों की संख्या में भारतीय लोग शिक्षा से वंचित है। आजादी के बाद शिक्षा क्षेत्र का विस्तार जरूर हुआ, परंतु आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं की तरह आज के समाज में शिक्षा संबंधी समस्याऐं एक नया रूप लेकर प्रस्तुत हो रही है। आज के जनवादी उपन्यासकारों की दृष्टि से शिक्षा क्षेत्र वंचित नही रह सका, परिणाम स्वरूप उनके उपन्यासों में शिक्षा संबंधी चित्रण होने लगा है।

प्राचीन काल से भारतीय समाज में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार एक विशिष्ट वर्ग को ही था। परिणाम स्वरूप; शिक्षा क्षेत्र में हमारा देश पिछडा ही रहा। ब्रिटीश शासन ने प्रशासन चलाने हेतू 'बाबू वर्ग' की निर्मिती की जिससे भारतीय समाज का ज्यादा कुछ भला नहीं हुआ। परंतु, शिक्षा का महत्व समाज में स्थित हुआ। आजादी के बाद भारत सरकार ने शिक्षा प्रचार - प्रसार के लिये अनेक योजनाओं का निर्माण किया, लेकिन शिक्षा समाज के सभी स्तरों तक पहुँच न पाई। भारत के गांव पर्वत - पहाडी इलाके में बसे दूर - दराज के गांव, ग्रामीण स्त्री, दलित, अनुसूचित जन - जातियों आज भी शिक्षा से दूर है। जहाँ शिक्षा का प्रचार - प्रसार हुआ, शिक्षा संस्थाओं का संख्यात्मक विकास

हुआ, वहॉ शिक्षा संबंधी अनेक समस्याओं ने भी जन्म लिया । जहॉ मानवमुक्ती का शिक्षा के माध्यम है वहॉ आज शिक्षा क्षेत्र में निर्माण समस्याओं का चित्रण करना समकालीन लेखकों ने अपना उत्तरदायित्व समझा है । आज की अधुनातन लेखिका 'मैत्रेयी पुष्पा' ने भी अपने कथा, उपन्यास, आत्मकथा, स्त्री - विमर्श आदि साहित्य विधाओं में शिक्षा की सद्य : स्थिती का यथार्थ चित्रण किया है । ग्रामीण जीवन का यथार्थता से चित्रण करनेवाली 'मैत्रेयी पुष्पा' ने स्वतन्त्रता के बाद ग्रामीण समाज में स्थित अनेक समस्याओं का यथार्थता से अंकन किया है । परंतु शिक्षा मनुष्य के उन्नती का मार्ग है उससे संबंधी समस्याओं को भी उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है । उसपर प्रकाश डालना आवश्यक लगता है, इसलिए 'मैत्रेयी पुष्पा' के उपन्यास साहित्य में शिक्षा समस्याऐं : एक अध्ययन (इदननमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के संदर्भ मे) यह विषय शोध प्रबंध के लिये चुनते हुए आज के समय शिक्षा क्षेत्र में कौनसी समस्याऐं स्थित है, उसपर दृष्टी डाली है ।

इस शोध प्रबन्ध का उद्देश समकालीन शिक्षा व्यवस्था में फैली अराजकता, अव्यवस्था, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, टूटते मूल्य आदि को समाज के सामने लाते हुए बध्दिजीवीयों, शिक्षाविदों, समाजहित चिंतक को इस समस्या पर गहराई से सोचने के लिए बाध्य करना है । 'शिक्षा' व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रथम अनिवार्यता है । शिक्षा को राष्ट्र विकास का परिमाण माना जाता है । राष्ट्र को सुयोग्य, शिक्षित नागरिक प्रदान करने हेतू छात्र, अध्यापकों, शिक्षा क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर सोचना समय की मॉंग है । देश की आजादी के बाद सार्वजनिक जीवन में आयी गिरावट के कारणों को तलाशते हुए 'शिक्षा' के उद्देश्य के बारे में फिर एक बार सोचने की आवश्यकता महसूस हो रही है । युवकों की संख्या ज्यादा रहनेवाले इस देश में आज बेरोजगारी का दाहकता रूप सामने आ रहा है, इस समय अर्थपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य पूर्ण होने के नाते सक्षम शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है । इसलिए मैत्रेयी पुष्पाने अपने उपन्यास साहित्य में चित्रित कि गई शिक्षा समस्याओं समाज के सामने प्रस्तुत करना और उसपर समाधान ढूँढना प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध का उद्देश्य है ।

इस शोध प्रबन्ध को विषय प्रतिपादन की दृष्टि से सात अध्यायों में विभाजीत किया है । मैत्रेयी पुष्पा का आज के युग में लेखकिय महत्व प्रस्तुत करने के लिए इनके

व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट करना आवश्यक मानते हुए 'मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' अध्याय एक में प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में लेखिका जिस परिवेश में पली - बढी उसे के इर्द - गिर्द के समाज का उसके व्यक्तित्व निर्माण में छाया प्रभाव और उससे निर्मित कृतित्व का सम्बन्ध स्थापित करते हुए, मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्ति एवं कृतित्व को प्रस्तुत किया है।

अध्याय दो 'शिक्षा - अर्थ, उद्देश्य एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास' का है। मनुष्य जीवन के लिए शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व को स्पष्ट करते हुए शिक्षाविदों की शिक्षा संबंधी परिभाषाएँ प्रस्तुत कि है। साथ ही प्राचीन वैदिक काल से लेकर आज तक शिक्षा व्यवस्था के परिवर्तनों को इस अध्याय में चित्रित किया है। स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकारने शिक्षा संबंधी अपनाई नीतियाँ और सुधावों का विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

अध्याय तीन 'मैत्रेयी पुष्पा के शिक्षा समस्या संबंधी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय' (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन) में विवेच्च उपन्यासों के कथावस्तू का विश्लेषण किया गया है। विवेच्च उपन्यासों में भारतीय ग्रामीण समाज का 'यथार्थता से चित्रण करते हुए स्वतंत्रता के बाद भी ग्रामीण इलाकों में शिक्षा को लेकर कई समस्याअें उभरकर सामने आ रही है जिसे बेनकाब करने का कार्य मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। शिक्षा क्षेत्र में राजनीति नेता लोगों का हस्तक्षेप, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी अध्यापक, शैक्षिक सुविधाओं का अभाव आदि कई समस्याओं से भरे यह उपन्यास सामाजिक यथार्थता को स्पष्ट करते है। इसलिए विवेच्च उपन्यास की कथावस्तू को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय चार 'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में स्त्री शिक्षा' समस्याअें (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के संदर्भ में) में आज के आधुनिक भारत में ग्रामीण स्त्री को 'शिक्षा' प्राप्त करते समय आज भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है। जिससे ग्रामीण स्त्री आज भी शिक्षा से दूर है। गांव में स्कूल न होना, स्कूलों में प्राथमिक सुविधाओं का न होना, दूर - दराज के गांवों में शिक्षा के लिये जाना, स्त्री छात्राओं पर अत्याचार, स्त्री शिक्षा को बीच में रोकना आदि कई समस्याओं के वास्तविक रूप को पाठक के सामने प्रस्तुत किया गया है। आज के पढे लिखे समाज में भी स्त्री को

उच्चशिक्षा के लिये रोका जा रहा है । उसके कार्य क्षेत्र में उसे उचित मौका नही दिया जा रहा है । इसका चित्रण 'विजन' उपन्यास में आया इन समस्याओं को इस अध्याय में प्रस्तुत किया है । साथ ही लेखिकाने 'इदन्नमम' की मंदा, 'चाक' की सारंग और 'विजन' की डॉ.आभा, डॉ.नेहा के माध्यम से स्त्री शिक्षा संबंधी समस्याओं पर समाधान ढूँढने का प्रयास किया है।

अध्याय पाँच 'मैत्रेयी पुष्पा' के उपन्यास साहित्य में 'दलित आदिवासी जन - जातियों की शिक्षा संबंधी समस्याएँ' (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन के संदर्भ में) इस अध्याय में आज के आधुनिक युग में परंपरागत रूढी परंपराओं का पालन करनेवाले सनातनी भारतीय समाज में आज भी वर्णव्यवस्था के शिकार बने अछूत दलित, आदिवासी जन - जातियों को शिक्षा का अधिकार उच्चवर्णिय समाज नही दे रहा है । जो संविधान ने व्यक्ति स्वातंत्र्य देते हुए शिक्षा को सार्वभौम कर दिया है । आज दलित, आदिवासी जन - जातियाँ शिक्षित होकर अपने मानवाधिकार को प्राप्त करना चाह रही है । परंतु आज भी सनातनी समाज के कारण उनकी शिक्षा ग्रहण करने में अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही है । इसका यथार्थ चित्रण करते हुएँ मैत्रेयी पुष्पा ने आधुनिक भारत का चेहरा बेनकाब कर दिया है । ऐसी समस्याओं का चित्रण करते हुए लेखिकाने अपने मानवतावादी होने का प्रमाण दिया है।

अध्याय छ: 'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में अध्यापकों से सम्बन्धित समस्याएँ' (इदन्नमम, चाक, अल्मा कबूतरी, विजन, के संदर्भ में) पर आधारित है । भारतीय समाज में ईश्वर, माता - पिताके बाद समाज में महत्वपूर्ण स्थान गुरू को दिया जाता है । गुरू के आदर्शोंपर चलकर छात्र अपना जीवन मार्ग सुकर करता है । प्राचीन काल में गुरू अपने आचरण से छात्रों के माध्यम से आदर्श स्थापित करते थे । परंतु आज के आधुनिक युग में भौतिकवादी जीवन के चुंगल में फसे अध्यापक स्वार्थी, बेइमान, भ्रष्ट व्यक्तित्व का प्रमाण दे रहे है । लेखिका ने विवेच्च उपन्यासों के माध्यम से भ्रष्ट, बेईमान, स्वार्थी, पदलोलुप, भ्रष्टाचारी, व्यभिचारी अध्यापकों का चित्रण करते हुए आज वर्तमान युग में अनैतिक भ्रष्ट, स्वार्थी, पदलोलुप अध्यापकों के कारण शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में दिन - ब - दिन बढती गंदगी का चित्रण करते हुए आज के भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था का मार्मिक और यथार्थ चित्रण किया है । 'चाक' के हेडमास्टर थानासिंह, विजन के डॉ.

जगोटा जैसे अध्यापकों के माध्यम से भ्रष्ट, व्यभिचारी पात्रो का चित्रण किया है । वही लेखिका ने ईमानदार, प्रामाणिक श्रीधर मास्टर, डॉ.आलोक के माध्यम से आदर्शो को भी उपस्थित करते हुए समाधान ढूंढा है ।

अध्याय सात में 'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में चित्रित गौण समस्याओं को रखा है । विवेच्च उपन्यासों के आधार पर आज के वर्तमान शिक्षा समस्या में बढते रैगिंग, डोनेशन, आरक्षण, हडताल, शिक्षा क्षेत्र में राजनीति का हस्तक्षेप, शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है । मैत्रेयी पुष्पा ने उपर्युक्त समस्याओं का चित्रण करते हुए शिक्षा क्षेत्र के अंतरंग मे जाकर उसका शव - विच्छेदन कुशल डॉक्टर की तरह किया है । जिससे लेखिका का समाज का सुक्ष्मता से निरिक्षण करने का अंदाज ध्यान में आ जाता है ।

अन्त में उपसहार में सभी अध्ययनों के अध्ययन के उपरांत उपसंहार दिया है । इसमें पूर्व विवेचित अध्ययन के आधार वस्तूनिष्ठ पध्दती से निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये है । यहॉ संपूर्ण शोध प्रबंध का सार समन्वित निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है । अंत मे उपलब्धियों देकर संदर्भ ग्रंथ सूची संलग्न की है ।

प्रस्तुत शोध - प्रबंध की पुर्ति के लिए गुरूवर्य प्राचार्य डॉ.यशवंत पाटणे और गुरूवर्य डॉ.सुरेश गायकवाडजी का कुशल निर्देशन तथा प्रेरणा प्राप्त हुई । साथ ही लाल बहादूर शास्त्री के प्रोफेसर डॉ. सगरेजी का आशीर्वाद साथ रहा । इनकी कृतज्ञता में रहना ही आशिर्वाद समझूँगी ।

साथ ही कला व वाणिज्य महाविद्यालय के ग्रंथपाल प्रा.एल.ए.पाटील, की ऋणी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर पुस्तकें उपलब्ध करा कर सहाय्यता की । शोध कार्य के दौरान विभिन्न पुस्तकालयों, हितचिंतको का सहयोग प्राप्त हुआ । उनके प्रति सहृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । अन्त में पति विनोद यादव जिन्होंने पुत्र सुब्रज का भार उठारकर मुझे लेखन के लिए समय प्राप्त करा दिया उनके प्रति आभारी हूँ। जिसके बीना यह कार्य अधूरा रह जाता वह शोध प्रबंध का टंकलेखन करनेवाली कु. पूजा चव्हाण के प्रति कृतज्ञ हूँ।

अनुक्रमणिका

अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
CERTIFICATE	1
प्रख्यापन	2
प्रतिज्ञापत्र	3
प्राक्कथन	4
अनुक्रमणिका	9
अध्याय एक : 'मैत्रेयी पुष्पा ' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'	
1.0 विषय प्रवेश	16
1.1 व्यक्तित्व का अर्थ एवं स्वरूप	
1.2 मैत्रेयी का व्यक्तित्व	17
1.2.1 जन्मतिथी तथा जन्मस्थान	18
1.2.2 नाम	
1.2.3 बचपन	19
1.2.4 माताजी	20
1.2.5 पिताजी	21
1.2.6 परिवार	22
1.2.7 मैत्रेयीजी के जीवन पर प्रभाव रहे रिश्तेदार और मित्रजन	
1.2.8 मैत्रेयी के व्यक्तित्व निर्माण में सहयोगी चरित्र	23
1.2.9 शिक्षा	25
1.2.10 नौकरी	26
1.2.11 विवाह	
1.2.12 बेटियाँ मैत्रेयी के लिये प्रेरणा स्थल	27
1.2.13 मैत्रेयी के व्यक्तित्व निर्माण में परिवेश का योगदान	28
1.2.14 मैत्रेयी के साहित्य से झलके उसकी चारित्रिक विशेषताएँ	32
1.3 मैत्रेयी पुष्पा का कृतित्व	37
1.3.1 उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा	38
1.3.2 कहानीकार मैत्रेयी पुष्पा	39
1.3.3 आत्मकथाकार मैत्रेयी पुष्पा	40
1.3.4 स्त्री - विमर्श	
1.3.5 नाटक	41

1.3.6 कविता संग्रह	41
1.3.7 टेलिफिल्म	
1.3.8 अन्यलेखन	42
1.3.9 पुरस्कार	
अध्याय दो : शिक्षा : अर्थ उद्देश्य एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास	
2.0 विषय प्रवेश	46
2.1 शिक्षा का अर्थ	
2.1.1 शिक्षा का व्यापक अर्थ	
2.1.2 शिक्षा का संकुचित अर्थ	47
2.1.3 शिक्षा की परिभाषाएँ	
2.1.4 शिक्षा का महत्व	48
2.1.5 शिक्षा का उद्देश्य	
2.1.2 भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास	51
2.1.2.1 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली	52
2.1.1.2 मोक्ष की प्राप्ति	
2.1.1.3 धार्मिक भावना का विकास	
2.1.1.4 व्यक्तिमत्व का विकास करना	53
2.1.1.5 चरित्र का निर्माण करना	
2.1.1.6 अज्ञानरूपी अंधकार नष्ट करते हुए आत्मसाक्षात्कार करना	
2.1.1.7 राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार करना	54
2.1.1.8 नागरिक एवं सामाजिक दायित्वों के संस्कार	
2.1.1.9 व्यावसायिक कुशलता में वृध्दि करना	
2.1.2 वैदिक शिक्षा पध्दती के दोष	55
2.1.2.1 अति धार्मिक प्रभाव	
2.1.2.2 शूद्रो को शिक्षा से वंचित रखना	
2.1.2.3 गुरू को अनन्य साधारण महत्व	
2.1.2.4 स्त्री को शिक्षा से दूर रखा था।	
2.1.2.5 शिक्षा का माध्यम 'संस्कृत'	
2.1.2.6 वैज्ञानिक दृष्टिकोन का अभाव	
2.1.2.7 विचार स्वातं™य का अभाव	
2.1.2.8 हस्तकलाओं की उपेक्षा	56
2.1.2.9 सांसारिक जीवन की उपेक्षा	

2.1.2.10 शिक्षा में सह - सम्बन्ध नही	56
2.2 बौध्द कालीन शिक्षा प्रणाली	57
2.2.1 बौध्द धर्म के अष्टांग मार्ग	
2.2.2 बौध्द शिक्षा प्रणाली के दो स्तर	58
2.2.2.1 पबज्जा	59
2.2.2.2 उपसंपदा (उच्चशिक्षा)	
2.2.3 'संघ' बौध्द शिक्षा के केंद्र	60
2.2.3.1 बौध्द धर्म का प्रचार - प्रसार	
2.2.3.2 प्रवेश एवं अवधी	
2.2.3.3 बहुसांख्यिक, संयुक्त शिक्षा और विशाल शिक्षा भवन	
2.2.3.4 व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास	61
2.2.3.5 नैतिक आचरण की महत्ता	
2.2.3.6 स्त्री शिक्षा	
2.2.3.7 सामाजिक शिक्षा के साथ - साथ व्यावहारिक शिक्षा को महत्व	62
2.2.4 बौध्द शिक्षा प्रणाली के दोष	63
2.3 मुस्लिम शिक्षा पध्दती के उद्देश्य	
2.3.1 मुस्लीम शिक्षा पध्दती के उद्देश्य	
2.3.1.1 'इस्लमा' का प्रचार - प्रसार	
2.3.1.2 धर्म का ज्ञान करना	64
2.3.1.3 नैतिक मूल्य एवं पवित्रता की भावना को सदृढ करना	
2.3.1.4 राजनीतिक सत्ता की लालसा	
2.3.1.5 कलाओं को महत्वपूर्ण स्थान	
2.3.1.6 दो स्तरों में पाठयक्रम	
2.3.2 मुस्लिम शिक्षा प्रणाली की विशेषता	65
2.3.3 मुस्लिम शिक्षा प्रणाली के दोष	
2.4 ब्रिटीश कालीन शिक्षा प्रणाली	66
2.4.1 1813 का आज्ञापत्र	
2.4.2 मैकाले का विवरण पत्र (1835)	68
2.4.3 मैकाले की भारतीय शिक्षा को देन	69
2.4.3.1 पाश्चात्य ज्ञान से परिचय	
2.4.3.2 नये वर्ग का निर्माण	
2.4.3.3 राजनैतिक चेतना का निर्माण	

2.4.3.4 भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव रखी गई।	69
2.4.3.5 देशी भाषा के महत्व जानकर भारतीय साहित्य विश्व के सामने लाया गया	70
2.5 वुड का घोषणा पत्र (1854)	
2.5.1 वुड की घोषणा पत्र की सिफारिशें	71
2.5.2 वुड की घोषण पत्र के दोष	
2.6 स्वतंत्र भारत में शिक्षा प्रणाली	72
2.6.1 विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग)	73
2.6.1.1 विश्व विद्यालयों को सुझाव	
2.6.1.3 अध्यापन स्तर	74
2.6.1.4 स्नातकोत्तर अनुसन्धान	
2.6.1.5 पाठयक्रम	75
2.6.1.6 व्यावसायिक शिक्षा	
2.6.1.7 शिक्षा का माध्यम	
2.6.1.8 नारी शिक्षा	
2.6.2 डॉ.राधाकृष्णन आयोग का मूल्यांकन	
2.7 माध्यमिक शिक्षा आयोग	76
2.7.1 मुदलियार आयोग के सुझाव	
2.7.2 माध्यमिक शिक्षा आयोग का पुनर्गठन	
2.7.3 मुदलियार आयोग का मूल्यांकन	77
2.8 कोठारी आयोग	
2.8.1 कोठारी आयोग के सुझाव	
2.8.1.1 शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य	
2.8.1.2 विद्यालय शिक्षा	78
2.8.1.3 उच्चशिक्षा	
2.8.1.3.1 महाविद्यालयों का युग (1757 - 1857)	
2.8.1.3.2 प्रथम विश्व विद्यालय (1857 - 1916)	79
2.8.1.3.3 नवीन विश्वविद्यालयों का युग (1916 - 1947)	
2.8.1.3.4 स्वतन्त्रता का युग (1947 से आज तक)	

2.8.1.3.5 स्त्री शिक्षा	79
2.8.1.3.6 प्रौढ शिक्षा	80
2.8.1.3.7 अध्यापक की स्थिती	
2.8.2 कोठारी आयोग का मूल्यांकन	
2.9 ईश्वरभाई - आदिशेषय्या कमेटी	81
2.10 नवीन शिक्षा नीति	
2.10.1 शिक्षा का विकेन्द्रीकरण	82
2.11 आचार्य राममूर्ति समिति (1990)	
2.12 जनार्दन रेड्डी समिति - जनवरी 1992	84
2.12.1.1 उचित अर्थ वितरण के सुझाव	
2.12.1.2 पूर्व - प्राथमिक शिक्षा नि:शुल्क हो	
2.12.1.3 माध्यमिक शिक्षा परिषदों का पुनर्गठन	
2.12.1.4 उच्चशिक्षा में सुधार	
2.12.1.5 अध्यापकों को प्रशिक्षण	85
2.12.1.6 तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा	
2.12.1.7 त्रिभाषा सूत्री	
2.13 प्रो. यशपाल समिति (1992 - 1993)	
2.14 निष्कर्ष	86
अध्याय तीन : मैत्रेयी पुष्पा के शैक्षिक समस्याओं पर चर्चा करनेवाले उपन्यास	
3.0 विषय प्रवेश	90
3.1 इदन्नमम	91
3.2 चाक	94
3.3 अल्मा कबूतरी	98
3.4 विजन	101
3.5 निष्कर्ष	103
अध्याय चार : मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में स्त्री शिक्षा समस्याएँ	
4.0 विषय प्रवेश	105
4.1 मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री शिक्षा समस्याएँ	106
4.1.1 संकीर्ण और संकुचित विचारधारा	107
4.1.2 जन - साधारण का अशिक्षित होना	108
4.1.3 अल्पाआयु में विवाह	109
4.1.4 शिक्षा के प्रति अनुचित विचार	
4.1.5 ग्रामीण क्षेत्रों का पीछडापन	110

4.1.6 आर्थिक समस्या	111
4.1.7 शिक्षा केंद्र स्थल का दूरस्थल पर होना	
4.1.8 शिक्षा केन्द्रो में स्त्री छात्राओं पर होनेवाले अत्याचार	113
4.1.9 शिक्षा में अपव्यय	114
4.2 निष्कर्ष	115
अध्याय पाँच : मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में 'दलित, आदिवासी जन - जातियों की शिक्षा समस्याएँ'	
5.0 विषय प्रवेश	117
5.1 वर्णवादी मानसिकता के समाज का दलित शिक्षा का विरोध	118
5.2 शिक्षा केंद्रो में दलित आदिवासी छात्रों पर अध्यापकों द्वारा किये जानेवाले अत्याचार	120
5.3 शिक्षा केंद्रों में दलित - आदिवासी छात्रों पर उच्चवर्णिय सहपाठियों द्वारा किये जानेवाले अत्याचार	121
5.4 दलित अनुसूचित जातियों का अशिक्षित होना	123
5.5 दलित - आदिवासी समाज की निर्धनता	125
5.6 दलित - अनुसूचित जन - जातियाँ और आरक्षण नीति	127
5.7 निष्कर्ष	129
अध्याय छ: मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में अध्यापकों से सम्बन्धित समस्याएँ	
6.0 अध्यापकों का भ्रष्टाचार में हिस्सा	132
6.1 अध्यापकों का भ्रष्टाचार में हिस्सा	133
6.2 पद नियुक्ती में धाँधली	136
6.3 अध्यापकों की चरित्रहिनता	138
6.4 दलित - आदिवासी अध्यापकों पर होनेवाले अत्याचार	140
6.5 निष्कर्ष	144
अध्याय सात : मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में चर्चित शिक्षा अन्य समस्याएँ	
7.0 विषय प्रवेश	146
7.1 छात्रों से सम्बन्धित समस्याएँ	
7.1.1 रैंगिंग	147
7.1.2 परीक्षा में नकल करना	148

7.1.3 हडताल में भाग लेकर इच्छित फल प्राप्त करना	149
7.2 राजनीति का शिक्षा क्षेत्र में हस्तक्षेप	150
7.3 शिक्षा में भ्रष्टाचार	154
7.4 विद्यालय भ्रवनों की दयनीय स्थिती	157
7.5 निष्कर्ष	158
उपसंहार	160
परिशिष्ट	166
संदर्भ ग्रंथ सूची	169 - 171

अध्याय एक : 'मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

1.0 विषय प्रवेश :-

सदियों से बदलते आऐ इस मानवीय जीवन को हर रोज कई तरह के प्रसंग एवं घटनाओं का सामना करना पडता है । भारतीय समाजजीवन में भी सदियों से उथल - पुथल होती रही है । परंतु, अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय समाजजीवन के नींव को ही हिला दिया, एक तरफ शासन करनेवाला अंग्रेज शासन और दुसरी तरफ उनके प्रभाव से आधुनिकता की लहर से चेतित समाज जीवन अपने भी समाजजीवन के बदलाव की अपेक्षा कर रहा था । भारतीय समाज जीवन शिक्षित होकर सदियों से चली आई रूढी, परंपराओं, कुप्रथाओं को त्याग दे और आधुनिक विचारों को अपनाऐ इसलिए म.जोतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, राजाराम मोहनराय, आचार्य, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, डॉ.अम्बेडकरजी जैसे समाज सुधारकोने भारतीय समाज के समग्र उत्थान के लिए जंग छेड दि थी । तो दुसरी तरफ देश की स्वतंत्रता का संग्राम अपने हाथों में लेकर स्वातं™यवीर सावरकर, नेताजी सुभाष बोस, लोकमान्य बालगंगाधर, टिलक, म. गांधी जैसे स्वतंत्र सेनानी देश की आजादी की जंग मे कुद पडे थे । तत्कालीन प्रसंग, घटनाओंसे सारा समाज प्रभावित तो रहा । परंतु इसे यादगार बनाने के लिए साहित्यकार अपनी लेखनी उठाता है और किसी देश कि किसी भी घटना, प्रसंगो को अपने साहित्य के माध्यम से अपनी आनेवाली पाढी के लिए नवसंजीवनी के घट भरकर रख देता है । जिससे प्रेरणा लेकर समाज वर्तमान की समस्याओं का हल ढूँढता है और भविष्य के ख्वाब देखता है । क्योंकि कोई भी साहित्यकार अपने व्यक्तिगत जीवन की अर्जित अनुभूतियों, स्मृतियों एवं कल्पनाओं की झाँकी के साथ - साथ अपने समय के समग्र समाज जीवन का चित्रण करते हुए कालजयी कृतियों का निर्माण करता है ।

1.1 व्यक्तित्व का अर्थ एवं स्वरूप :-

व्यक्तित्व को अंग्रेजी में 'Personality' कहा जाता है जिसका अर्थ है - ''किसी व्यक्ति के गुणों की वह अनन्य सामान्य समष्टि जो उसे दुसरे व्यक्तियों से पृथक करती है । साहित्य में यह शब्द या तो लेखक की आत्मभिव्यंजना के लिए प्रयुक्त हो सकता है या किसी कृति के चरित्रों के लिए ।'' 1 यहा लेखक ने आत्मभिव्यंजना को

महत्व दिया है। परंतु, नालंदा विशाल शब्दसागर में व्यक्ति के गुण एवं भाव जिससे वह विशेष बनता है उसपर प्रकाश डालते हुए परिभाषा इस प्रकार दी है - ''व्यक्ति का गुण या भाव अथवा वे विशेष गुण जिसके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित करती है।'' 2 उसे 'व्यक्त्वि' कहा जा सकता है।

अत: व्यक्ति अपने जिस विशेष गुणों के कारण दुसरे व्यक्ति से अलग पहचान निर्माण करता है। जिससे उसका अपना एक अलग 'व्यक्तित्व' निर्माण हो जाता है। उसे अन्यों से अलग बनाने में उसके व्यक्तित्व निर्माण में उसके समाज परिवेश के प्रसंग, घटनाओं के प्रभाव के साथ - साथ उसके रंगरूप, जन्म, बचपन, माता - पिता, परिवार, विवाह जीवन, नौकरी तथा रूची, रिश्ते - नातेदार स्वभाव, खान - पान आदि बातों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता रहता है जिससे उसका 'व्यक्तित्व' निर्माण होता है।

1.2 मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व :-

स्त्री - पुरूष समानता के साथ - साथ लिंग समानता के विचार रखनेवाली दबंग लेखिका के रूप में प्रस्तुत होनेवाली मैत्रेयी पुष्पा इस अधुनातन लेखिका के व्यक्तित्व का परिचय हमें उनकी औपन्यासिक आत्मकथा के दो खंड १) 'कस्तूरी कुंडल बसै' और २) 'गुडीया भीतर गुडिया' के माध्यम से प्रस्तुत होता है; साथ ही उनके व्यक्तित्व निर्माण में उनके समय का परिवेश और माँ का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण स्थान रखता है। माँ 'कस्तूरी' की शिक्षा की लगन से मैत्रेयी को सबसे पहले प्रभावित किया कलम ने जिससे वह सफल लेखिका बनी। इसलिए वह कहती है। ''मुझे प्रेरणा से पहले अपनी कलम के प्रभाव ने आगे बढाया।'' 3 अपने समय में 'स्त्री शिक्षा' के विरोध को झेलती 'माँ कस्तूरी' के शिक्षा के लिए प्रयास और नौकरी के लिए भटकन ने मैत्रेयी के जीवन को बनाया - बिगाडा। परंतु, उसी शिक्षा ने मैत्रेयी के जीवन को उभारा इसलिए अपने जीवन के नीजी सुख - दु:ख, हर्ष - उल्हास एवं जीवन - संघर्ष को बेबाकी एवं साहस के साथ चित्रित करके अपने 'दबंग' व्यक्तिमत्व का परिचय दिया है। इसलिए उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक जन्मस्थान, नाम, पारिवारिक पृष्ठभूमि, माताजी, पिताजी, रिश्तेदार, शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि के साथ - साथ उनकी आदतें, खान - पान, स्वभाव एवं विशेषताओं के विवेचन से 'मैत्रेयी पुष्पा' का व्यक्तित्व हम देख सकते है, जान सकते है।

अपने आकर्षक व्यक्तित्व के बारे में खुद मैत्रेयी कहती है। ''पतली, दुबली लहराती देह। अच्छी आँखे। गोरा रंग। लम्बा - सा कद। जो देखेगा मोहित हो जाएगा।'' 4

1.2.1 जन्मतिथी तथा जन्मस्थान :-

अधुनातन लेखिकाओं में स्त्री जीवन के समग्र जीवन को उघाडकर रखनेवाली निर्भिड लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 3 नवंबर 1944 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ जिला - इयला से तहसील सिकुर्रा गांव में एक ब्राहमण परिवार में हुआ। जिस समय अंग्रजों की कुर्की - निलामी सें भारत के गांव कॉप उठते थे। ऐसे समय में एक मध्यमवर्गीय परिवार में मैत्रेयी का जन्म हुआ। जिस समय लडकी का जन्म बोझ माना जाता था, उसी समय मैत्रेयी की माँ 'कस्तूरी' ने अपनी लडकी के जन्म का स्वागत हर्ष के साथ किया। ''लडकियाँ धान का पौधा होती है। समय से पहले ही दुसरी ओर रोप देना अच्छा होता है।'' 5 ऐसी धारणा रहनेवाले समाज में माँ कस्तूरी ने मैत्रेयी के जन्म को बोझ नही माना था। अपने बचपन के जीवन के बारे में मैत्रेयी कहती है - ''किसी देश के बच्चे गुलाम नहीं होते, हम भी नहीं थे। हमें माँ का दूध मयस्सर था, कपडों की जरूरत न थी। (गांव का बच्चा शर्म संकोच और जाडे, गर्मी का दबाव यथाशक्ति नहीं मानता।) खेलने के लिए रेत - धूल थी, जिस पर किसी जमींदार का पहरा न था। रंगीत चूडियों के कंचई टुकडे और मिट्टी के फुटे बर्तनों के लाल - लाल खपरों की कुर्की के लिए आनेवाले कारिंदा का भय न था। इसी बिन पर मैंने जन्म से बचपन तक अपने आप को आजाद समझा।'' 6 इस तरह पारतंत्र्य में जन्मी परंतु अपने माँ के स्वतंत्र विचारों से प्रभावित होकर पली - बढी मैत्रेयी स्वतंत्र भारत की एक स्वतंत्र नारी बनी जिसने अपने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण नारी जीवन को एक नया पथ अपने साहित्य के माध्यमसे निर्माण किया है।

1.2.2 नाम :-

मैत्रेयी पुष्पा अपने नाम की भी एक कहानी बताती है। असल में उनका नाम 'पुष्पा हीरालाल पांडेय' था। परंतु, जन्म के पश्चात खुर्जावाले बाबूलाल पंडितजी ने उनका भविष्य बनाते हुए कहा था कि, 'यह ज्ञानवान बनेगी, जिससे खूश होकर पिताने उसका नाम 'मैत्रेयी' रख था, माँ उसे प्यार से लाली कहा करती थी। परिणाम स्वरूप :

मैत्रेयी और पुष्पा ये दोनो नाम पीछे रह गये थे, शादी के बाद तो पती के नाम 'मंटी' के होते, उन्हें 'मंटी की बहू' या 'मिसेस शर्मा' के नाम से बुलाया जाता था। परंतु अपने साहित्यिक नाम 'मैत्रेयी - पुष्पा' धारण करने के बारे में वह कहती है - ''बरसों से नहीं बुलाया किसी ने नाम से मुझे। कभी मायके जाऊँ तो वहाँ वाले बुलाते है। कहा, नहीं - नहीं। तो मुझे याद आया कि मैं तो मैत्रेयी थी। हां - हां। मेरे जन्म का नाम मैत्रेयी है, जो पंडित रखता है न दस दिन के बच्चे का नाम। मेरा नाम मैत्रेयी है। गांव में किसी से कहना नहीं आया तो घर में पुष्पा - पुष्पा कहने लगे। तो मैंने सोचा अब ये दोनों नाम मिला दिए जाएँ तो मैत्रेयी पुष्पा हुआ।'' 7 नालन्दा विशाल शब्दसागर में 'मैत्रेयी' का अर्थ ''याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम तथा अहिल्या का नाम।'' 8 याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी अपने ज्ञान और विद्वता के लिए प्रसिध्द रही है। और आज की 'मैत्रेयी पुष्पा' भी अपने साहित्य के माध्यम से अपने ज्ञान का परिचय समाज को करा दे रही है जो उनका 'मैत्रेयी पुष्पा' यह नाम धारण करना उचित ही है।

1.2.3 बचपन :-

पैंतीस साल की उम्र में ही पिताजी हीरालाल की मोतिझरा की बिमारी से मृत्यू हो जाने कारण डेढ साल की आयु में ही पितृछाया से वंचित रही मैत्रेयी को माँ का स्नेह भी प्राप्त नहीं हुआ। रोजी - रोटी के कारण पहले शिक्षा ग्रहण करने और बाद में नौकरी के कारण गांव - गांव घुमनेवाली माँ का स्नेह - दुलार मैत्रेयी के नशिब में न था जो प्यार - दुलार करनेवाले अपने बूढे दादाजी मेवाराम से आत्मीयता से जुड गई थी। परंतु, उनके मृत्यू के बाद स्नेह की भूखी मैत्रेयी गांव की स्त्रियों की ओर बढती चली गई। जिसमें खेरापतित चाची और कलावती चाची के सानिध्य में रहनेवाली मैत्रेयी गाना गाने कि आदत भी पडी 'शिक्षा' को ओर से मैत्रेयी का ध्यान कम होता देखकर माँ कस्तूरी परेशान हो जाती थी जिस कारण माँ कस्तूरी ने उसके रहने की जगह समय - समय पर बदल दी। परंतु हर जगह जाती मैत्रेयी पुरूष हवस का शिकार बनती चल गई। इस तरह मैत्रेयी का बचपन संघर्ष, अस्थायी जीवन का प्रतीक रहा है। बचपन में ही भटकाव के चलते मैत्रेयी अकेली, असुरक्षित, स्नेही की भूखी रही।

1.2.4 माताजी :-

'शिक्षा' को 'स्त्री मुक्ति' का द्वार माननेवाली मैत्रेयी पुष्पा के माँ को नाम 'कस्तूरी देवी' था । बिदिरका गांव में ब्राहमण परिवार के उपाध्याय गोत्र कि किसान परिवार की यह लडकी विवाह को नारी की प्रगति का बंधन मानती थी । बचपन से सती जाने की प्रथा से डरनेवाली कस्तूरी विवाह नही करना चाहती थी । वह अपने माँ से कहती है ''मैं ब्याह नही करूँगी ।'' 9 अपने माँ के जिद्दी स्वभाव के बारे में मैत्रेयी पुष्पा कहती है - ''कस्तूरी एक कडियल और बेहद जिद्दी किस्म की औरत के रूप में सामने आती है । भले ही वह अभागिन सतमासी होकर जन्मी हो, वह ऐसी मिट्टी से नहीं बनी है, जिसे कोई रूँध ले । उसके पैदा होते ही उसका बडा भाई मर गया । होश सँभालते ही उसने कानों से यही बोल टकराते हुए सुने है । गाय मरे अभागे की, बेटी मरे सुभागे की । लेकिन वह यह सौभाग्य भी अपने माँ - बाप को दे नहीं सकी । घोर गरीबी और अभावों से घिरे एक मुखियाहीन परिवार में जब बडे भाई का कहीं ब्याह नहीं होता तो उसे बदले में देकर बडे भाई को ब्याहने की योजना बनाई जाती है ।'' 10 इस तरह कस्तूरी को उसकी माँ अंग्रेजी हुकमत की कुर्की निलामी से बचने के लिए आठसौं चाँदी के सिक्कों के बदले हिरालाल पांडेय को बेच देती है । जो उन्हें ससुराल में 'खरीदी हुई घोडी' का दर्जा गांववाली औरते सुनाती है ।

अपनी सहेली रामश्री से किताब की लगन लगी कस्तूरी ने ''पेढो, सोचो और अपने पाँव पर खडी हो जाओ'' मानो यह गुरूमंत्र के लिया था । इसी कारण पती के मृत्यू के बाद कस्तूरी पढ - लिखकर नौकरी हासिल करती है । अपने माँ के बारे में मैत्रेयी कहती है । ''कान की बाली की टूटी हुई किर्च की तरह जैसे कोई 'सुई' है, जो उसके पुरे शरीर को छानती हुई, कभी कहीं तो कभी कहीं, टिक जाती है । वह उसे बुरी तरह परेशान करती है । काम लायक पढ-लिखकर, संतान के रूप में एक मात्र बेटी, को पालने - पोसने के लिए वह नौकरी करती है । मर्दों की इस दुनिया में एक दबंग, कडियल और बेहद जिद्दी औरत के रूप में ।'' 11

स्त्री शिक्षा को 'मुक्ति' का द्वार माननेवाली कस्तूरी गांव - गांव जाकर महिला मंगल योजना का काम करती है। एक समाज सेविका बनकर वह स्त्रियों को शिक्षा का महत्व, अन्याय, अत्याचार के विरूध्द आवाज बुलंद करने के विचार देती है।

'कस्तूरी' स्वाभिमानी स्त्री है पति के मृत्यू के बाद पोथी - पुराण पढकर घर चलाती है। जीवन की उन्नती के लिया शिक्षा ग्रहण करके नौकरी पाती है। स्वाभिमानी, संयत, साहसी, उत्साही और दयालू इन्ह गुणों के कारण गांववाले भी उसका आदर करना सीख गये थे।

जिस समय लडकी का जन्म अशुभ माना जाता था। उस समय कस्तूरी ने अपनी बेटी मैत्रेयी के जन्म का उत्साह से स्वागत किया लडकी को शिक्षा देकर उसकी पहचान बनाना उन्होंने अपना जीवन माना जिस कारण अत्याचारों से ग्रस्त रहनेवाली मैत्रेयी को पुरूषों से दूर रहने की सलाह देकर 'शिक्षा' को ग्रहण करने की बात करनेवाली 'कस्तूरी' आगे चलकर मैत्रेयी के जीवन की प्रेरणा स्थल बनी दिखाई देती है।

1.2.5 पिताजी :-

मैत्रेयी जी के पिताजी का नाम हीरालाल मेवाराम पांडेय था। किसान परिवार के होते हमेशा अंग्रेजों के कुर्की - निलामी के भय से गांव से दूर जाते थे। परंतु वह स्वाभिमानी थे पोषण का विरोध करते थे तब अंग्रेजों के कोडे भी झेल लेते थे। अपने पिताजी के बारे में मैत्रेयी कहती है - ''मेरे पिता जमींदार के विरूध्द खडे होकर कोंडो की मार मारे गये। उनका अपराध था गरीब होकर स्वाभिमान से जीना। वे लगान न देने के कसुरवार थे, सख्त सजा के पात्र थे। ऐसे ही दंडित समूह गॉव कहलाता था या गॉव का नाम था दरिद्रता और लाचारी।'' 12 इस तरह स्वाभिमानी पिता अपनी लडकी मैत्रेयी भी बेहर प्यार करते थे। अपनी पत्नी को बेटी के संबंध में खुर्जावाले पंडीत से कही भविष्यवाणी बार - बार सुनाते थे -'' यह हमारी बेटी, जब इसका जन्म हुआ, ग्रह - नक्षत्रों ने रास्ता दिया। देवता और ऋध्दि - सिध्दी साथ हों लिये। पंडितजी ने यहीं कहा था न? और यही हमने देखा, हमारे घर में अन और दूध कि सारे गांव में अमन चैन। मैत्रेयी आई है हमारे घर।'' 13 इस तरह मैत्रेयी की डेढ साल की आयु में ही पिता

हीरालाल की मृत्यू हुई परंतु पिताजी की याद को व्यापक रखने के लिए मैत्रेयी ने अपना लेखकिय नाम ‘‘मैत्रेयी पुष्पा’’ रखा जो उन्हे हमेशा पिताजी की याद करा देता है।

1.2.6 परिवार :-

मैत्रेयीजी के परिवार में माता कस्तूरीजी, पिता हीरालाल और बूढे दादाजी मेवाराम थे। पिता हिरालाल की मृत्यू मोतीझरा बीमारी के कारण हो जाती है। अपने परिवार के बारे में मैत्रेयी कहती है, ‘‘गृहस्थी का नक्शा भी कैसा कमजोर है। स्त्री, बूढा और बच्ची।’’ 14 माँ कस्तूरी की शिक्षा की लगन और बाद में नौकरी के कारण परिवार से दूर रहने के कारण मैत्रेयी का बचपन बूढे दादाजी मेवाराम के साथ ही बिताया। किंतु उनके मृत्यू के पश्चात मैत्रेयी बिल्कुल अकेली, अनाथ होकर भटकाव की शिकार बनी।

पढी लिखी मैत्रेयी की शादी कि बात सामने आई तो उसके कुल-गोत्र के बारे में पाठक के रिश्ते को मैत्रेयी के परिवार के बारे में जानकारी देते समय भगवानदास सेठ कहते है। ‘‘यार तुम तो मथूरा के चौबों को भी मात कर रहे हो। चलो वंशावली सुन लो - मेवाराम घर जँवाई आए थे गांव में। उनका बेटा था हीरालाल। हीरालाल की एक ही बेटी मैत्रेयी। इसके चश्मदीद गवाह हम नहीं पुरा गांव है। और कुछ एक समय था मैत्रेयी का परिवार अड़तालीस बीघे खेती का मालीक था, उनकी बनगज गांव के जाट या यादवों से भिन्न न थी। परंतु श्रम करने वाले लोगों की कमी उपर से मैत्रेयी के मामा बहन की जमीन हडपने के पीछे लगा था। माँ कस्तूरी ने अपने भाई के हाथ जमीन नही जाने दी। परंतु मैत्रेयी जीवन में अकेली, भटकाव की हिस्सेदार बनी।

मैत्रेयीजी को शादी के बाद संयुक्त परिवार मिला उसमे वह खुश रही। उनके परिवार में पति रमेशचन्द्र, ससुर, देवर तथा जेठानी के साथ अपनी तीन बेटियों के साथ भरा - पुरा परिवार मिला।

1.2.7 मैत्रेयीजी के जीवन पर प्रभाव रहे रिश्तेदार और मित्रजन :-

मैत्रेयी ने अपने जीवन के बीस बरस अपने गांव में बिताये गांव के लोगों के स्वभाव, नीति - कुनीति से वह भली भँगत परिचित है। माँ के नौकरी के कारण मैत्रेयी से हमेशा दूर रहनेवाली स्नेह की भूखी मैत्रेयी ने गांव की महिलाओं से अपनत्व का नाता बनाया साथ ही स्कूल से लेकर कॉलेज तक की पढाई में अपने गुरू, सहेली और मित्रों से

वह प्रभावित रही । जिनका उनके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान है वह निम्नलिखित है-

अ) स्त्री रिश्तेदार एवं मित्रजन :- १) बडी कक्को, २) गारोवाली कक्को ३) प्रभा भौजायी ४) खेरापतीन दादी ५) कलावती चाची ६) बंगरावाली भाभी ७) चंदा चाची ८) नर्मदा ९) मालकिन की बेटी आशा १०) विद्या ११) लीलावती नाईन १२) सल्लो १३) निशि खरे १४) निमा १५) कविता १६) राजकुमारी १७) सूर्यकिरण १८)माया १९) अलिया २०) माधवी २१) अमरजीत कौर २२) शोभा मांजरेकर २३) तस्लीमा नसरीन आदी ।

आ) पुरुष रिश्तेदार एवं मित्रजन :- १) भगवानदास (टीचर) २) मेवाराम ३) हीरालाल ४) रामचंदर ५) चरणसिंह ६) खुबाराम (जाट) ७) पाठक ८) अहिर चिंतामण सिंह ९) एदला १०) बाला ११) खिली गॉव के प्रधान १२) दादा १३) जगजीतसिंह १४) जगन्नाथ सिंह त्रिवेदी १५) जानकीरमण २०) बस ड्रायव्हर २१) प्रिंसिपल साहब २२) खरे साहब २३) शिवदयाल २४) चित्रसिंह २५) अमजद १६) हेतराम (मामा) आदि ।

1.2.8 मैत्रेयी के व्यक्तित्व निर्माण में सहयोगी चरित्र :-

मॉ कस्तूरी ने मैत्रेयी के परवरिश में कोई कोताई नही की थी, परंतु महिला मंगल योजना की नौकरी करने चली कस्तुरी बच्ची मैत्रेयी को गांव की बजुर्ग औरतें के घर छोडकर चली जाती थी । परिणामस्वरूप बुजूर्ग औरतों में रहकर बच्ची मैत्रेयी प्रौढ औरतों के विचार - खयालों के प्रभावों में आने लगी । स्नेह की भूखी मैत्रेयी सहजता से बुजूर्ग औरतों की ओर खिंचती चली । जिनका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर ताउम्र रहा है, वह निम्नलिखित है -

अ)खेरापतिन चाची :- लोकगीत और लोककथाओं को अपने गानों के माध्यमसे समाज की परंपरा रुढ़ी बतानेवाली खेरापतीन चाची का आकर्षण मैत्रेयी को बचपन से रहा । ढोलकपर लोकगीत गानेवाली खेरापतीन चाची उसे विलक्षण लगती । खेरापतिन दादी का गाना असे आकृष्ट करता है, विशेषत: 'चन्दना का गीत' गाते समय वह अपना स्वर भी दादी के साथ जोड देती थी, जो दादी और ही लाड - प्यार करती थी । मैत्रेयी अपने और खेरापतिन दादी के संबंध में कहती है । ''गॉव की खेरापतिन और उनका क्या संग । यह दुनिया को ऑखे खोलकर देखनेवाली नई बच्ची और वह जमाने की मार खाई चमडी पर

आई तिरछी लकरों भरे चेहरेवाली बुढी होती स्त्री ।'' 16 दादी के गीतों ने मैत्रेयी की बोध कथा विस्तारीत होने लगी । जिससे मॉ कस्तूरी चिंतीत होने लगती है । ''बचपन के रहते ही बचपन छोडना पडा है, मैत्रेयी इस बात को जानती है कि नहीं जानती, हॉ कस्तूरी समझती है कि पढाई की गंभीरता के चलते उसे न गाना है, न खेलना है, बल्कि इस गांव से अपना वजूद उठा लेना है ।'' 17 मॉ कस्तूरी मैत्रेयी की बार - बार शिक्षा का महत्व समजाती है । परंतु, गांव का आकर्षण रखनेवाली मैत्रेयी जिंदगी भर खेरापतिन चाची और लोकगीतों को भूली नही । आज भी वह शादी ब्याह में गांव जाती है तो ढोलकर पर लोकगीतों, कथाओं को गाना नही भूलती ।

आ) चंदना की कथा :- मैत्रेयी को मानसिक रूप से परिपक्व बनाने में कथाओं, लोकगीतों, मुहावरों, कहावतों ने मदत की है । गांव के स्त्रियों का जीवन उनके लिये बनाये गये रितीरिवाज वह लोकगीतों, लोककथाओं के माध्यम से सुनती आई है । उसमें 'चंदना की कथा' ने मैत्रेयी को बचपन से प्रभावित किया है । पर पुरूष से प्रेम करने पर पति द्वारा मार दी गई चंदना की कथा का प्रभाव मैत्रेयी पर ज्यादा रहा । चंदना का यत्किंचित दोष न होने पर भी चंदना आखिर क्यों मारी जाती है । इस बारे में मैत्रेयी बचपन में बार - बार सोचती थी । इस कथा ने ही स्त्री जीवन की सच्चाई को ढूंढने के लिये उसे बाध्य किया है ।

इ) अहीर और जाट कुर्मियों के संस्कार :- मैत्रेयी पुष्पा ब्राहमण परिवार के होते हुए भी 'खिल्ली' गांव के अहीर प्रधान चमनसिंह के संयुक्त परिवार में पली - बढी । ''इतना बडा परिवार, पॉच काका, चार काकी, दस भाई और चार भाभियॉ । सारे कुटुंब की लाडली मैत्रेयी रोज डी.बी.इंटर कॉलेज मेरठ में पढने जाती - आती है ।'' 18 जाट - कुर्मियों के घर रहने के कारण उसमें 'बोल्डनेस' आ गया था । ''अहीरनियों व जाटनियों की छत्रछाया ने जहॉ उन्हे ब्राहमणवादी 'कुलशील परंपरा' व 'नैतिक परंपरा' से मुक्त रखा वही उस 'कैरेक्टर कोड' को भी उन पर नहीं लागू होने दिया, जिसके रहते वह 'स्वतंत्र प्रकृति की दबंग औरत' नहीं हो सकती थी ।'' 19

1.2.9 शिक्षा :-

समाज में रहते हुए मनुष्य अनुभव और अनौपचारिक पध्दती से शिक्षा ग्रहण करता है, परंतु औपचारिक शिक्षा के माध्यम से मानव सभ्यता, संस्कारों, जीवीकोपार्जन साधनों को प्राप्त करता है । 'शिक्षा' का मानव जीवन में अनन्या साधारण महत्व है ; क्योंकि शिक्षा व्यक्ति जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोन बनाता है । अच्छाई - बुराई की पहचान होकर मनुष्य सच्चाई के मार्ग पर जाने की कोशिश करता, संघर्षमय जीवन से सहजता से रास्ता निकाल सकता है । इसलिए शिक्षा मनुष्य को जीवन में एक साधन की तरह साहय करती रहती है ।

मैत्रेयी ने प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव 'सिर्कुरा' से प्राप्त की बाद में माँ की नौकरी के कारण हर साल उसके स्कूल बदल दिये जाते थे । 'शिक्षा' को स्त्री जाती के मुक्ति का द्वार माननेवाली कस्तुरी मैत्रेयी को परिचितों के घर रखती चली गई जहाँ विपत्तियाँ मैत्रेयी का इंतजार कर रही थी ।

पाँचवी कक्षा का एक साल मैत्रेयी 'कन्या गुरुकूल' में रही । भूखे पेट रहनेवाली लडकियाँ गुरुकूल के मास्टर की शिकार बन जाती थी । मैत्रेयी ने भी देखा और अनुभव भी किया था ।

माँ कस्तूरी का पहला पोस्टिंग हो जाने पर मैत्रेयी को समाजकल्याण बोर्ड की संयोजिका के घर रखा गया जहाँ घनघोर विपत्ती बास कर रही थी । संयोजिका का छोटा बेटा शिकारी बनकर आ गया, वह रात - दिन भय में जीने लगी । ''कितने दिन? कितने दिन? 20 शिकारी की आँखे अँगारे - सी दहकती है? उसके सामने कितने दिन? उसकी बाँहे अजगर - सी कसती है, विरोध कितने दिन?'' आखिर कस्तुरी कश्मीरा बीवी के साथ गांव भाग आ जाती है । परंतु 'शिक्षा' का महत्व जाननेवाली कस्तुरी हर साल मैत्रेयी की पाठशाला बदलती रही । इस तरह खिल्ली, मोंढ, झाँसी तथा अलिगढ में रहते मैत्रेयी ने शिक्षा को ग्रहण किया । 'शिक्षा' के कारण नशीब आये भटकाव के बारे में मैत्रेयी कहती है । ''जहाँ स्कूल देखा पटक दिया ।'' 21

स्त्री मुक्ति का द्वार 'शिक्षा' को समझनेवाली माँ कस्तुरी की लडकी मैत्रेयी पुष्पाजी को भी जीवन में आगे चलकर 'शिक्षा' का महत्व समझ में आ गया और उन्होंने

अपने कथा साहित्य में 'स्त्री शिक्षा' महत्व को उजागर किया है। मैत्रेयी 'शिक्षा' के बारे में कहती है । ''आज महिलाओं के भीतर शिक्षा का प्रसार और उनके भीतर आत्मविश्वास भरने जरूरत है । यह कार्य सिर्फ चीखने - चिल्लाने और पुरूषों का अंधविरोध करने से नहीं होगा। महिलाएँ यह कार्य शांतिपूर्ण असहयोग से कर सकती है; यानी जो वे चांहे उस पर दृढतापूर्वक अमल करे और पुरूषों को उसे मानने, स्वीकार करने को तैयार करे।'' 22

इस तरह आज स्त्री को निर्भर होने के लिए शिक्षा एक माध्यम है । जिसकी साहयता से स्त्री अपने जीवन का मार्ग सुकर कर सकती है।

1.2.10 नौकरी :-

नौकरी को गुलामी माननेवाली मैत्रेयी ने नौकरी करने से इन्कार कर दिया था। परंतु मैत्रेयी को पढा - लिखाकर अफसर बनाने की चाह रखनेवाली माँ कस्तूरी की इच्छा थी की मैत्रेयी नौकरी करे। परंतु मैत्रेयी नौकरी के बजाय विवाह को महत्व दे रही थी। माँ की इच्छा के खातिर मैत्रेयी ने खिल्ली गांव के आसपास के गांव सिकंदरा, मड़ोरा, खुर्द और आमगांव में बीस रूपए वेतन पर स्त्रियों को पढ़ाने की नौकरी की था । साथ ही महिला मंगल योजना के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ काम करने पर 'मोठं' विकास खंड का उन्हें 'ग्रामलक्ष्मी' पुरस्कार भी मिलनेवाला था । आगे चलकर मैत्रेयी ने महिला मंगल की नौकरी छोड दी। परंतु, जीतनी भी सेवा की वह मेहनत और लगन से की।

1.2.11 विवाह :-

'विवाह' भारतीय समाज जीवन में एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। शिक्षा को महत्व देनी वाली माँ कस्तूरी मैत्रेयी को पढा - लिखाकर अफसर बनाने के सपने देखती है परंतु 'शिक्षा' को ग्रहण करते समय आये भयानक अनुभव अन्याय - अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिये मैत्रेयी जल्दी ही शादी के बंधन में बंधना उचित मानती है। मैत्रेयी विवाह को अपने लिए सुरक्षा - कवच के समान मानती है। अकेलापन और असुरक्षितता को महसूस करनेवाली पुरूषों की हवस से बचन के लिये अतं में बी.ए. में पढते समय ही सत्रह साल की मैत्रेयी माँ से कहती है। ''माताजी मेरी शादी कर दो। 23

मैत्रेयी के लिए माँ ने डॉक्टर, इंजिनिअर, मॅकेनीक लडके देखे पर कभी दहेज बीच में आता, तो कभी लडकी के जमीन पर आँखे रखकर बात होतीं। माँ कस्तूरी और खुद मैत्रेयी 'दहेज' प्रथा के विरोधी थी। 'दहेज' प्रथा के बारे में मैत्रेयी कहती है। ''मेरी तीव्र इच्छा है, हजारों साल से चला आ रहा सिलसिला टूटना चाहिए। अपने हक के लिए लडना चाहिए। संरक्षण और सुरक्षा स्त्री के लिए वे खतरनाक और बर्बर शब्द है, जो भरोसा देकर उसे नष्ट करते हैं। बात वही है कि जो अपने प्रति न्याय की बात नहीं सोचता, उसे न्याय देने की मूर्खता कौर करेगा?'' 24

''दूसरों के फैसलों पर चलने से जो सुरक्षा मिलती है, वह खतरनाक और जानलेवा सिध्द होती है।'' 25 इसलिए 'देहज' देकर सुरक्षा पाने के बजाए स्त्री ने 'शिक्षा' लेकर नौकरी पेशा को अपना कर आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। यही बात मैत्रेयी ने अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों के सामने रखी है।

अंत मे विद्या बीवी मैत्रेयी के लिए डॉ.रमेशचन्द्र शर्मा जी का रिश्ता लेकर आती है जो माँ कस्तूरी को अच्छा लगता है। मैत्रेयी कहती है, शादी गांव में ही करा दी लेकिन शादी इस तरह यादगार रही की शादी के बजाय फजियत ज्यादा हुई। आखिर डॉ. रमेशचन्द्र की पत्नी बनकर मैत्रेयी सिकुर्रा गांव से विदा होकर अलीगढ आ पहुँची। उन्हें तीन बेटियाँ है, जिनका नाम है - नम्रता, मोहिता और सुजाता। ये तीनों आखिल भारतीय आयुर्विज्ञान में डॉक्टर है। तीनों लडकियाँ ही इस बात की भर्त्सना भी मैत्रेयी को परिवार और समाज से झेलनी पडी। परंतु, स्त्री जाती के यथार्थता को समाज के सामने लानेवाली मैत्रेयी ने स्त्री को खुद को आत्मनिर्भर बनने के लिए कहा, जिससे आगे चलकर मैत्रेयी लेखिका बनी दिखाई देती है।

1.2.12 बेटियाँ मैत्रेयी के लिये प्रेरणा स्थल :-

बेटियाँ बडी होने पर मैत्रेयी का गृहस्थी का बोझ धीरे - धीरे कम हो गया। बडी बेटी नम्रता ने माँ मैत्रेयी को लिखने के लिये प्रेरित किया। मैत्रेयी कहती है - ''मेरे यहाँ उलटा हुआ, बच्चों को डॉक्टर मैंने बनाया और मुझे लेखिका बच्चियों ने बनाया। हाँ, तो उन्होंने कहा मम्मी। कविता लिखो, कहानी लिखो, कुछ भी लिखो। तो मैंने एक प्रेम कहानी लिखी। फिर मैंने तीनों लडकियों को बारी - बारी पढवाई। उन्होंने कहा, मम्मी

ने लिखी है, मम्मी ने लिखी है, पढी तीनों ने, बहुत बढिया है।'' 26 इस तरह लडकियॉं ने अपनी मॉं को लेखन के लिए प्रेरित किया। मैत्रेयी आज एक सफल लेखिका के रूप जानी जा रही है।

1.2.13 मैत्रेयी के व्यक्तित्व निर्माण में परिवेश का योगदान :-

कोई भी इन्सान क्यों न हो उसके व्यक्तित्व निर्माण में उसके माता - पिता, परिवार, सगे संबंधियों के साथ - साथ उसके आस - पास के परिवेश और समय का नितांत प्रभाव छाया रहता है। जिससे उसका व्यक्तित्व निर्माण होता है। इसलिए किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके समय के युगीन परिस्थिती को देखना आवश्यक है।

अ) सामाजिक परिस्थिती :- जब भारत देश पारतं™य में था, तब मैत्रेयी का जन्म 30 नवम्बर 1944 को हुआ। उसके जन्म के तीन साल बाद देश स्वतंत्र हुआ। परंतु, गुलाम देश की परिस्थिती में तीन वर्षों मे कोई ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ था, समाज सदियों चली आ रही परंपरा, रीति - रिवाज, शोषण, अन्याय - अत्यार, वर्ण व्यवस्था को लेकर आगे चल रहा था।

1) जमींदारों का शोषण :- अंग्रेजों के शासन काल में अन्याय - अत्याचार से ग्रस्त समाज अपने ही भाईयों से भी उसी प्रकार का व्यवहार स्वतंत्रता के बाद भी पा रहा था। परंतु आधुनिकता के विचार, विज्ञान युग, शिक्षा के महत्व के कारण यहॉं का समाज, सजग होने लगा और स्वतंत्रता के बाद सरंजामशाही की परंपरा के विरुध्द मार्क्सवादी विचारधारा समाज में फैलने लगी यहॉं किसान, मजदूर, भूमीहीन अपने हक के लिए लढने लगा। जिसका चित्रण मैत्रेयी ने अपने साहित्य में यथार्थता के साथ किया है।

2) स्त्री पर अत्याचार :- स्त्री पर अन्याय - अत्याचार की परंपरा भारत देश में सदियों से चली आ रही है। मैत्रेयी ने भी बचपन से अपने आस - पास स्त्री जाती पर अन्याय - अत्याचार होते देखा है। परंपराओं के साखल में बंधी स्त्री हमेशा अपनी स्वतंत्रता के लिए छटपटाती रही जो भी विरोध में गई उसे अपना जीवन स्वाहा करना पडा जो मैत्रेयी बचपन से 'चंदना की कथा' के माध्यमसे सुनती आ रही थी। स्त्रियों पर किये जानेवाले अन्याय अत्याचार का अनुभव खुद मैत्रेयी ने लिया। बचपन की अवस्था में ही मैत्रेयी कई बार

पुरूषों के हवस की शिकार बननसे बचती रही और डटकर सामना करती रही। मैत्रेयी ने ग्रामीण स्त्री पर होनेवाले अन्याय अत्याचार, उनके दिनक्रम का यथार्थ वर्णन अपने कथा साहित्य से किया है।

3) समाज में उच्चनीचता तथा जातीप्रथा :- भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजीत है और उसमें हजारों जातियॉं है। जिसने मनुष्य को मनुष्य से दूर करते हुए पशुवत जीवन बहाल किया था। मैत्रेयी ने भी अपने गांव में जातीप्रथा को निकटता से देखा शुद्र जातियॉं उच्चवर्णियों के आये दिन शिकार होते थे। अपने जीवन में मैत्रेयी ने भी अपने मित्र 'एदला' को निम्न जाती का होने कारण उच्चवर्णिय लडकों से अत्याचार करते देखा है। मैत्रेयी और एदला दोनों एक - साथ स्कूल आते - जाते थे तो गांव के उच्चवर्णिय लडके किताबों का बोझ उठाने के लिए एदला को कहते, उसे मारते तो मैत्रेयी उसका बीच - बचाव करती थी। मैत्रेयी जाती प्रथा के विरोध में 'समय मेरे संदर्भ में' कहती है। ''यह जीवन की विडंबना नहीं तो और क्या है कि देश आजादी की स्वर्ण जयंती मना रहा है और स्त्री अशिक्षा, दहेज तथा चाल - चलन की शुचिता की सूली पर चढी हुई, जिंदगी की भीख मांग रही है। जेट और कम्प्यूटर के युग में सामाजिक सत्ता का सामंतवादी वर्चस्व अपनी पूरी अपरिवर्तनीय के साथ उसकी दुनिया पर काबिज है। नहीं तो पांच हजार वर्ष पूर्व का संविधान अब तक भी संशोधित तक न होता? शुद्रों का संविधान डॉ.आम्बेडकर जी मार्फत बदला। आजादी में भाग लेनेवाली वे स्त्रियॉं कहा गई ? कोई भी अपने वर्ग के लिए लडने नहीं आई? क्या उन्होंने अपनी स्वतंत्रता के बारे में कुछ नहीं सोचा?'' 27

इस प्रकार स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय समाज में स्थित जातिप्रथा में बदलाव नहीं आया है, मैत्रेयी ने भी अपने जीवन में इस प्रथा को देखा है। आज वह अपने साहित्य के माध्यम से जातिप्रथा के विरूध्द लिख रही है।

4) रूढ़ीग्रस्त समाज :- मैत्रेयी पुष्पा ने अपने समय के रूढ़ीग्रस्त समाज का चित्रण अपने साहित्य के माध्यम से किया है जो उन्होंने अपने इर्द - गिर्द बचपन से देखा था। जैसे छुआछुत, बालविवाह, दहेज प्रथा, स्त्री और शुद्रों की दयनीय स्थिती इन्ह समस्याओं से भारतीय समाज ग्रस्त था। परिणामस्वरूप : समाज में विकास की लहर थम सी गई थी, परंतु स्वतंत्रता के बाद आधुनिक विचार, विज्ञान के प्रभाव के कारण आये बदलते

ग्रामीण समाज के बदलाव का चित्रण अगनपाखी, चाक, अल्मा कबूतरी, इदननमम, जैसे अपने उपन्यासों में यथार्थता के साथ चित्रित किया है।

5) देश विकास के लिए पंचवार्षिक योजनाओं की घोषणा :- स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज के विकास हेतू भारत सरकार ने अनेक योजनाआँ का ऐलान किया, जो गांव के किसान लोगों को जीवन विकास का स्वर्णयुग लग रहा था परंतु यह भ्रम था। पंचवार्षिक योजनाओं के माध्यम से स्वर्णयुग का ख्वाब देखनेवाला किसान, भूमीहिन, मजदूर बनकर रह गया। अनेक योजनाओं के तहत भूमी को लेकर सरकार ने ग्रामीण लोगों को विस्थापित बना दिया। आज भारतीय किसान विस्थापितों कि दर्दनाक जिंदगी जीते हुए मजदूर, भूमीहीन बनकर रोजी - रोटी के लिए भटक रहा है।

इस तरह पंचवार्षिक योजनाओं के कारण भारतीय समाज में बदलते वातावरण को मैत्रेयी ने बचपन में देखा था। जिसका यथार्थ वर्णन मैत्रेयी ने अपने 'इदननमम' उपन्यास में बखुबी से किया है।

आ) आर्थिक परिस्थिती :- सदियों से 'खेती' यह प्रमुख व्यवसाय रहे भारतीय समाज में स्वतंत्रता के बाद यंत्र - तंत्र के कारण तेजी से बदलाव आने लगा। परंपरा से गांव में स्थित खेती से संबंधित व्यवसायों की व्यवस्था बिखर कर समाज में भूमीहीन, मजदूरों की संख्या बढने लगी। जिनके पास खेती थी वे अपना जीवन सुख समाधान से जीते थे। परंतु, अकाल, बाढ और सेठ - साहूकारों से लिये ऋण के चक्र में अटककर सामान्य किसान, भूमीहीन, मजदूर शोषण - अत्याचार के शिकार बनते थे। जमींदारो के व्यवहारों के बारे में मैत्रेयी पुष्पा कहती है। ''मेरे पिता जमींदारों के विरूध्द खडे होकर कोर्डों की मार मारे गये। इनका अपराध था गरीब होकर स्वाभिमान से जीना। वे लगान न देने के कसुरवार थे, सख्त से सख्त सजा के पात्र थे। ऐसे दंडित लोगों का समूह गॉव कहलाता था या गॉव का दूसरा नाम था दरिद्रता और लाचारी।'' 28

इस तरह खेती यह प्रमुख व्यवसाय रहे भारत देश में पंचवार्षिक योजनाओं के तहत अनेक योजनाओं का निर्माण तो हो रहा था। परंतु परंपरा से आये सेठ, साहूकार, जमींदार कल - कारखानों के मालिक बनकर भूमीहिन बने मजदूरों का नये सिरे से शोषण कर रहे थे।

इ) धार्मिक स्थिती :- मानव जाति को मनुष्यत्व और समाज में इन्सानियत की निर्मिती के लिए 'धर्म' नाम की संस्था का निर्माण हुआ। परंतु आज 'धर्म' के साथ राजनीति जुड गई और 'धर्म' का उपयोग सुव्यवस्थित समाज निर्मिती के बजाय समाज में विभेद करने के लिये होता दिखाई दे रहा है।

अ) धार्मिक पाखंडता :- 'धर्म' के आड में आज समाज में विभेद करने के प्रवृत्ती बढ रही है। तंत्र - मंत्र, जप - ताप, नारी भोग जैसी कुपरंपराओ के कारण 'धर्म' का मानव जीवन का उद्देश ही बदलता चला गया। आज धर्म के नाम पर भय दिखलाकर पाखंडी लोग समाज के गरीब, अज्ञानी, लोगों को ठगाये जा रहे है। जिसमें शोषण और अत्याचार आये दिन बढ रहा है।

आ) नैतिक स्तर में गिरावट :- 'धर्म' के माध्यम से मनुष्य को बचपन से एक नैतिक अधिष्ठान प्राप्त करके दिया जाता था। परंतु आज धर्म ही पाखंडो के हाथो में चले जाने के कारण मूल्यहीनता, स्थार्थंधता, सत्तालोलुपता के कारण समाज अनुशासनहीन, स्वार्थी, अव्यवस्थित, विघटित होता जा रहा है। बदलते समजा जीवन के बारे में मैत्रेयी जी कहती है। ''जिंदगी को विभिन्न दिशाओं, अलग - अलग कोनो से देखती है, देह में बजते अनेक रागों को मनचाहे ठियो - ठिकानों पर स्थापित करती है। अपनी काया में से चुपके - चुपके निकलकर दुसरों के भीतर प्रवेश करती है। मन - ही - मन स्वयं को उलिच डालती है। कौन रोकने वाला है? सचमुच ही घरेलू क्रिया - कलापों, धार्मिक आडंबरो और मर्यादाओं की जडताओं को ढोते हुए उसने मार्क्स और फ्राइड के सिध्दान्तो से अपने मनोभावों का तालमेल बिठाया है।'' 29 फ्राइड के उत्क्रांतिवाद को माननेवाली मैत्रेयी मनुष्य के नैतिक स्तर से गिरकर अपने समाज को कचुलने की प्रवृत्ती से चिंतित होती दिखाई देती है।

ई) राजनीतिक परिस्थिती :- 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हो गया और 1950 को देश में प्रजातंत्र लागू हो गया। भारतीय जनमानस ने आजादी के ख़्वाब देखे, सुख संपन्नता से खुशहाल जिंदगी चाही। परंतु, देश की स्थिती में ज्यादा बदलाव नहीं आया। जमींदार, साहूकार, सेठ, कल- कारखानदार बने और किसान के उपर होनेवाले अन्याय का चक्र घुमता ही रहा। स्त्री की तो राजनीति में स्थान ही नहीं था। परंतु, मैत्रेयी ने इस परिस्थिती मे बदलाव लाने की कल्पना अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने

रखी। उसके प्रत्येक कहानी और उपन्यास की नायिका सामान्य स्त्री है परंतु वह समाज बदलने की चाह लेकर आगे बढती दिखाई देती है।

3) सांस्कृतिक परिवेश :- मानवजीवन में आये अनेक उतार - चढावो के बाद प्रत्येक समाज की अपनी एक संस्कृति निर्माण हो जाती है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की संस्कृति पुरे विश्व के सामने आ गई। मानवतावाद, सहिष्णुता, सदाचार, प्रेम, बंधुभाव आदि मूल्यों को जतन करनेवाली भारतीय संस्कृति की और विश्व ने कुतूहल से देखा जिसमें तीज - त्यौहार, मेले, विविध भाषा, रहन - सहन, कलाओं के कारण अपना महत्व प्रस्तुत कर रही थी। जिसके संस्कार मैत्रेयी पर बचपन से छा गये थे।

गांव में हर साल तिज-त्यौहार, मेले लगाये जाते, जिसमें सालभर किसानी करनेवाले किसान के जीवन में आनंद, नये उमंग का आगमन हो जाता था। एक - दुसरे के सुख - दु:ख बाट लिये जाते थे ।जैसे 'इदन्नमम' में 'भागवत पाठ' के बाद भंडारा होता था और गांव के सब लोग भोजन के लिए इकठ्ठा होते थे। खेरापतीत चाची, कलावती चाची जैसी औरते लोकगीतो, लोककथाओं के माध्यम से हमारे समाज की परंपरा, रूढियों को आगे ले जाने का काम करती थी। शादी के समय फागून के समय, त्यौहार के समय गीत गाये जाते थे। मैत्रेयी पर अपने गांव के सांस्कृतिक परिवेश का गहरा प्रभाव है। आज भी वह जब गांव जाती है तब तीज - त्यौहार के गीत गाती रहती है। अपने गांव की बुंदेलखन्डी भाषा का प्रभाव मैत्रेयी पर हमेशा रहा है जो उसके साहित्य के माध्यम से बुंदेलखन्डी भाषा के मुहॉवरे,कहावते सहजता से पाठक के सामने आ जाते है।

इस तरह मैत्रेयी के व्यक्तित्व निर्माण मे उसके समय के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव गहराई से अंमल किया दिखाई देता है आज मैत्रेयी को 'प्रेमचंद' की विरासत को आगे ले जानेवाली गांव की लेखिका कहा जाता है।

1.2.14 मैत्रेयी के साहित्य से झलके उसकी चारित्रिक विशेषताएँ :-

आज के समकालीन लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रणी स्थान पर है। मैत्रेयी के साहित्य को देखने बाद उसकी कुछ चारित्रिक विशेषताएँ की पहचान होती है

१) सादगी :- मैत्रेयी के पिताजी हीरालाल के मृत्यू के पश्चात नौकरी करनेवाली मॉ कस्तूरीने बेटि को पुरूष की निशाहों से बचाने के लिए उसके सौंदर्य को ही बिघाडना

उचित समझा । उसके बालों को छोरी से मुड दिया था । अपने रहन - सहन के बारे में मैत्रेयी कहती है । खादी के कपडे, सुनी - बिन काजल की ऑखे, खुश्क होता चेहरा, फटे - फटे हाथ - पॉव, किसी चिकनाहट का इस्तेमाल नहीं, पेट और पीठ उघाड छोती नहीं । परिणाम स्वरूप ; मैत्रेयी के रहन - सहन में सादगी - साधापन आ गया । मॉ अपनी लडकी के बारे में कहती है । ''झूठ नहीं बोलती, फॅशन नहीं करती, पढाई में अव्वल आती है । गंगा - जल से पवित्र चलनवाली सदाचारी बेटी ।'' 31 इस तरह मैत्रेयी ने भी अपनी मॉ ने दी जीवन की सादगी को आज तक संभालते हुए अपना रहन - सहन साधेपन से ही रखा है ।

२) स्वभाव :- बचपन से ही संघर्षरत जीवन, मॉ का असाधारण व्यक्तित्व मैत्रेयी में अक्खंडपन लाता गया । सहृदये, संवेदनशील होते हुए भी वह जीवन में मिले कटू अनूभवों के कारण विद्रोही व्यक्तिमत्व की बनी । 'खिल्ली' गांव के प्रधान अहीर चिमनसिंह के संयुक्त परिवार में रहकर उसमें जाटनियों और अहीरनियों की बेधक आत्माओं का वास हो गया, वह जिद्दी, प्रयत्नशील और सहनशील भी बनी । एक सुखी परिवार का स्वप्न देखनेवाली मैत्रेयी उतनी ही कुटुंब वत्सल है, उसने अपनी तीनों बेटियों को बडे लाड प्यार से पालकर डॉक्टर बनाया यह उसके कुटूंब वत्सल स्वभाव का ही प्रमाण है ।

३) साहसी :- मैत्रेयी पुष्पाजी ने अपना जीवनपट और जीवन संघर्ष नीडरता से आत्मकथा 'कस्तूरी कुंड बसै' में उघाडकर रखा है । जिसमें मॉ के जीवन का भेभाकी से चित्रण करनेवाली और अपने किशोरावस्था के जीवन के बारे में बेधडक अपने मित्रों के साथ बिताये क्षण को खोलनेवाली मैत्रेयी एक साहसी लेखिका है । मैत्रेयी स्त्री - पुरूष संबंध को एक आवश्यकता मानती है । स्त्री देह की अनुपस्थित माननेवाली अपनी मॉ की 'फीमेल सेक्यूलिटी' बेदिक्कत पाठकों के सामने रखती है ।

साथ ही बचपन से निडरता से अन्याय - अत्याचार का विरोध करती आई है । इंटरमिडियट स्कूल में पढते समय प्रिंसिपल के कामापचारी व्यवहार के खिलाफ सहपाठियों के साथ आवाज उठाती है । मॉ कस्तूरी मैत्रेयी को मॉफी मॉगने के लिए कहती है, तब मैत्रेयी कहती है । ''माताजी आप में जो साहस नहीं है, जो साफगोई नहीं है, उसे अपनी बेटी में देखकर आपको तो खुश होना चाहिए । आप डर क्यों रही है ।'' 32

इस तरह जीवन में आये अनेक कठिण प्रसंगो का सामना मैत्रेयी ने साहस के साथ किया है, जो उनके साहसी स्वभाव का परिचय देता है।

४) स्नेह की भूखी :- पिताजी की मृत्यू और मॉ कस्तूरी का महिला मंगल योजना में नौकरी करना इन्ह कारणों से मैत्रेयी ने हमेशा अकेलापन, स्नेह का बाप अभाव ही पाया। मॉ स्नेह की भूखी मैत्रेयी गांव के बुढी औरतों के सान्निध्य में आकर उनके लाड - प्यार से उनकी ही बनी रहती है, जो शिक्षा से भी अलगाव रखने लगती है। स्नेह की भूखी मैत्रेयी कहती है। ''हॉ, ये स्वाभाविक है। पर मैं अगर अपनी बात करूँ तो अपने और पराए का कोई भेद नजर नहीं आता है। मुझे अपने बच्चे की तरह ही दूसरों के बच्चे भी उतने ही प्यारे लगते है। इसलिए कम से कम मेरे लिए निजता या सार्वजनिकता की कोई समस्या ही नहीं रह जाती है, मैं सच बताऊँ, मुझे प्यार लेना या देना (बडे या छोटे सभी के प्रति) इतना अच्छा लगता है कि यह प्रवृत्ति मेरे पुरे अस्तित्व में समा गई है। ऐसा शायद इसलिए विकसित हुआ, क्यों कि मुझे बचपन में आवश्यक प्यार नहीं मिला।'' 33 इस तरह बचपन से ही स्नेह की भूखी मैत्रेयी दुसरों के जीवन में स्नेह, प्यार बाटना अपना अधिकार मानती है।

५) उच्चनीयता, जातीभेद का विरोध :- मॉ कस्तूरी पढी लिखी होने कारण उसने अपने जीवन में धर्मांधता, अंधश्रध्दा इन बातों को स्थान नही दिया। परिणामस्वरूप ; मैत्रेयी पर भी इन्सानियत बचपन से संस्कारित होती दिखाई देती है। बचपन में अपने कुर्मी जाति के दोस्त 'एदला' उसका रक्षक और हमदर्द रहा है। अपने घर का गुड चुराकर 'एदला' को देनेवाली मैत्रेयी को देखकर कस्तुरी के मन में बेटी के प्रति प्यार ही उमड जाता है। ''इतनी कहानी सूनकर कस्तूरी का मन आशवस्त हुआ कि लडकी में इन्सानियत जाग रही है।'' 34

अपने कॉलेज के जीवन में अपने प्रेमी शिवदयाल निम्न जाति का होने के कारण टूटे प्यार के रिश्ते को मैत्रेयी जिंदगी भर याद करती रही है। बाडे मे रहने आई मैत्रेयी बाडे के लोगों का निम्नजाति के लोगों से किये जानेवाले व्यवहार के प्रति उसके मन में विद्रोह जाग उठता है और वह कविता के माध्यम से ''दैनिक जागृति नामक पत्र में जाति - पाति के विरूध्द अपनी भावना व्यक्त करती है।

''नगर एक दिन जाननेवाला है

कितना जोर बॉंध रखा है अपनी बाजूओं में तुने संडास के रास्ते ही सही आ तो गई ऑंगन तक और चढती जाती है, छत पर, कैसे छिपा पाएगा अब यह कि कोई और बाडा तुझे ।''35

धर्म जाति - पाती के परे इन्सानियत को महत्व देनेवाली मैत्रेयी 'धर्म' के बारे में कहती है । ''कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म को मान सकता है और सारे धर्मों का छोर वहीं आकर जुडता है । 36 जहॉं लेखक अपनी कृति में मानवता से जुडती है । इस तरह मैत्रेयी सबसे बडा धर्म 'इन्सानियत' मानती है ।

६) स्त्री - पुरूष समानता की पक्षधर :- जिस मॉं कस्तूरी ने अपनी लडकी के जन्म का आनंद से स्वागत किया था इसकी लडकी ने भी अपने जीवन में स्त्री जाति को पुरूष के समानाधिकार का समर्थन ही किया है । सदियों से स्त्री जाति पर अन्याय - अत्याचार करनेवाले भारतीय समाज की नारी मैत्रेयी को भी बचपन से अनेक बार अत्याचार का शिकार बनना पडा । इन सबसे स्त्री को मुक्ति चाहिए तो स्त्री को शिक्षित होना चाहिए । यह विचार उनके साहित्य का मूलाधार है । जिसके माध्यम से वह स्त्री - पुरूष समानता का पुरस्कार करती है । अपने साहित्य से वह बालविवाह, विधवा विवाह, सती - प्रथा, जाति - प्रथा ऐसी अनेक स्त्री विरोधी भूमिकाओं के विरूध्द आवाज उठा रही है । जिससे आज के समाज को मैत्रेयी का साहित्य स्त्री - पुरूष समानता के बारे में फिर एक बार सोचने के लिए बाध्य कर रहा है ।

७) मानवता के प्रति प्रतिबध्द :- मैत्रेयी पुष्पाने अपने आत्मकथा के दुसरे भाग ''गुडिया भीतर गुड़िया'' में सांप्रदायिकता, सहिष्णूता संबंधी अपने विचार स्पष्ट किये है । दिल्ली क्वार्टर में रहने आई मैत्रेयी की दोस्ती डॉक्टर अहमद की पत्नी इल्माना से हो जाती है । हिंदू - मुसलमानों में होते रहते दंगे - फसाद के बारे में अपने विचारों को व्यक्त काते हुए मैत्रेयी धर्म निरपेक्षता को महत्व देती दिखाई देती है । ''मेरे खयाल में सारे धर्मों का अपना - अपना साहित्य है ।ईसाईयों की बाईबिल है । हमारी यानी हिंदुओं का रामायण - गीता है, मुसलमानों का कुरान है । इनमें कुछ कहानियॉं है । इनमें भी सृजन की बहुत सारी चीज है । जीवन से संबंधित हर विधा उनमें मौजूद है । अगर हम अपने सृजनात्मक लेखन में उनका उपयोग करना चाहे, एक तो होता है उपयोग, एक होता है प्रयोग, तो हम उसकी अच्छी - अच्छी बातों का उपयोग करते हैं जो इस समाज का कल्याण कर

सकें, जो इस समाज को आगे ले जा सके तो फिर उनको उसमें से निकालकर फिर अपनी दृष्टि से देखना ।'' 37 इस तरह लेखक किसी भी धर्म का क्यों नही उसने अपने साहित्य के माध्यम से मानवधर्म की स्थापना करनी चाहिए इस विचार को मैत्रेयी अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान देती है ।

८) अभिनय कुशल :- मैत्रेयी को बचपन से ही अभिनय से लगाव रहा था । परंतु, गांव में कृष्णजन्माष्टमी के समय खेले जानेवाले नाटक में माँ ने सहभाग नही लेने दिया था । अपनी अभिनय की अधुरी इच्छा मैत्रेयी ने कॉलेज जीवन में पुरी की महाविद्यालय में खेले गये नाटक में उसने जहाँआरा की भूमिका निभाई थी । ''जिसे कभी इत्मीमान से अपने घर की छत नसीब नहीं हुई, आज वह महलों की रानी कहला रही है ।'' 38 उसके सफल अभिनय को देखके दर्शकों में तालियाँ गुँज उठी थी । इस तरह मैत्रेयी बचपन से अभिनय भी दिखाई देती है ।

९) अभिरूचि :- संयुक्त परिवार में रही मैत्रेयी हमेशा दुसरों से स्नेह से व्यवहार करती है । साहित्य लिखना, पढना, पढाना, दुसरों के विचारों को समझना, टीका - टिपण्णी करना, अच्छे बुरे के बारे में स्पष्ट मत व्यक्त करना मित्र - परिजन निर्माण करना, निसर्ग तथा मनुष्य के अंत:सौंदर्य में झाँकना उन्हें पसंद है । जिसके माध्यम से दुसरों पर प्यार बरसना उन्हें अच्छा लगता है ।

१०) यात्राएँ :- मैत्रेयी घुमक्कड प्रवृत्ती की है, उन्हें अपने जीवन में नवचैतन्य लाने के लिये यात्रा करना एक सुकर मार्ग दिखाई देता है । जब वह लेखन से उब जाती है, तब यात्रा के लिये निकल पडती है । साहित्यकार होने के नाते विचार - विमर्श, संगोष्टी या सम्मान लेने बुलाने पर वह यात्रा करती ही है साथ ही ऐतिहासिक स्थलों पर जाकर वहाँ के स्थलो के बारे में जानना, भ्रमण काना उन्हें अच्छा लगता है ।

११) स्वाभिमानी :- मैत्रेयी स्वाभिमानी स्त्री है उसे यह गुण उसकी माँ कस्तूरी से प्राप्त हुआ । पति निधन के बाद शिक्षा हासिल कर घर - संसार, लडकी की पढ़ाई चलानेवाली कस्तूरी की बेटी मैत्रेयी है, उन्होंने अपने जीवन में कभी हार नही मानी । साहित्यकार के होते उन पर कईयों ने उगलियाँ उठाई पर उन्होंने डट - कर सामना किया और आज वह सफल लेखिका के रूप में प्रसिध्द है ।

१२) दिनचर्चा :- मैत्रेयीजी ने अपनी दिनचर्चा तय कर ली है। सुबह के प्रारंभिक कार्य निपटाकर वह संगणक पर लेखन कार्य करती है। खान - पान के बाद आराम करती है। और सुबह - शाम घुमने जाती है। स्वास्थ्य को तंदरूस्त रखना महत्वपूर्ण मानती है।

इस तरह स्नेह की भूखी, मिलनसार, नीडर, जिद्दी, दृढ संकल्पी मैत्रेयी का व्यक्तित्व उसकी माँ कस्तूरी का प्रतिरूप है। माँ कस्तूरी के नीडर स्वभाव के परिणाम स्वरूप मैत्रेयी आज धडेले से एक दबंग औरत के रूप में प्रस्तुत होते हुए भारतीय स्त्री जीवन की सच्चाई को समाज के सामने लाने में सफल हुई है।

1.3 मैत्रेयी पुष्पा का कृतित्व :-

भारतीय समाज व्यवस्था में अतिशुद्र माने जानेवाली स्त्री जाति को सदियों से अनेक कुप्रथा, रूढ़ियों और परंपराओं के साखल से बांध दिया था, उसे पुरूष के समान जीवन जीने का अधिकार नही था,पशुवत जीवन जीनेवाली भारतीय समाज के स्त्री जीवन में स्वातंत्रता के बाद जरूर बदलाव हो रहा है। परंतु, आज भी शिक्षा को ग्रहण किये, नौकरी - पेशा करनेवाली स्त्री के उपर होनेवाले अन्याय - अत्याचार कम नही हुए है। आज भी ग्रामीण हो या शहरी स्त्री उसे अनेक यातनाओं से गुजरना पड रहा है। इस सत्यता को अपने साहित्य के माध्यम से विश्व के सामने रखने का नीडर कार्य मैत्रेयी पुष्पा अपने साहित्य के माध्यम से कर रही है। स्त्री - पुरूष समानता ही नही, बल्कि, स्त्री - पुरूष लिंग समानता के विचार प्रस्तुत करनेवाली इस 'दबंग' लेखिका का साहित्य समझना जानना आवश्यक है। उनके बारे में कृष्णा सोबती कहती है - ''स्वातंत्र्योत्तर भारतीय उपन्यास के हिंदी समय में मैत्रेयी पुष्पा द्वारा प्रस्तुत की गई ग्रामीण समाज की प्रखर अभिव्यक्ति विलक्षण कहलाने की अधिकारी है। जिस अनुभव और कौशल से मैत्रेयी ने देशज गतिविधियों का सामाजिक वृत्तांत बुना है वह आत्मसम्मोहन और आत्मपीड़क उपन्यासों के पाठ से उन्हें अलग खडा करता है। राष्ट्र के ग्रामीण जीवन से उभरती सामाजिक राजनीतिक स्थितियाँ, पीढियों और रूढियों के द्वंद्ववात्मक पैंतरे मैत्रेयी की लेखन की नई नागरिक चेतना को प्रमाणित करते है।''39

इस तरह आज के वैश्विकिकरण के युग में आधुनिक बोध से अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रही नारी जीवन का चित्रण मैत्रेयी का साहित्य है। जिन्हें हम निम्न प्रकार से देख सकते है।

1.3.1 उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा :-

आज के अधुनातन लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा एक मात्र लेखिका रही है, जिन्होंने प्रेमचंद और रेणू की परंपरा को आगे बढाते हुए अपने समय और समाज का इमानदारी से चित्रण अपने साहित्य का विषय रखा है । उनके उपन्यासो में चित्रित आंचलिकता हमें 'फणीरवरनाथ रेणूजी' की याद दिलाता है ।'गॅवार गॉव की लेखिका' के नाम से प्रसिध्द हो रही मैत्रेयी ने अपने इस धब्बे को 'विजन' उपन्यास लिखकर हटा दिया । 'विजन' के माध्यम से महानगरीज जीवन के 'नेत्र - चिकित्सा' व्यवसाय याने डॉक्टरी व्यवसाय की पोल खोलते हुए वैद्यकीय क्षेत्र का यथार्थ एवंतीखा व्यंग्य करनेवाला यह उपन्यास काफी चर्चित रहा है । अत: ग्रामीण जीवन के साथ - साथ शहरी जीवन के नारी जीवन को समाज के सामने लाना लेखिका का उद्देश है । जिसे उन्होंने निम्न उपन्यासों के माध्यमसे प्रस्तुत किया है ।

अ.क्र.	उपन्यास का नाम	प्रकाशन वर्ष
1	स्मृती - दंश	1990
2	बेतवा बहती रही	1993
3	इदन्नमम	1994
4	चाक	1997
5	झूलानट	1999
6	आल्मा कबूतरी	2000
7	अगनपाखी	2001
8	विजन	2002
9	कही इसुरी फाग	2005
10	खुली खडकियॉ	2008
11	गुनाह - बेगुनाह	

आधुनिक समाज के नारी जीवन का चित्रण करनेवाली इस लेखिका का के बारे में राजेंद्र यादव कहते है - ''रेणू के बाद, संजीव के साथ - साथ मैत्रेयी अकेली लेखिका है, जिसने सबसे अधिक चरित्र हिंदी साहित्य को दिए । मैत्रेयी का गॉव कस्बे से संबंध आज

भी बना हुआ है। यह गॉव जाकर लोगों से मिलती - जुलती है। यहॉ रांगेय - राघव के लिए कहा गया एक वाक्य याद आ रहा है कि वे धुमकेतू की तरह हिंदी के आकाश पर उदित हुए। शायद मैत्रेयी का आगमन भी कुछ वैसा ही हुआ है। हिंदी साहित्य के घुटे और बंद वातावरण में मैत्रेयी का आना अचानक एक ऐसी दुनिया के दरवाजे खुल जाना है, जिसके पार फैला, जंगल, पशु - पक्षी, फुल, फसले, सब कुछ दूर - दूर तक चला गया है। हॉ, वहॉ भोर - मैनाएँ है तो सियार - भेडिए भी ..... ।'' 40 इस तरह मैत्रेयीजी का पूरा साहित्य उनकी अनुभव और प्रेरणा भूमि गॉव के नारी जीवन से संबंधित है, जो हिंदी साहित्यकार 'प्रेमचंद' और रेणू की याद करा देते है।

1.3.2 कहानीकार मैत्रेयी पुष्पा :-

मैत्रेयी पुष्पा जिस तरह एक, सफल उपन्यासकार है उसी प्रकार एक श्रेष्ठ कहानीकार भी है। उनके कथा साहित्य के बारे में राजेन्द्र यादव कहते है। ''हिंदी साहित्य में पहली बार हुआ कि किसी महिला ने शुध्द गॉव - कस्बे की कहानियॉ लिखीं। मैत्रेयी के पास ऐसे अनुभव थे, जिन पर मध्यमवर्गीय महिलाएँ सोच भी नही सकती थी। उन पीडित महिलाओं पर गहराई, संवेदना, समझ के साथ लगातार लिखनेवाली पहली महिला लेखिका मैत्रेयी है। गॉव के जीवन और संघर्ष को केंद्र बनाकर ही उसकी कथा - रचनाएँ है।'' 41

इस तरह गॉव जीवन को उजागर करनेवाली कथाओं के मैत्रेयी के निम्नलिखित कहानीसंग्रह रहे है।

अ.क्र.	कहानी संग्रह का नाम	प्रकाशन वर्ष
1	चिन्हार	1991
2	ललमनियॉ तथा अन्य कहानियॉ	1996
3	गोमा हँसती है	1998

मैत्रेयी की अनेक कहानियॉ पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। उनकी कहानियों में बिम्बों और दृश्यों को सजीव बनाने की एक अद्‌भूत ताकत है। जिन्हें पढकर पाठक कथा - रस का अनुभव करता है। साथ ही उनके पात्र पाठक के दिलो - दिमागपर छा जाते है।

इस तरह मैत्रेयी आज हिंदी साहित्य में एक सफल कहानीकार के रूप में भी अपना स्थान निर्माण कर चुकी है।

1.3.3 आत्मकथाकार मैत्रेयी पुष्पा :-

आत्मकथा को 'अपनी कथा' या 'आप बीती' भी कहा जाता है। आत्मकथा लिखना कोई साधारण बात नही है अपने जीवन को सच्चाई के साथ अंतरंग - बहिरंग के साथ प्रस्तुत होना एक अनन्य साधारण काम है; क्योंकि इसके लिये साहस और ईमानदार होना महत्वपूर्ण होता है।

मैत्रेयी पुष्पा ने बडी सच्चाई और ईमानदारी से अपने जीवन के अंतरंग को अपने आत्मकथा का प्रथम भाग 'कस्तूरी कुण्डल बसै' में 2002 में प्रकाशित किया। जिसमें उनके और उनकी माँ और साथ ही गांव की सच्चाई का चित्रण नीडरता से प्रस्तुत हुआ है। 2008 में प्रकाशित गुडियाँ भीतर गुडियाँ' में अपने वैवाहिक जीवन और साहित्यिक जीवन को धडेले से प्रस्तुत किया है। ''गुडिया भीतर गुडिया'' के बारे में राजकिशोर कहते है। ''गुडिया भीतर गुडिया' का सारभूत निष्कर्ष भी यही है। स्त्री पुरूष समाज की निजी संपत्ति है। लेखिका ने अगर तन - मन - कर्म से इस रूढि का प्रतिवाद करने का जोखिम नहीं उठाया होता, तो यह सर्वथा पठनीय पुस्तक लिखी ही न जाती।'' 42 इस तरह बडी सच्चाई और बेझिझक अपने जीवन पट को खोलने का धैर्य मैत्रेयी पुष्पाने अपनी आत्मकथाओं में उठाया है। जिसके माध्यम से उनका 'दबंग' व्यक्तित्व प्रस्तुत होता है।

1.3.4 स्त्री - विमर्श :-

स्त्री विमर्श से संबंधित मैत्रेयी पुष्पाजी के दो किताबे बहुत प्रसिध्द है। १) खुली खिडकियाँ २) सुनो मालिक सुनो। इन्ह दो किताबों के माध्यम से मैत्रेयी ने 'स्त्री - विमर्श' के तीन आयाम प्रस्तुत किये है। १) पुरूषों का अनुकरण २) पुरूषों द्वारा निर्मित मूल्यों का विरोध ३) आत्मपरीक्षण करते हुऐ अपने अर्न्तविरोधों को समझते हुए अपने इच्छाओं, विचारों को समाज के सामने व्यक्त करना। स्त्री मुक्ति के बारे में स्त्री को अपने देह संबंधी आजादी नहीं मिलती तब तक वह जकडी रहेगी पुरूषसत्ता के अधीन रहेगी। अपने इस विचार के बारे में मैत्रेयी कहती है। ''देह हो या मन। ये स्त्री - पुरूष के

अपने निजी होते है, यह बात स्त्री जिस दिन एलानिया तौर पर बयॉं कर देगी उस दिन सामंती समाज की चूलें हिल उठेगी । लेकिन आज भी औरत डर रही है । पढी लिखी पतिव्रताओं को करवाचौथ जैसे तमाम व्रत करते हुए अपनी वफादारी का लाइसेंस हर साल रिन्यू करना पडता है, ताकि विवाह संस्था उन्हें वैधता दिए रहे । जब तक औरत ऐसे कर्मकांडों से छुटकारा नहीं पाएगी, उन्हें किसी दूसरी तरह का स्पेस नहीं मिलेगा ।'' 43 इस तरह आज की स्त्री को पूरी आजादी की मॉंग करनेवाले विचार मैत्रेयी ने अपने 'स्त्री - विमर्श' संबंधी किताबों में रखे है । जो मानवता के धरातल पर स्त्री - पुरूष समानता के अधिकार की मॉंग करते है ।

1.3.5 नाटक :-

मैत्रेयी पुष्पाजी ने अपने 'इदन्नमम' उपन्यास पर आधारित 'मंदाक्रांता' नाटक की निर्मिती की है । 'सॉंग एंड ड्रामा डिविजन' द्वारा इस नाटक में लेखिका ने नायिका 'मंदा' के द्वारा गॉंव - समाज परिवर्तन लाने की शक्ति होती है । इस विचार को प्रस्तुत करते हुए । ग्रामीण भारत की छबी बदलने में एक अल्पशिक्षित स्त्री मंदा की महत्वकांक्षा और नायक डॉक्टर मकरंद की साहयता से समाज मन में परिवर्तन लाने की शक्ति को उजागर किया है । इस नाटक का मंचन भी सफल रहा है ।

1.3.6 कविता संग्रह :-

बचपन से ही लेखन की ओर आकर्षित रही मैत्रेयी ने अपने कॉलेज जीवन में 'बाडे की औरतें के लिए' यह कविता लिखी जो 'जागरण' से प्रसिध्दी हुई । तो 'बाडे' में बडा हंगामा हुआ था । जाति - पाति विरूध्द अपने विचार रखनेवाली मैत्रेयी ने स्त्री - जीवन की यथार्थता को 'लकीरे' नामक अपने काव्य संग्रह में व्यक्त किया है । अपने टीचर भगवानदास माहौर जी की प्रेरणा से मैत्रेयी ने शुरू मे काव्यलेखन किया । परंतु उनका मन कथा साहित्य में ही ज्यादा रूचि रखता दिखाई देता है ।

1.3.7 टेलिफिल्म :-

मैत्रेयी जी की प्रसिध्द कहानी 'फैसला' पर 'बसुमती की चिठ्ठी नामक टेलिफिल्म निकली है । साथ ही उनका नाटक मंदाक्रांता' पर 'संक्रांती' नामक

टेलिफिल्म और कस्तूरी कुंडल बसै इस आत्मकथा पर दूरदर्शन पर धारावाहिक प्रसारित हुई है।

1.3.8 अन्य लेखन :-

आज मैत्रेयी पुष्पा आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में एक प्रसिध्द उपन्यासकार, कथाकार के रूप में प्रसिध्द है ही साथ ही उन्होंने अनेक पत्र - पत्रिकाओं में 'स्त्री - विमर्श' पर अपने विचार प्रस्तुत किए है। 'हंस', 'आलोचना', आदि पत्रिकाओं में उनका लेखन लगातार प्रसिध्द होता है। स्वतंत्र कहानी लेखन, आलोचना, टिप्पणी, वैचारिक बहस, लेख तथा संगोष्ठियों के लिए लेखन कार्य चलता रहता है। इस तरह मैत्रेयी निरंतर लेखन करती हुए भारतीय ग्रामीण लगी को अपने 'वजूद' के लिए जागृत कर रही है।

1.3.9 पुरस्कार :-

बीसवीं सदी के अंतिम दशक की प्रसिध्द उपन्यासकार के रूप में मैत्रेयी ने हिंदी साहित्य जगत् में अपना स्थान निर्माण किया। उनके अल्पावधित एक प्रसिध्द साहित्यकार के रूप में प्रसिध्द होने में उनका स्त्रीवादी लेखन प्रसिध्द रहा। जिसमें ग्रामीण भारतीय नारी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत होता है। उनके साहित्य को उनके पुरस्कारों से नवाजा गया है उनमें निम्नलिखित पुरस्कार महत्वपूर्ण है।

पुरस्कार एवं सम्मान

1) 'इदन्नमम' उपन्यास के लिए 'नंजनागुडू तिरूमालंबा पुरस्कार (बंगलोर की ओर से)

2) प्रेमचंद सम्मान (उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान की ओर से) 1995

3) वीरसिंह देव पुरस्कार (मध्यप्रदेश परिषद की ओर से)

4) कथाक्रम सम्मान

5) साहित्यकार सम्मान, हिंदी अकादमी, दिल्ली। 1996 - 97

6) सार्क लिटरेटी अवार्ड

7) 'फैसला' कहानी पर कथा पुरस्कार

8) 'द हंगर प्रोजेक्ट' 'पंचायत राज' का पुरस्कार

9) सरोजिनी नायडू पुरस्कार

10) अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित

निष्कर्ष :-

आज के आधुनिक लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का लेखन असाधारण है जिसमें गांव की स्त्री को विश्वपटल पर ले जाने का यथार्थ भरा कार्य हुआ है । गांव में बिता बचपन और आँखो देखा स्त्री जीवन का यथार्थ उसे आज के शिक्षित समाज के सामने लाना था । आज स्त्री पढी - लिखी जरूर है । परंतु, आज भी ग्रामीण हो या शहरी स्त्री भारतीय पुरूष सत्ता समाज की शिकार बनती ही चली जा रही, इस यथार्थता को सामने लाकर अपने वजूद, अपने हक्क के लिए लढनेवाले स्त्री का चित्रण करना मैत्रेयी ने अपने साहित्य का उद्देश रखा है । 'देह' समानता की माँग करनेवाली मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व असाधारण ही है । जिसमें परंपरागत मान्यताओं, धारणाओं और नैतिकता को नकारने का अतूट साहस है ।

आज की नारी के व्यक्तित्व कि रक्षा करते हुऐ, उसे आत्मनिर्भर बनाकर अपने लिए 'स्पेस' निर्माण करने की माँग मैत्रेयी का साहित्य करता है । अपने साथ - साथ अपने समाज के लिए अपना जीवन त्याग ने के लिए तैयार नारी के आदिशक्ती के रूप को मैत्रेयी पुन: एक बार समाज के सामने लाना चाहती है ।

इस तरह आज की स्त्री की पहचान बनाने का जो संघर्ष है, वही मैत्रेयी का साहित्य है । परिणाम स्वरूप ; मैत्रेयी पुष्पा नाम समकालीन हिंदी लेखिकाओं मे आज शीर्षस्थान पर है ।

अध्याय एक

सन्दर्भ संकेत

1) प्रो. महेन्द्र चतुर्वेदी, प्रो. तारकानाथ बाली - साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश ; पृ - 256

2) संपा.श्री.नवलजी - 'नालन्दा विशाल शब्दसागर ; पृ - 1306

3) मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तूरी कुंडल बसै', पृ - भूमिका से।

4) वही, पृ - 101

5) वही, पृ - 18

6) मैत्रेयी पुष्पा - 'गोमा हँसती है', पृ - 7-8

7) मैत्रेयी पुष्पा - 'मेरे साक्षात्कार', पृ - 59

8) संपा. श्री.नवलजी - नालन्दा विशाल शब्दसागर', पृ - 1125

9) मैत्रेयी पुष्पा, 'कस्तूरी कुंडल बसै', पृ - 9

10) संपा. विजय बहादूर सिंह - 'मैत्रेयी पुष्पा', स्त्री होने की कथा; पृ - 260

11) वही, पृ - 261

12) मैत्रेयी पुष्पा - 'गोमा हँसती है', पृ - 8

13) मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तुरी कुंडल बसै', पृ - 24

14) वही, पृ - 31

15) वही, पृ - 74

16) वही, पृ - 74

17) वही, पृ - 42

18) वही, पृ - 56

19) संपा. विजय बहादूर सिंह - 'मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा', पृ - 243

20) मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तूरी कुंडल बसै', पृ - 52

21) वही, पृ - 120

22) मैत्रेयी पुष्पा - 'मेरे साक्षात्कार',पृ - 71

23) मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तूरी कुंडल बसै', पृ - 58

24) मैत्रेयी पुष्पा - 'सुनो मालिक सुनो', पृ - 23

25) वही, पृ - 22

26) मैत्रेयी पुष्पा - 'मेरे साक्षात्कार', पृ - 59

27) मैत्रेयी पुष्पा - 'गोमा हँसती है', (मेरे संदर्भ मे से) पृ - 36

28) मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तूरी कुंडल बसै', पृ - 54

29) वही, पृ - 93

30) वही, पृ - 124

31) वही, पृ - 179

32) वही, पृ - 126

33) संपा. विजय बहादूर सिंह - 'मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा', पृ - 74

34) मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तूरी कुंडल बसै', पृ - 44

35) वही, पृ - 176

36) मैत्रेयी पुष्पा - 'गुडिया भीतर गुडियॉ', पृ - 124

37) वही, पृ - 152

38) वही, पृ - 124

39) संपा. विजय बहादूर सिंह - 'मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा', पृ - भूमिका से

40) संपा. विजय बहादूर सिंह - 'मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा', पृ - 60

41) वही, पृ - 57

42) वही, पृ - 270

43) मैत्रेयी पुष्पा - 'मेरे साक्षात्कार', पृ - 79

अध्याय दो:

शिक्षा :- अर्थ,उद्देश्य एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास

2.0 विषय प्रवेश :-

मनुष्य जन्म से ही 'शिक्षा' ग्रहण करने लगता है। जीवनावश्यकताओ की पूर्ति के लिए वह संघर्ष करता है। प्राप्त अनुभवों से 'शिक्षा' ग्रहण करते हुए जीवन को सफलता की और ले जाने का प्रयत्न करता है। अनुभवों से प्राप्त 'शिक्षा' को अनौपचारिक या औपचारिक पध्द्ती से ग्रहण किया जा सकता है। प्राचीन काल मे मनुष्य निसर्ग के बीच रहकर अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करता था। परंतु, सभ्यता की ओर बढते मनुष्यजाती ने औपचारिक शिक्षा पध्द्ती को स्विकारा। औपचारिक शिक्षा सफलतापूर्ण जीवन के लिए कौन - सी विधी उपयुक्त है इसका ज्ञान कराती है। इसलिए 'शिक्षा' को साधन कहा गया है।

2.1 शिक्षा का अर्थ :-

'शिक्षा' व्दारा मनुष्य सुसंस्कारित होता है। जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोन निर्माण करने का कार्य शिक्षा द्वारा होता है। सर्वांगिण व्यक्तित्व विकास का साधन 'शिक्षा' है। इसलिए जिस समाज का वह हिस्सा है, उस समाज के विकास के लिए 'शिक्षा' महत्वपूर्ण बन जाती है। प्रत्येक मनुष्य समाज की अपनी शिक्षा प्रणाली स्थित रही दिखाई देती है। मनुष्यजाति की संस्कृति ही उसके शिक्षा प्रणाली का इतिहास है। आज विश्व में प्राचीन भारत की संस्कृति विश्व में श्रेष्ठ मानी जाती है। प्राचीन भारतीय साहित्य से प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का परिचय होता है। प्राचीन काल में शिक्षा को वह प्रकाश माना है ; जो व्यक्ति को अपना सर्वांगीण विकास करने, सफल जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्ती मे सहाय्य करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करते हुए आनंदपूर्ण जीवन प्राप्त कराने का कार्य शिक्षा व्दारा सम्पन्न होता है।

2.1.1 'शिक्षा' का व्यापक अर्थ :-

'शिक्षा' मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यू तक चलनेवाली प्रक्रिया हैं। मनुष्य जिस परिवेश मे रहता है उस परिवेश से वह अभ्यास और अनुकरण करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसलिए 'शिक्षा' को हम व्यक्तित्व विकास का मूलाधार कह सकते

है । व्यक्ति को सुसंस्कृत, संवदेनशील बनाते हुए सामाजिक जीवन मे सक्रिय होने की चेतना शिक्षा द्वारा प्राप्त होती है । मनुष्य सामाजिक प्राणी है, समाज मे रहते हुए उसके भावात्मक एकता, सहयोग, सहानभूति, नैतिकता जैसे सद्गुणों का विकास होता है । इसलिए मनुष्य जीवन को सफल बनाने का शिक्षा साधन तथा माध्यम है । अर्थात् मनुष्यजाती में आऐ हुऐ परिवर्तन व्यापक अर्थ में शिक्षा की देन है । इसलिए डॉ. नीता पांढरपांडेजी कहती है - '' जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है । '' 1

2.1.2 शिक्षा का संकुचित अर्थ :-

मनुष्य को जीवन में सफल बनाने के लिए साधन के रूप मे 'शिक्षा' की तरफ देखा जाता था । परंतु, आज सभ्य मानवजाती संचित ज्ञान भांडार के माध्यम से मनुष्यजाती के विकास के उनके द्वार खोल रहे है । आज 'शिक्षा' के विशिष्टता को लेकर संचित ज्ञान संचय को विशिष्ट विधाओं में बॉटते हुए और नये - नये प्रवाह के अनुसार 'शिक्षा' मे नई विधाओं का निर्माण करते हुए 'शिक्षा' कि विशिष्ट व्यवस्था की जा रही है । आज शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के साथ - साथ जीविकार्पोजन का महत्वपूर्ण साधन बनाती हुई उसका संकुचित अर्थ हो गया है नोकरी, व्यवसाय प्राप्त करा देना वाला साधन 'शिक्षा' है । डॉ. नीता पांढरपांडे कहती है - '' शिक्षकों से विभिन्न विषय पढना, पुस्तके पढना, एक विशिष्ट स्थान मे, विशिष्ट अवधि मे पढना इसी संकुचित अर्थ मे आज शिक्षा को लिया जाता है । '' 2

2.1.3 शिक्षा की परिभाषाऍं :-

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है । व्यक्ति और समाज निर्माण मे एक - दुसरे के लिए अनुकूल शिक्षा का होना आवश्यक है, शिक्षा के इस महत्ता को देखते अनेक विद्वानों ने शिक्षा को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है -

1. **जॉन डीवी -** '' शिक्षा अनुभवों के सतत् पुननिर्माण के व्दारा जीवन की प्रक्रिया है । यह व्यक्ति में उन समाज क्षमताओं का विकास है जो उसको अपने वातावरण को नियन्त्रित एवं अपनी सम्भावताओं को पूर्ण करने के योग्य बनायेंगी ।'' 3
2. **रवीन्द्रनाथ टैगोर -** '' सर्वोच्य शिक्षा वह है जो हमारे जीवन के सभी अस्तित्वों के साथ सामंज्यस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाती है । '' 4

3. **महात्मा गांधी** -‘‘शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरिर, मन और आत्मा के उच्चतम विकास से है। ’’ 5

2.1.4 शिक्षा का महत्व :-

‘शिक्षा’ के व्यापक या संकुचित अर्थ में विभिन्न दृष्टिकोन क्यों न हो ‘शिक्षा’ का मनुष्यजीवन मे अनन्य साधारण महत्व है । क्योंकि, ज्ञान के माध्यम से ही मनुष्य सुसंस्कारित होकर अपने परिवार, समाज, राष्ट्र के उन्नति मे सहाय्यक होता है । इसलिए आज की शिक्षा प्रणाली में धर्म, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, कृषि, विधी, चिकित्सा, व्यावसायिक जैसे विशिष्ट शिक्षा की शाखाओं का निर्माण करते हुए, मनुष्य को अपनी रूचि, बौध्दिकता के अनुसार शिक्षा का द्वार खुला कर दिया है । आदिम मनुष्य से लेकर आज के वैज्ञानिक युग मे रहनेवाले श्रेष्ठ मानव को देखते हुए यह प्रमाणित होता है कि मनुष्य के अन्य प्राणियों मे श्रेष्ठ बनाने मे शिक्षा ही महत्वपूर्ण रही है और रहेगी । आनेवाले समाज के लिए सुव्यवस्थित शिक्षा प्रदान करना प्रत्येक राष्ट्र अपना कर्तव्य समजता है । इसलिए डॉ. रामपाल सिंह शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार करते है - ‘‘ शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एंव गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है और सामाजिक पर्यावरण के साथ अनुकुल करने के योग्य बनाती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उसके विचार एवं व्यवहार मे समाज के लिए हितकर परिवर्तन करती है। ’’ 6

इस तरह शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को श्रेष्ठतव प्राप्त होता है और सद्गुणों के चारित्रिक मनुष्य समाज से राष्ट्र की संस्कृति का जतन करने के साथ - साथ आज के भारतीय समाज को विश्व मे श्रेष्ठ बनाने के लिए ‘आधुनिक शिक्षा प्रणाली’ का निर्माण करते हुए सुसंस्कृत, वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष, सम्पन्न भारत बनाने के लिए शिक्षा का महत्व अनन्य साधारण है और रहेगा।

2.1.5 शिक्षा का उद्देश्य :-

सुसंस्कृत और सम्पन्न समाज निर्मिती के लिए उद्देश्यपूर्ण ‘शिक्षा’ का होना अनिवार्य है। प्रयोजन के बिना उद्देश प्राप्ती नही हो सकती है इसलिए शिक्षा के प्रयोजन के बारे मे रिवलिन महोदय ने लिखा है - ‘‘ शिक्षा एक सप्रयोजन तथा नैतिक क्रिया है,

अतएंव यह कल्पना ही नहीं की जा सकती कि यह उद्देश्य हीत है ।'' 7 शिक्षा के उद्देश्य देश, काल तथा जीवन के अनुसार बदलते है । भारतीय शिक्षा के उद्देश्य निम्न है -

2.1.5.1 सामान्य उद्देश :-

शिक्षा का सामान्य उद्देश उस समाज के देश और काल के अनुसार बदलता है। समाज की आवश्यकतानुसार उद्देश बदलते रहते है। परंतु, प्रत्येक समाज में मानव के व्यक्तित्व का विकास, ज्ञानार्जन, शारीरिक, मानसिक विकास, चरित्र निर्माण, सामाजिकता, प्रेम, करूणा, अहिंसा के माध्यम से राष्ट्रीय एकात्मता का निर्माण, राष्ट्र संगठन आदि मूल्य आवश्यक है और इन मूल्यों का विकास करना शिक्षा का सामान्य उद्देश्य होता है।

2.1.5.2 विशिष्ट उद्देश्य :-

देश कालानुसार प्रत्येक समाज और देश के शिक्षा के उद्देश्य मे परिवर्तन होता है। समाज की तात्कालीन आवश्यकता के अनुसार समाज शिक्षा के किसी विशिष्ट उद्देश्य पर ध्यान देते हुए उसका विकास करना अपना लक्ष्य रखता है जैसे स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की आर्थिक उन्नति होने के लिए कृषि तथा व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया गया था। आज संगणकीय शिक्षा आवश्यक मानते हुए प्राथमिक शिक्षा से संगणक का ज्ञान देना इस विशिष्ट उद्देश्य से आज संगणक शिक्षा आवश्यक की है। डॉ. नीता पांढरपांडे कहती है - '' समाज की तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा के जीस अंग पर बल दिया जाता है वे शिक्षा के विशिष्ट उद्देश कहलाते है। '' 8 आज समाज में 'संगणक शिक्षा' का प्रचार - प्रसार करना भारतीय शिक्षा का विशिष्ट उद्देश्य है। विशिष्ट उद्देश्य व्यक्ति और समाज दोंनो की उन्नति मे सहाय्य देता है।

2.1.5.3 वैयक्तिक उद्देश्य :-

प्रत्येक व्यक्ति का शिक्षा ग्रहण करने का अपना वैयक्तिक उद्देश्य होता है - जीवनर्पोजन का साधन प्राप्त करना । व्यक्ति अपनी रूचि, बैध्दिकता के अनुसार वैयक्तिक शिक्षा हासिल करता है और समाज विकास मे साह्य करता है। क्योंकि व्यक्ति

विकास से समाज विकास जुडा है । इसलिए वैयक्तिक शिक्षा के तरफ ध्यान देते हुए अलग - अलग विधाओं का निर्माण करना आज की शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है ।

2.1.5.4 सामाजिक उद्देश्य :-

प्रत्येक देश अपने देश कि शिक्षा नीती बनाते समय समाज के विकास के दृष्टिकोन से शिक्षा प्रणाली के उद्देश रखती है । क्योंकि व्यक्ति कि शिक्षा समाज की शिक्षा बन जाती है । इसलिए व्यक्ति विकास को समाज विकास का माध्यम बनाकर शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य निश्चित करना आवश्यक बन जाता है । भारत ने स्वतन्त्रता के बाद समाजवादी समाज रचना के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजकीय क्षेत्र मे नये नेतृत्व का निर्माण होनेवाली शिक्षा प्रणाली का विकास किया है । समय के साथ बदलते समाज जीवन को ध्यान मे रखकर देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुसंस्कृत, वैज्ञानिक दृष्टिकोन रखनेवाले परिवर्तनवादी समाज की निर्मिती करना शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य होना आवश्यक है । इसलिए सभ्य समाज निर्माण करना शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य होना चाहिए ।

2.1.5.4 सामाजिक उद्देश्य :-

प्रत्येक देश अपने देश कि शिक्षा नीति बनाते समय समाज के विकास के दृष्टिकोन से शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य रखती है । क्यों कि व्यक्ति कि शिक्षा समाज की शिक्षा बन जाती है । इसलिए व्यक्ति विकास को समाज विकास का माध्यम बनाकर शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य निश्चित करना आवश्यक बन जाता है । भारत ने स्वतन्त्रता के बाद समाजवादी समाज रचना के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजकीय क्षेत्र में नये नेतृत्व का निर्माण होनेवाली शिक्षा प्रणाली का विकास किया है । समय के साथ बदलते समाज जीवन को ध्यान में रखकर देश के उज्वल भविष्य के लिए सुसंस्कृत, वैज्ञानिक दृष्टीकोन रखनेवाले परिवर्तनवादी समाज की निर्मिती करना शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य होना आवश्यक है । इसलिए सभ्य समाज निर्माण करना शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य होना चाहिए ।

2.1.5.5 शिक्षा के अन्य उद्देश्य :-

प्रत्येक देश के शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य है। प्रत्येक देश अपने विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के ध्येय, उद्देश्य निश्चिता करता है। यह उद्देश्य समय, परिवेश तथा जीवनावश्यकता के अनुसार बदलते है। परंतु सामान्यत: शिक्षा के अन्य उद्देश्य निम्न होते है -

1) बौध्दिक विकास करना।

2) व्यावसायिक कौशल्य प्राप्त करना।

3) व्यक्तिमत्व विकास करना।

4) संशोधनवृत्ती जागरूक रखते हुए संशोधन वृत्ती को बढावा देना।

5) वैज्ञानिक दृष्टिकोन निर्माण करना।

6) अपने देश की संस्कृति का जतन करना।

7) सक्षम नागरिक तयार करना।

8) राष्ट्रीय एकात्मता, धर्मनिरपेक्षता स्थापित करना।

9) समाज को साक्षर बनाते हुए शिक्षित समाज का निर्मित करना।

उपर्युक्त सभी शिक्षा के उद्देश्य है, उन्हें साध्य करने के लिए प्रत्येक देश अपनी शिक्षा प्रणाली को बनाता है। उन्हें उद्देश्यों के समन्वय से व्यक्ति को जीविकार्पोजन के लिए सक्षम बनाना, उसके ज्ञान, कौशल्य का उपयोग करते हुए अपने देश का सामाजिक, आर्थिक, राजकीय विकास करते हुए देश का भविष्य उज्वल बनना ही शिक्षा का उद्देश्य होता है।

2.1.2 भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास

किसी भी सुसंस्कृत देश के विकास का आलेख वहाँ की शिक्षा और साहित्य के माध्यम से स्पष्ट होता है। आज भारत देश की संस्कृती विश्व में श्रेष्ठ मानी जाती है ; जिसे 'आर्य' संस्कृती कहा जाता है। 'आर्य' संस्कृती का परिचय आर्यो का साहित्य 'वेद' के माध्यम से होता है। आगे चलकर 'आर्य' शब्द जातीवाचक न रहकर 'धर्म' वाचक बना दिखाई देता है। 'आर्य' धर्म के लोगों की जीवन पध्दती कि शिक्षा देनेवाला साहित्य 'वेद' रहा है। परंतु, आर्य आने से पूर्व भारत में शिक्षा व्यवस्था स्थित रही होगी। इसके

प्रमाण इ.स.1922 में श्री बॅनर्जी के मोहोंजोदोडो संस्कृती के शोध से प्राप्त होते है। स्पष्ट है की आर्यो से पूर्व भारत में शिक्षा प्रणाली स्थित थी। प्रा.एफ.डब्ल्यू. थॉमसन कहते है - ''भारत में शिक्षा, विदेशी पौधा नहीं है। संसार का कोई भी ऐसा देश नहीं है जहॉ ज्ञान के प्रति प्रेम का इतने प्राचीन समय में अविर्भाव हुआ हो या जिसने इतना चिरस्थायी और शक्तिशाली प्रभाव डाला है।'' 9

आर्य और अनार्य यह विवाद क्यों न हो परंतु, प्राप्त वैदिक शिक्षा प्रणाली के अनुसार भारत की प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली रही है। प्रा.एल.जी.देशमुख कहते है - 'वेद' विश्व का आद्य पाठयपुस्तक है, जिसे भारतीय ऋषियों ने निर्माण किया है। सबल प्रमाण से सात होता है कि वेदकाल से ही ज्ञान आत्मसात की परंपरा स्थित थी और हमारी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व में श्रेष्ठ थी।'' 10

2.1.2.1 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली :-

(इ.स.पूर्व 2500 से ई.पू.500) पूर्व वैदिक काल याने 'ऋग्वेद' काल में वाड्.मय अध्ययन को महत्व था। परंतु, वैदिक काल की शिक्षा मनुष्य जीवन ज्ञान संवर्धन के साथ - साथ 'धार्मिक' संस्कार देना मुख्य हेतू था। इसलिए वैदिक कालीन शिक्षा पध्दती 'न ज्ञान का पर्याय थी न जीविकोपार्जन का साधन बल्कि, मनुष्य का सर्वांगिण विकास करना उसका हेतू था, जिसे चार 'वेद' साहय करते थे। 1) ऋग्वेद 2) यजुर्वेद 3) सामवेद 4) अथर्ववेद इन्ह 'वेद' से शिक्षा के उद्देश्य निम्नप्रकार से दृष्टव्य है -

2.1.2.2 मोक्ष की प्राप्ति :-

वैदिक कालीन मनुष्य जीवन पर 'धर्म' का गहरा प्रभाव था, जिस कारण वैदिक शिक्षा पध्दती में 'धार्मिक' भावनाओं का विकास करना महत्वपूर्ण माना था। वैदिक धर्म के अनुसार सदाचार से जीवन व्यतित करनेवाले को 'मोक्ष' की प्राप्ती होती है। आत्मा का विकास करते हुए 'मोक्ष' की प्राप्ती करना शिक्षा का उद्देश्य था।

2.1.2.3 धार्मिक भावना का विकास :-

वैदिक काल में समाज पर सामाजिक, राजकीय, आर्थिक प्रभाव से ज्यादा 'धर्म' का प्रभाव गहरा था। क्योंकि 'धर्म' ही सामाजिक, राजकीय, आर्थिक क्षेत्र को प्रभावित करता था। इसलिए छात्रों को धार्मिक शिक्षा देना महत्वपूर्ण माना जाता था। जिसमें

प्रार्थना, व्रतवैकल्य, क्षण, उत्सव, धार्मिक और सदाचार के संस्कार करते थे । डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन गुरू के संबंध में कहते है । ‘‘जो शिष्य का आध्यात्मिक अंधकार दूर करे वह गुरू है ।’’ वैदिक शिक्षा पध्दती में धार्मिक भावना को विकसित करना शिक्षा का उद्देश्य रहा है ।

2.1.2.4 व्यक्तिमत्व का विकास करना :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली का एक उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करना भी था । जिसकी सबसे बडी जिम्मेदारी गुरू पर रहती थी । गुरू अपने ज्ञान, सत्कृती और नि:स्पृहवृत्ती से शिष्य के सामने आदर्श स्थापित करते हुए शिष्यों में आत्म - संयम, आत्म - सम्मान, आत्मविश्वास, कर्तव्य, विनम्रता, ज्ञानवृध्दी, न्यायभावना, विवके आदि का छात्रों को बोध कराया जाता था । साथ ही समय - समय पर वाद - विवाद, तर्क, शास्त्रार्थ, चर्चा एवं गोष्ठियों का आयोजन करते हुए छात्रों के व्यक्तित्व का विकास किया जाता था ।

2.1.2.5 चरित्र का निर्माण करना :-

वैदिक काल में गुरूकुल शिक्षा पध्दती चरित्र निर्माण के केंद्र थे । गुरू अपने आचार - विचार के माध्यम से सद्चरित्र के पाठ छात्रों के सामने रखते थे । सत्यनिष्ठा, कर्तव्यदक्षता, प्रामाणिकता, सेवा, त्याग, विनम्रता आदि गुणों के विकास के माध्यम से सद्चरित्र का निर्माण किया जाता था । परिणाम स्वरूप ; गुरूकुलों का जीवन अत्यंत कठोर एवं सयंत् रहता था । जिससे शीलसंवर्धन, नैतिकता और सत्यप्रियता जैसे सद्चरित्र छात्रों का निर्माण करना वैदिक शिक्षा पध्दती की विशेषता है ।

2.1.2.6 अज्ञानरूपी अंधकार नष्ट करते हुए आत्मसाक्षात्कार कराना ।

वैदिक शिक्षा पध्दती का उद्देश्य सत्यज्ञान की प्राप्ती करना है । सत्यज्ञान ‘परमात्मा’ के प्राप्ती से हो जाता है । इसलिए ‘परमात्मा’ की प्राप्ती याने ‘सत्यज्ञान’ की प्राप्ती करना ही मनुष्य को भौतिक सुखों से दूर रहना होगा । अज्ञान रूपी मनुष्य भौतिक सुख के पिछे दौडता है, उसके अज्ञान को दूर करने का काम आत्मसाक्षात्कार से हो जाता है । इसलिए आत्मसाक्षात्कार के लिए मनुष्य को अध्यात्मज्ञान की आवश्यकता है ।

आध्यात्म ज्ञान से परिचित कराते हुए शिष्य को आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से जीवन का मार्ग सफल बनाने में साहय करना वैदिक शिक्षा पध्दती का उद्देश्य रहा है।

2.1.2.7 राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार करना

वैदिक शिक्षा पध्दती में वेदों के ऋचाओं को मुखोद्गोद किया जाता था और पीढी दर पीढी अपने संस्कार समाज में आगे ले जाने का कार्य किया जाता था। संस्कारों को स्थापित करने के लिए विशेष ग्रन्यों का अध्यापन करते हुए अपने धर्म और संस्कृती की रक्षा करते हुए शिक्षा के माध्यम से उसका प्रचार - प्रसार करना शिक्षा का उद्देश्य रहता था।

2.1.2.8 नागरिक एवं सामाजिक दायित्वों के संस्कार :-

गुरूकुल में ज्ञान, संस्कार, व्यक्तिमत्व विकास के साथ - साथ देश की उन्नती के लिए अच्छे नागरिक तयार करना, सामाजिक, राष्ट्रीय भावना का निर्माण करना यह भी हेतू रहता था। परिणामस्वरूप, ब्रम्हचर्य का कठोर पालन करते हुए परिवार, समाज, देश के प्रति त्याग, सेवा, दायित्व का बोध करा देने के लिए गुरूकूल में गौ - सेवा, गुरू - सेवा, पितृ - सेवा, समाजसेवा, देशसेवा आदि कार्यक्रम दिनचर्या में रहते थे। जिसके माध्यम से नागरिकत्व का विकास होता था।

2.1.2.9 व्यावसायिक कुशलता में वृध्दि करना :-

एक सदचरित्र व्यक्तित्व और कर्तव्यदक्ष नागरिक बनाने के साथ - साथ गुरूकूल में छात्रों को अपने जीवन को सफल बनाने के लिए जीविकार्पोजन के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता था। वह दुसरों की सेवा करना धर्म मानते हुए उसके बदले प्राप्त वस्तुओं से जीवनयापन करते थे। इस तरह व्यावसायिक कुशलता को प्राप्त करा देना वैदिक कालीन शिक्षा पध्दती का उद्देश्य रहा था।

2.1.3 वैदिक शिक्षा पध्दती के दोष :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली में अच्छाइयों के साथ - साथ कुछ दोष भी दिखाई देते है, वो निम्न प्रकार से है -

2.1.3.1 अतिधार्मिक प्रभाव :-

वैदिक कालीन शिक्षा पर अतिधार्मिक प्रभाव था बल्कि, 'धर्म' की रक्षा करना शिक्षा का उद्देश्य माना गया था। परिणाम स्वरूप;छात्र के सांसारिक जीवन की सफलता के प्रयत्न नही होते पारिवारिक कतृत्व की तरफ ज्यादा ध्यान दिखाई नही देता है।

2.1.3.2 शूद्रो को शिक्षा से वंचित रखना :-

वैदिक काल में वर्णव्यवस्था का कठोरता से पालन होता था। परिणामस्वरूप; शुद्र माने गये समाज को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखते हुए शुद्रों पर अन्याय किया गया।

2.1.3.3 गुरू को अनन्यसाधारण महत्व :-

वैदिक शिक्षा गुरूकूलों मे दि जाती थी, गुरू का वाक्य ब्रहमवाक्य माना जाता था। गुरूको अनन्य साधारण महत्व रहता था।

2.1.3.4 स्त्री को शिक्षा से दूर रखा था :-

प्राचीन काल में स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। परंतु, बालकों की तरह बालिकाओं के लिए गुरूकूल नही थे। स्त्री शिक्षा की उपेक्षा होती रही और आगे चलकर उत्तरवैदिक काल में स्त्री शिक्षा के अधिकार समाप्त किये गये।

2.1.3.5 शिक्षा का माध्यम 'संस्कृत' के कारण जन - साधारण शिक्षा से दूर रहा :-

वैदिक शिक्षा का माध्यम 'संस्कृत' भाषा थी और संस्कृत पढने का अधिकार उच्चवर्णिय ब्राहमणों की ही था। परिणामस्वरूप ; जन - साधारण अपने आप शिक्षा से दूर होता चला गया।

2.1.3.6 वैज्ञानिक दृष्टिकोन का अभाव :-

धार्मिकता को महत्व देनेवाली वैदिक शिक्षा प्रणाली में यज्ञ, मंत्र - तंत्र को अनन्यसाधारण महत्व था। जिससे गणित, भौतिक, विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल आदि विषयों का अध्ययन नही होता था।

2.1.3.7 विचार स्वातं™य का अभाव :-

'धर्म' पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के कारण धर्म का जीवन पर गहरा प्रभाव था। धर्मशालों में लिखी हर बात को ईश्वर प्रमाण मानकर उसका पालन करना अनिवार्य था। व्यक्ति विचार स्वातं™य में बाधक इस शिक्षा व्यवस्था ने समाज विकास को खण्डीत किया

दिखाई देता है। धार्मिक शिक्षा के प्रभाव के कारण कर्मकाण्ड, अंधश्रध्दा, तंत्र - मंत्र, यज्ञ का प्रभाव प्रबल होकर रूढिवादी और संकिर्ण समाज की निर्मिती हो गई थी।

2.1.3.8 हस्तकलाओं की उपेक्षा :-

वैदिक शिक्षा में बौध्दिक कर्म, श्रेष्ठ कर्म माना जाता था। हस्तकला, कारगिरों को प्रश्रय नही मिला, कारगिरी, चित्रकला, नृत्य स्त्रियों और शुद्रो के काम माने गये थे, जिससे हस्तकलाओं का विकास नहीं हो पाया।

2.1.3.9 सांसारिक जीवन की उपेक्षा :-

'शिक्षा' का उद्देश्य 'साक्षर' बनना नही तो उसे जीवन व्यवहार के लिए तैयार करना होना चाहिए। परंतु, वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में लौकिक पक्ष कि अपेक्षा आध्यात्मिक पक्ष को महत्व देने के कारण वैदिक कालीन मनुष्य संसार एवं सांसारिक जीवन को असार मानकर 'मोक्ष' प्राप्ती ही जीवन का यथार्थ मानते हुए जीवनानुभव के प्रति उदासीन रहने लगा।

2.1.3.10 शिक्षा में सह - सम्बन्ध नहीं :-

वैदिक कालीन शिक्षा पध्दती में एक विषय का दूसरे विषय से सह - संबंध नही रहता था। प्रत्येक विषय को दूसरे विषय से अलग करके पढाया जाता था। स्त्री शिक्षा, जन - साधारण की शिक्षा, जन - साधारणों की लोक भाषा की तरफ दुर्लक्ष किया जाता था। इस तरह समाज के तहतक शिक्षा पहुँच नही पा रही थी और विशिष्ट समाज की उन्नती वैदिक शिक्षा पध्दती का दोष है।

इस तरह वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में कई दोष दिखाई देते है। 'धर्म' प्रणित शिक्षा पर उच्चवर्णियों के प्रभाव के विरूध्द आगे चलकर बौध्द काल में जन - साधारण शिक्षा को महत्व प्राप्त हुआ दिखाई देता है। वैदिक कालीन शिक्षा पध्दती के दोषों के बारे में डॉ.एफ.ई.केई कहते है - ''प्राचीन शिक्षा में अनेक दोष थे। इस शिक्षा को नवीन गति प्रदान करने और रूपान्तरित करने के लिए किसी प्रकार के नव - जीवन की आवश्यकता थी।'' 12

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के कई गुण - दोषों के होते हुए भी, देश के संस्कृति निर्माण में उसका अनन्यसाधारण महत्व था। आज के आधुनिक युग में उसका

पुनरूत्थान सक्षम युवा निर्मिती के लिए आवश्यक है । श्री लक्ष्मणस्वामी मुदलियार ने कहा है। ''हम भारतवासियों को अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति को पहचानता चाहिए और भविष्य में आनेवाली पीढियों को उसकी वास्तविक आत्मा को स्वीकार करना चाहिये ।'' 13

2.2 बौध्द कालीन शिक्षा प्रणाली :-

प्राचीन भारत में क्रांती की लहर दौडाने वाले बौध्द धर्म का उदय इ.पू.6 शताब्दी में हुआ। वैदिक काल में स्थित वर्णव्यवस्था के कारण भारत देश में जातिव्यवस्था, कर्मकांड, यज्ञयाग, रूढि - परंपराओं का प्रचलन समाज के आमजनता को न्याय नहीं दे पा रहा था । बहुजनवर्ग मानवाधिकार के लिए छटपटा रहा था । उसी समय सिध्दार्थ गौतम ने मानवतावादी बौध्द धर्म की स्थापना की ओर जन - साधारण बौध्द धर्म की ओर आकर्षित हुआ । जीवन में 'दु:ख' का कारण 'तृष्णा' है, उसपर विजय पाने के लिए सम्यक मार्ग याने आर्य सत्य बौध्द धर्म ने समाज को प्रदान किये। बौध शिक्षा के बारे में आर.ए.शर्मा कहते है । ''शिक्षा दु:खो को दूर करने का अष्टांग मार्ग प्रदान करती है । जब यह बोध अथवा अनुभूती होती है इससे मुक्ति पाने के लिए प्रयास किया जाता है, वही शिक्षा कहलाती है ।'' 14 इससे स्पष्ट है की जीवन के दु:खो से मुक्ति का मार्ग दिखानेवाली शिक्षा बौध्दधर्म की शिक्षा भी इस विचार से बौध्द धर्म तेजी से पुरे विश्व में प्रसारित हुआ दिखाई देता है।

महात्मा बुध्द ने अपने धर्म के विचार जन - साधारण की लोक भाषा में प्रस्तुत करते हुए समता, प्रेम, करूणा, दु:ख से मुक्ति इन बातों को धर्म में प्रमुखत: से महत्व दिया, परिणामस्वरूप; जन-साधारण बौध्द धर्म की तरफ आकर्षित हुए । प्रज्ञा, शील, करूणा और निर्वाण प्राप्ती इन बातों को बौध्द धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रहा । इन्हे प्राप्त करना ही बौध्द शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य रहे दिखाई देते है जो हमे बौध्द धर्म के अष्टांग मार्ग में प्राप्त होते है इसलिए अष्टांग मार्ग को देखना आवश्यक है।

''आर.ए.शर्मा के 'भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास' में अष्टांग मार्ग निम्नप्रकार से दिये है।

2.2.1 बौध्द धर्म के अष्टांग मार्ग

2.2.1.1 सम्यक दृष्टि :-

इसके आधार पर दु:खो के यथार्थ स्वरूप की पहचान की जाती है, जिससे अविद्या, अज्ञान को दूर किया जाता है और दु:खों के कारणों का भी बोध होता है।

2.2.1.2 सम्यक् संकल्प :-

इसके आधार पर मानव अहिंसा, त्याग, दया, तथा जीवन में सद्गुणों का अनुसरण करने का निश्चय करता है तथा वह जीवन में शुभ तथा पवित्र विचारों का अभ्यास करता है।

2.2.1.3 सम्यक् वाक् :-

इसके अन्तर्गत अप्रिय, अशुभ, मिथ्या, निन्दनीय शब्दों का प्रयोग न करना, जिससे दूसरों को कष्ट हो। इसमें शब्दों के उपयोग पर नियन्त्रण रखना होता है।

2.2.1.4 सम्यक् कर्मान्त :-

इसके अन्तर्गत अच्छे गुणों - अहिंसा, सत्य, संयम तथा शीलता आदि गुणों का विकास करना और इनके व्यावहारिक उपयोग को सम्मिलित किया जाता है।

2.2.1.5 सम्यक् आजीविका :-

इसके अन्तर्गत उचित साधनों एवं उपायों से जीविकोपार्जन करना और अनुचित मार्ग को न अपनाकर जीविका निर्वाह करना स्वीकार किया गया है। इससे शुध्द प्रवृत्तियों का विकास होता है।

2.2.1.6 सम्यक् व्यायाम :-

इसके आधार पर पुरूषार्थ का पालन करना कुशल धर्मों का अनुसरण करना, बुरे विचारों से दूर रहना और मन में शुभ धारणायें बनाये रखना।

2.2.1.7 सम्यक् समाधि :-

इसके आधार पर चित् का एकाग्र करना, क्रोध, आलस्य आदि दुर्गुणों से दूर रहना, जिससे दु:खों का पूर्णअन्त होता है।

इनका अनुसरण करने से व्यक्तिपूर्ण शिक्षित, सभ्य एवं अनुशासित बनते है। इसे निर्वाण की अवस्था कहा गया है।'' 15

शिष्यों के सद्‌गुणों का विकास करना, ज्ञानार्जन करना वैदिक और बौध्द शिक्षा प्रणाली का समान उद्‌देश्य दिखाई देता है। परंतु, बौध्द धर्म ने वर्णव्यवस्था को लांघकर जन - साधारण के लिए शिक्षा का मार्ग खुला कर दिया और उच्च-नीचता को नकारते हुए सब मनुष्यजाती को सम्यक् मार्ग पर चलने का उपदेश 'पाली' भाषा में देते हुए बहुजन समाज को बौध्द शिक्षा प्रणाली की तरफ आकृष्ट हुआ दिखाई देता है।

2.2.2 बौध्द शिक्षा प्रणाली दो स्तर :- १) पबज्जा २) उपसंपदा

2.2.2.1 पबज्जा (प्राथमिक शिक्षा) :-

'पबज्जा' विधी के उपरान्त 6 वर्ष की आयु में बालक को मठों में शिक्षा दी जाती थी जो पूर्णतया धार्मिक रहती थी। 'पबज्जा' विधी के बाद शिक्षा प्राप्त करने आये शिष्यों को 'श्रमण' कहा जाता था। किसी भी जाति के बालक को मठों में शिक्षा ग्रहण करने से पूर्व 'त्रिशरण' प्रणों की शपथ लेनी पडती थी। श्रमण जीवन में अहिंसा और सत्य तत्वों का कठोर पालन करते हुए मद्य, स्त्री सहवास और मांस भक्षण वर्ज्य करते हुए 'ब्रह्मचर्य' का पालन करते हुए गुरू के उपदेशों का पालन आवश्यक था। 'श्रमण' जीवन की अवधि बीस वर्ष तक होती थी।

2.2.2.2 उपसंपदा 'उच्चशिक्षा' :-

'श्रमण' शिक्षा ग्रहण के बाद शिष्य को गृहास्थाश्रम में प्रवेश लेनी की अनुमती थी। परंतु, जिन्हें ब्रहमचर्य का पालन करने की इच्छा होती उन्हें 'उपसंपदा' विधी ग्रहण करने के बाद भिक्षू संघ में प्रवेश प्राप्त होता। 'श्रमण' अवस्था में भी अपनी बौध्दिकता के आधार पर छोटी आयु में भिक्षु बनने की अनुमूती थी। बौध्द शिक्षा में भी धार्मिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान था। अलग - अलग मठों में अलग - अलग विषयों का ज्ञान दिया जाता था। बौध्द शिक्षा की प्रशंसा करते हुए डॉ. ए.एस.आलतेकर कहते है। ''मठों ने उच्चशिक्षा में अपनी दक्षता से कोरिया, चीन, तिब्बत और जावा जैसे सुदूर देशों के छात्रों को आकर्षित करके भारत को अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिध्दी में वृध्दी की है।

जन - साधारण को शिक्षा का अधिकार प्रदान करनेवाली बौध्द शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ निम्न प्रकार से थी।

2.2.3 'संघ' बौध्द शिक्षा के केंद्र :-

वैदिक शिक्षा पध्दती के 'गुरूकुल' पध्दती के समांतर बौध्द शिक्षा प्रणाली में 'संघ' पध्दती थी। जिनके केंद्र मठ और विहार थे, जिनमें सभी जाति के छात्र शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। बौध्द शिक्षा केंद्र नालंदा विद्यापीठ के संबंध प्रसिध्द चीनी यात्री हयुएनत्संग ने कहा है। ''नालंदा विद्यापीठ में सुबह से रात तक सब विद्वान बौध्दिक चर्चा में व्यस्त रहते थे, युवा और वृध्द एक दुसरे को साहय करते थे। बौध्द केंद्रो में गुलाम, गुन्हेगार, रोगी, ऋणी, सैनिक इन्हें प्रवेश नही दिया जाता था।'' 17

2.2.3.1 'बौध्दधर्म' का प्रचार - प्रसार :-

वैदिक शिक्षा पध्दती का मुख्य उद्देश्य 'मोक्ष' प्राप्ती था, उसी प्रकार बौध्द धर्म का अंतिम ध्येय 'निर्वाण' प्राप्ती था। 'निर्वाण' प्राप्ती के लिए अष्टांग मार्ग का पालन करना 'श्रमण' और 'भिक्षु' के लए अनिवार्य था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, काशी, ओडनतापुरी, मिथिला, नाडिआ, जगदाला आदी शिक्षा केंद्र प्रमुख थे। इन संस्थागत केंद्रो में छात्र के निवास, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा आदि की सुविधा प्राप्त करा दि जाती थी।

2.2.3.2 प्रवेश एवं अवधी :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली की तरह बौध्द शिक्षा पध्दती में भी विद्या आरम्भ करने की आयु 8 वर्ष की थी। छात्र 12 वर्षो तक पढ सकता था। कुल अध्ययन का 22 वर्षो का रहता था।

2.2.3.3 बहुसांख्यिक, संयुक्त शिक्षा और विशाल शिक्षा भवन :-

वैदिक शिक्षा के 'गुरूकुलों' में छात्रों की संख्या 15 ते 20 तक रहती थी। परंतु, बौध्द शिक्षा केंद्रो में छात्रों की संख्या अधिक मात्रा में रहती थी। मठ और विहारों में असंख्य उपाध्याय हजारों छात्रों को पढाते थे। इन्ह विशाल शिक्षा केंद्रो का उदाहरण नालंदा विश्वद्यालय से ज्ञात होता है। ''यह लगभग एक मील लम्बा और आधा मिल चौडा था। एवं चहार दिवारी से घिरा हुआ था। इसमें 8 बडे सभा - भवन और 3,000 अध्ययन कक्ष थे। इसका विशाल पुस्तकालय 9 मंजिल का था। इसमें 10 से अधिक सरोवर थे ; जिनमें छात्र जल - क्रीडा करते थे। जब यह अपनी पराकाष्ठा पर था, तब इसमें लगभग

1,500 शिक्षक एवं 10,000 छात्र थे और प्रतिदिन 100 भाषण होते थे। इसमें चीन, जावा, वर्मा आदि सुदूर देशों के छात्र अध्ययन करने आते थे । इस प्रकार इसने अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का रूप ग्रहण कर लिया।'' 18 इससे स्पष्ट होता है की बौध्द शिक्षा केंद्र स्वायत्त शिक्षा केंद्र थे, इसके विकास की ओर ध्यान देते हुए बौध्द शिक्षा केंद्रों में प्रजान्तत्रिय संगठन के लिए संघवृत्ती साहय करती थी।

2.2.3.4 व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास :-

बौध्द शिक्षा पध्दती में छात्र के सर्वांगिण विकास को महत्वपूर्ण स्थान था। जिसमें गुरू अंहम् भूमिका निभाते थे। गुरू के आचरण से छात्र के आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण होता था। छात्र के शारिरिक, बौध्दिक, मानसिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास की ओर ध्यान दिया जाता था। विचारों की शुध्दता, ब्रह्मचर्य पालन के साथ कठोर परिश्रम, तपस्या तथा साधना से सद्चरित्र निर्माण होता था।

2.2.3.5 नैतिक आचरण की महत्ता :-

बौध्द शिक्षा प्रणाली में नैतिक आचरण का कडा पालन किया जाता था । गुरू अष्टांग मार्ग का कठोरता से पालन करते हुए छात्र के सामने नैतिकता का आदर्श रखते थे। महात्मा बुध्द ने अपने उपदेशों में शुध्द आचरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। डॉ.के. पी.माथुर के मतानूसार ''बौध्द काल में भिक्षाटन, भोजन, वस्त्र, स्नान तथा अनुशासन आदि के लिए नियम हुआ करते थे। '' 19

2.2.3.6 स्त्री शिक्षा :-

वैदिक काल में स्त्री शिक्षा की अवहेलना की गई थी परंतु, बौध्द काल में स्त्री शिक्षा को मान्यता प्रदान की गई। बौध्द काल में स्त्री शिक्षा के द्वार खुले जरूर परंतु वह उच्चवर्ग के स्त्रियों तक ही सीमित रहे। डॉ.आलतेकर कहते है - ''स्त्रियों के संघ में प्रवेश करने की आज्ञा ने नारी शिक्षा को विशेषत: समाज के कुलीन एवं व्यावसायिक वर्गों की नारियों की शिक्षा को अधिक प्रोत्साहन दिया।'' 20

2.2.3.7 सामाजिक शिक्षा के साथ - साथ व्यावहारिक शिक्षा को महत्व :-

समाज में एक नागरिक बनकर रहने के लिए सामाजिक कर्तव्यों को सिखाया जाता था। अष्टांग मार्ग का स्विकार कर सम्यक् जीवन मार्ग की दीक्षा दी जाती थी।

महात्मा बुध्द के अदेशानूसार - ‘‘हे भिक्षुओं, दु:ख से बचानेवाला यह मध्यम मार्ग अवश्य ही जान लेना चाहिए। न तो सांसारिक भोग विलास में जीवन लगाना चाहिए तथा न शरीर को अधिक कष्ट देकर तपस्या करनी चाहिए, ये दोनों मार्ग दु:खमय, अनार्थ और अनर्थ कर है। 21 इस तरह सम्यक जीवन को स्विकार करने का उपदेश बौध्द शिक्षा देती थी।

भावी जीवन के लिए तैयार करते समय व्यावहारिक शिक्षा को भी बौध्द शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान था। कताई, सिलाई, बुनाई, चित्रकला, भवननिर्माण कला, आखेट, भविष्यवाणी, संगीत, चिकित्सा, इन्द्रजाल, हस्तज्ञान आदि की शिक्षा दी जाती थी, जिसका उद्देश्य जीविकोर्पोजन था।

इस तरह बौध्द शिक्षा की उपर्युक्त विशेषताओं के कारण उसने तत्कालीन समाज में अपना अलग स्थान निर्माण किया था।

2.2.4 बौध्द शिक्षा प्रणाली के दोष :-

1. बौध्दकालीन शिक्षा केंद्र प्रजातन्त्रप्रणाली पर आधारित थे, परंतु उन्हें राजाश्रय प्राप्त होने पर उसमें स्वेच्छार पनपने लगा और जनतन्त्र की भावना का अनादार होने लगा।

2. अहिंसा और शक्ती को बौध्द धर्म में महत्वपूर्ण स्थान होने कारण लौकिक शिक्षा का अभाव रहा, जिससे राष्ट्र कमजोर होते गये और देश - विदेशी आक्रमणकारियों का मुकाबला नही कर पाये।

3. बौध्द धर्म की शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देने से छात्र सांसारिक जीवन की शिक्षा से दूर रहते थे।

4. भिक्षाटन और आय के अनिश्चित स्त्रोत, कठारे नियम थे।

5. सामान्य स्त्री शिक्षा की उपेक्षा की गई।

6. बौध्द शिक्षा केंद्रों को राजाश्रय प्राप्त होने के कारण आगे चलकर बौध्द मठो का पतन होता गया। और अनाचार में प्रवेश कर लिया।

बौध्दकालीन शिक्षा जनसाधारण के लिए मुक्त और जनभाषा में रहने के कारण उच्चशिक्षा को प्रोत्साहन मिला शिक्षा केंद्रों की निर्मिती होती चली गई, नालंदा, तक्षशिला,विक्रमशील; बल्लभी, जंगदली आदि विश्वविद्यालय प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण

शिक्षा केंद्र रहे, जिनका महत्व अन्तर्राष्ट्रीय था। बौध्द शिक्षा का सुंदर वर्णन चीनी प्रवासी (राजदूत) फाहयान इत्सिंग तथा हवेनसांग आदि ने अपनों ग्रंथो में किया है।

इस तरह बौध्दकालीन शिक्षा प्रणाली वैदिक शिक्षा प्रणाली से साम्य रखते हुए भी जनसाधारण को शिक्षा में प्रवेश देने के कारण उसका प्रचार और प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होता रहा जिसके माध्यम से मानवता का संदेश पूरे विश्व में फैलाने में भारतभूमी के बौध्दधर्म शिक्षा प्रणाली का महत्व अनन्यसाधारण ही रहेगा।

2.3 मुस्लिम शिक्षा प्रणाली :-

सन 1192 से 1708 तक भारत में मुस्लीम शासन रहा। पृथ्वीराज चौहान का पराजय करके महंमद घोरी ने उत्तर भारत में मुस्लीम शासन की नींव डाल दी। भारत पर गुलाम, तुघलक, सय्यद, लोदी और मुघल मुस्लिम घराणों का शासन चला। इन शासकों ने 'ईस्लामधर्म' के प्रचार - प्रसार के हेतू यहाँ के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजकीय, शैक्षणिक स्थिती में काफी बदलाव लाया। वैदिक और बौध्द संस्कृति को तहस - नहस करते हुए यहाँ के शैक्षणिक केंद्र मंदिर, मठ, विहारों को ध्वस्त करते हुए गांव - गांव मे मकतबों का निर्माण करते हुए ईस्लाम धर्म के प्रसार - प्रचार के शिक्षा केंद्र निर्माण किये। धर्मांधता, हिंदू द्वेष, आक्रमता और संकुचित प्रवृत्ति के कारण यहाँ के सांस्कृतिक और शैक्षणिक विचारों का द्वेष और मुस्लीम संस्कृति और शिक्षा का प्रचार - प्रसार मुस्लीम शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश था, जिसे 'मध्यकाल की शिक्षा' के नाम से भी जाना जाता है।

2.3.1 मुस्लीम शिक्षा पध्दती के उद्देश्य :-

वैदिक और बौध्द शिक्षा प्रणाली की तरह मुस्लीम शिक्षा का उद्देश्य भी धर्म कि महत्ता प्रदान करना था परंतु इसके साथ - साथ निम्न उद्देश्य भी दृष्टव्य है।

2.3.1.1 'इस्लाम' का प्रचार - प्रसार :-

भारत में मुस्लीम शासन स्थित होने पर शासकों ने अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपरा, रहन, सहन और भाषा का प्रचार - प्रसार मुस्लीम सिध्दान्तों, सामाजिक प्रथाओं और कानून के माध्यम से किया। 'इस्लाम' का प्रचार - प्रसार करना मुस्लिम शासक प्रमुख कर्तव्य मानते थे।

2.3.1.2 धर्म का ज्ञान करना :-

इस्लामधर्म के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद ज्ञान प्राप्ति को महत्वपूर्ण मानते थे, उन्होंने ज्ञानप्राप्ती का सन्देश दिया था। ज्ञानप्राप्ती के साथ - साथ इस्लामधर्म का ज्ञान प्रदान करना और धर्म सिध्दान्त, आचार - विचारों को ग्रहण करना इस्लाम शिक्षा पध्दती का मुख्य उद्देश्य था।

2.3.1.3 नैतिक मूल्य एवं पवित्रता की भावना को सदृढ करना :-

मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में इस्लामी, नैतिकता के विकास पर बल दिया था, छात्र को मकतब और मदरसों में नैतिकता के पाठ देते हुए सर्वांगिण विकास और पवित्रता को महत्व दिया जाता था। सद्चरित्र के निर्माण पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था।

2.3.1.4 राजनीतिक सत्ता की लालसा :-

अपनी राजसत्ता दृढ करने के लिए इस्लाम का प्रचार - प्रसार करना राजकर्ताओं ने प्रमुख उद्देश रखा। साथ ही शिक्षा द्वारा मनुष्यों को उपयोगी सामग्री के उत्पादन तथा भोग की शिक्षा प्रदान की गई। परिणामस्वरूप, भोगवादी प्रवृत्ती ने समाज में बल पकड लिया था।

2.3.1.5 कलाओं को महत्वपूर्ण स्थान :-

इस्लाम शिक्षा प्रणाली में कलाओं को राजाश्रय प्राप्त हूआ दिखाई देता है। वे कला और शिल्प प्रेमी थे, उन्होंने विविध कलाओं के शिक्षापर बल दिया साथ ही विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जिससे देश का आर्थिक विकास हो गया।

2.3.1.6 दो स्तरों में पाठयक्रम :-

प्राथमिक स्तर की शिक्षा पध्दती में नैतिक शिक्षा मुख्य उद्देश रहता था। बच्चों को पढना,लिखना,पत्रलेखन, बातचीत, अंकगणित, कुराण, शरीफ की आयतें रटाई जाती था। साथ ही फकीरों की जीवनियॉं पढाते हुए चारित्रिक विकास किया जाता था।

उच्चस्तर की शिक्षा में अरबी एवं फारसी भाषा, ज्ञान, साहित्य, अंकगणित, इतिहास, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, भूगोल, ज्योतिषशास्त्र, कानून, युनानी चिकित्सा, कला, व्यवसायों आदि कि शिक्षा प्रदान की जाती थी। इस्लामी साहित्य, इतिहास, सूफी साहित्य, इस्लामी कानून, कुराण, शरीफ आदि का पाठयक्रम में स्थान रहता था। साथ

ही वैदिक शिक्षा का परिचय करा दिया जाता था। परंतु, इस्लामधर्म की शिक्षा के प्रचार - प्रसार हेतू हिन्दू पध्दती के प्रति विरोध की भावना ही रहती थी।

2.3.2 मुस्लिम शिक्षा प्रणाली की विशेषता :-

बाहर से आये मुस्लिम शासक वर्ग ने इस्लाम धर्म का प्रचार - प्रसार शिक्षा का मुख्य हेतू रखा साथ ही भारतीय शिक्षाप्रणाली में बदलाव भी लाये जिसकी विशेषताएँ निम्नलिखित है।

1. हजरत महमंद के आदेशानूसार जीवन में ज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान।
2. प्राथमिक एवं उच्चशिक्षा की अलग - अलग व्यवस्था।
3. राजसत्ता शिक्षा का दायित्व लेती थी।
4. शिक्षा नि:शुल्क एवं छात्रवृत्तियों की शुरूआत।
5. मॉनीटर शिक्षा पध्दती।
6. कला - कौशल्य एवं व्यावसायिक शिक्षा को महत्व।
7. साहित्य रचना एवं इतिहास लेखन को बढावा।

2.3.3 मुस्लीम शिक्षा प्रणाली के दोष :-

1. भारतीय वैदिक एवं बौध्द शिक्षा प्रणाली एवं साहित्य, दर्शन, भाषा की अवहेलना।
2. तत्कालीन शिक्षा पध्दतीपर प्रहार करते हुए इस्लामधर्म का प्रसार।
3. जनशिक्षा की अवहेलना, दमनात्मक अनुशासन.
4. रटने पर बल।
5. धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का संकुचित रूप।
6. स्त्री शिक्षा की अवहेलना।

इस तरह इस्लाम धर्म का प्रचार - प्रसार करना इस्लाम शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य रहने के कारण धार्मिक नियमों का कठोरता से पालन होने के कारण यह शिक्षा प्रणाली बंदिस्त होती चली गई। युसूफ हुसैन कहते है। ‘‘मध्यकालीन भारत में प्रचलित शिक्षा में गतीशीलता (Dynanism) का अभाव और बहुत रूढीवादी तथा असर्जनात्मक थी।’’ 22

2.4 ब्रिटीश कालीन शिक्षा प्रणाली :-

सन 1600 में अंग्रेजों ने भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की आगे मुस्लीम शासन को ध्वस्त करते हुए अपना साम्राज्य विस्तार किया। उसे चलाने के लिये भारतीय समाज को शिक्षित करना उनकी आवश्यकता बनी। एन.एन.बसु कहते है - ''पाश्चात्य विद्वानों का मतहै कि भारत में स्थित देशी शिक्षा - व्यवस्था का कोई महत्व नहीं था और ब्रिटीश अधिकारी उसको समाप्त करने में पूर्ण रूप से ठीक थे।'' 23 ईस्ट इण्डिया ने भारतीय शिक्षा की तरफ ध्यान नही दिया था। परंतु, साम्राज्य विस्तार के हेतू ईस्ट इण्डिया कम्पनी ब्रिटीश पार्लियामेन्ट के हाथ में चली जाने पर भारतीय शिक्षा नीति पर विचार होने लगा। इससे पूर्व भारत में ईसाई धर्म प्रसार हेतू अनेक विदेशी मिशनरियों ने शिक्षा प्रचार - प्रसार का कार्य आरंभ किया था। इ.स.1577 में मुम्बई के निकट बान्द्रा में ईसाई धर्म प्रचारक सेंट फ्रांसिस जेवियर ने 'सेण्ट एनी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। मुम्बई, गोवा, दीव, दमन, चटगॉव तथा हुगली में उन्होंने मिशनरियों के माध्यम से शिक्षा केंद्रो की स्थापना की। 1575 में उच्चशिक्षा के लिए जेसुयर कॉलेज कि स्थापना की जहॉ ईसाई धर्म, लैटिन, तर्कशास्त्र और व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी। इ.स.1700 में पुर्तुगालियों का पतन होने पर केरल, गोवा, दीव-दमन आदी तक उनकी शिक्षा के केंद्र रहे।

पुर्तूगालों के साथ - साथ भारत में फ्रांसिसियों, डचों ने भी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। फ्रांसिसियो ने अपने शिक्षा केंद्र पांडिचेरी, आदी, यनाम, कारीकल तथा चन्द्रनगर में प्राथमिक स्कूल खोले थे जिससे सभी जाति, सम्प्रदाय के छात्रों को प्रवेश था, ईसाई धर्म का प्रसार - प्रचार इनका मुख्य उद्देश्य था। डच अधिकारी डेनों ने तमिलनाडू में फोर्ट सेन्ट, डेविड, त्रिचनापल्ली और तंजौर में प्राथमिक शिक्षा केंद्र खोले। सन 1716 में ट्रानक्यूबर में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना करते हुए बाइबल का अनुवाद करके इसाईधर्म के प्रचार प्रसार को बढावा दिया।

2.4.1 1813 का आज्ञापत्र :-

भारत में प्रशासन हेतू नयी शिक्षा प्रणाली का और अंग्रेजी भाषा के प्रचार - प्रसार का महत्व समजते हुए ब्रिटीश पार्लियामेण्ट में भारत के शिक्षा नीति संबंधी विचार शुरू

हुए और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आज्ञापत्र प्रति 20 वर्ष के उपरान्त पुनरावर्तन करने की बात रखी गयी । सन 1813 के आज्ञापत्र में भारत के शिक्षा हेतू निर्णय लेते हुए दो धाराओं को संशोधित करके जोडा गया।

सन 1813 के आज्ञापत्र में प्रमुख दो धाराओं को संशोधित करके जोडा गया -

1) भारत में धर्म प्रचार करने की मिशनरियों को आज्ञा प्रदान की जाए ।

2) ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रमुख कर्तव्य भारत में शिक्षा प्रचार को माना जाये ।

आज्ञापत्र 1813 की धारा - 43 के अनुसार ‘‘प्रतिवर्ष कम से कम एक लाख रू भारतीय साहित्य के पुनर्रूत्थान हेतू भारतीय विद्वानों को प्रोत्साहित करने हेतू और भारत में अंग्रजी प्रदेशवासियों के ज्ञान - विज्ञान की प्रगति करने हेतू व्यय किए जायेंगे ।’’

इस आज्ञापत्र के माध्यम से कम्पनी के तीन मुख्य उद्देश्य थे -

1) भारत के ज्ञान - विज्ञान की सुरक्षा करना ।

2) विज्ञान के प्रसार की भारत में व्यवस्था करना ।

3) भारतीय विद्वानों का सम्मान करना ।

इस आज्ञापत्र के बारे में नुरूल्ला व नायक कहते है - ‘‘1813 के आज्ञापत्र ने भारत की शिक्षा के इतिहास को एक नवीन दिशा में मोडा ।’’ 24

1813 के इस आज्ञापत्र के कारण भारत में आधुनिक शिक्षा कि नींव डाली गई, आगे चलकर भारत में शिक्षा का माध्यम कौनसा होना चाहिए, प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्व उसका शिक्षा में स्थान, मिशनरियों का ईसाई धर्म के प्रसार हेतू अंग्रेजी भाषा माध्यम को महत्व आदि विषयोंपर वाद - विवाद होते हुए 20 वर्ष तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपनी शिक्षा नीति निश्चित नही कर पाई और 1833 में ब्रिटीश पार्लियामेण्ट ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को नया आज्ञापत्र 1833 (Charter Act 1833) जारी किया । प्राच्च - पाश्चात्य वादियों के विवाद के समय ही 10 जून 1834 में गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के प्रथम विधी सदस्य के रूप में लॉर्ड टी.बी.मैकाले भारत आये, उन्हें जनशिक्षा समिती का अध्यक्ष बनाया गया और 1813 की धारा - 43 पर परामर्श देने के

लिए कहा गया। मैकाले ने सूक्ष्म अध्ययन के बाद अपना विवरण पत्र लॉर्ड बैंटिक के पास 2 फरवरी 1835 को भेज दिया, जिसमें निम्न बातों को महत्वपूर्ण स्थान था।

2.4.2 मैकाले का विवरण पत्र (1835)

1. एक लाख रूपये धनराशि शिक्षा के संवर्धन हेतू किस प्रकार से व्यय करनी है, इस सम्बन्ध में गवर्नर जनरल पूर्ण स्वतंत्र है।
2. 'साहित्य' शब्द के अंतर्गत अरबी - फारसी तथा संस्कृत के साथ - साथ अंग्रजी साहित्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।
3. भारतियों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार रखा साथ ही अंग्रजी भाषा में भी भारतीय शिक्षा ग्रहण करे इसलिए मैकेले आग्रही थे।
4. मुस्लीम मौलवी एवं संस्कृत के पंडितों के साथ - साथ अंग्रेजी विद्वानों को भी भारतीय विद्वानों में महत्वपूर्ण स्थान हो।
5. पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में ही हो।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट होता की, मैकाले को भारत में अंग्रेजी भाषा में शिक्षा का प्रचार - प्रसार करना था। अंग्रेजी के विषय में मैकाले का कहना था। ''भारत में अंग्रेजी सत्ताधारियों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है । यह सरकारी पदों पर बैठे उच्च वर्ग के भारतियों द्वारा बोली जाती है। यह समस्त पूर्वी क्षेत्रो में व्यापार की भाषा बननेवाली है। अंग्रेजी भाषा हमारी भारतीय प्रजा के लिए सर्वाधिक उपयोगी है।'' 25

मैकाले ने भारतीय साहित्य को स्विकारते हुए शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान को स्थान देते हुए अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा को महत्व देते हुए पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार - प्रसार करना अपना उद्देश रखा था।

2.4.3 मैकाले कि भारतीय शिक्षा को देन :-

भारत में शासन चलाते समय भारतीय जनता का साहय हो इस हेतू से मैकाले ने अपने विवरण पत्र में शिक्षा - नीति का आयोजन किया था। जिसमें पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान और अंग्रेजी भाषा को महत्वपूर्ण माना था, जिसका फायदा आगे चलकर भारतवासियों को वरदान बना दिखाई देता है जिससे निम्नलिखित फायदे हुए।

2.4.3.1 पाश्चात्य ज्ञान से परिचय :-

मैकाले के पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान से भारतियों को परिचित कराने के हेतू भारतीय समाज के लिए नवजागृति के द्वार खुल गये । परंपरागत, अंधश्रध्दा, कर्मकाण्ड, धर्मनिष्ठा पर यहॉ का समाज पुनर्विचार करने लगा और ज्ञान - विज्ञान के माध्यम से यंत्रयुग से परिचित भारतीय समाज विदेशाटन के लिए प्रेरित हुआ इंग्लैंड, जर्मनी, अमेरिका और फ्रांस आदि देशों में शिक्षा के लिए जाने लगा।

2.4.3.2 नये वर्ग का निर्माण :-

पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान का अंग्रेजी भाषा में ज्ञान हासिल करने पर और पाश्चात्य संस्कृति से परिचित होने पर यहॉ के समाज में नवजागरण की लहर दौड पडी । अंग्रेजी संस्कृति और ज्ञान - विज्ञान की तरफ आकृष्ट एक नया वर्ग भारत में निर्माण होने लगा और उसने अपने देश कि स्थिती पर चिंतना करना शुरू किया । मैकाले ने कहा था ‘‘अंग्रेजी की शिक्षा द्वारा इस देश में एक ऐसे वर्ग का निर्माण किया जा सकता है, जो रक्त और रंग में भले ही भारतीय हों, पर रूचियों, विचारों, नैतिकता और विद्वता में अंग्रेजी होगा।’’ 26

2.4.3.3 राजनैतिक चेतना का निर्माण :-

मुस्लमानों के शासक बनने के बाद यहॉ भारतीय देशी राजे - महाराजे अपने छोटे - छोटे प्रातों में मुघल शासक के अधिपत्य में जी रहे थे। परंतु, अंग्रेजी शासनकाल में फिर एकबार उनमें राजकीय चेतना जागृत होने लगी। अंग्रेजी शासन विरूध्द एकत्रित होकर अपने देश को स्वतंत्रता प्राप्त करा देने के विचार से भारत में राजनैतिक अशान्ति उत्पन्न हुई। अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा ही देशवासियों में बन्धूत्व, समानता और स्वतन्त्रता के तत्वों का पुनर्जीवन हुआ और भारत में स्वतंत्रता संग्राम का जंग छेडा गया।

2.4.3.4 भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव रखी गई।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली को स्विकारते हुए उसमें पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान को स्थान देकर और अंग्रेजी भाषा माध्यम को बढावा देकर मैकाले ने भारतीयों के सामने पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान का भाण्डार खोल दिया जिससे प्रभावित हुए भारतियों में

वैज्ञानिक तथा आर्थिक विचारधारा प्रस्फुटित हुई और देश में औद्योगिकता का आगमन होते हुए आर्थिक उन्नति होने लगी।

2.4.3.5 देशी भाषा के महत्व जानकर भारतीय साहित्य विश्व के सामने लाया गया :-

अंग्रेजी भाषा को बढावा देनेवाले मैकाले ने भारतीय लोकभाषा में छिपे साहित्य को पहचान कर उसे विश्व के सामने लाने के लिए देशी भाषाओं में स्थित साहित्य को समाज के सामने लाने का प्रयास किया। मैकाले के अनुसार ''हमें देशी भाषाओं के प्रोत्साहन और विकास में अत्याधिक रूची है। हम समझते है कि देशी भाषाओं के साहित्य का निर्माण हमारा अन्तिम उद्देश्य है और हमारे सब प्रयास इस दिशा में लग जाने चाहिए।'' 27

मैकाले के अंग्रेजी भाषा, ज्ञान - विज्ञान के प्रचार - प्रसार हेतू भारतियों को शिक्षा देना और देशी साहित्य समाज के सामने लाने के उद्देश्य से प्राचीन भारतीय संस्कृति का परिचय विश्व को हो गया, साथ ही भारत में आधुनिक ज्ञान का प्रचार - प्रसार बढा। परंतु मैकाले के 'निस्यन्दन सिध्दान्त' के कारण भारत के उच्च वर्ण के लोग ही शिक्षित हुए। मैकाले की अपेक्षा थी कि यहाँ के उच्चवर्णिय शिक्षा को हासिल कर उसका प्रचार - प्रसार निम्नवर्ग में करेंगे। परंतु, शिक्षा निम्नवर्ग तक नहीं पहुंच पाई और मैकाले का 'निस्यन्दन सिध्दान्त' असफल रहा। और भारत में उच्चशिक्षित लोगों का एक प्रथम वर्ग निर्माण हो गया।

2.5 वुड का घोषणा पत्र (1854)

ईस्ट इण्डिया कम्पनी प्रति 20 वर्ष बाद अपना आज्ञापत्र परिवर्तित करती थी, 1833 के बाद 1853 में पुन: आज्ञापत्र में परिवर्तन आया। इस समय चार्ल्स वुड बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल के अध्यक्ष थे। 19 जुलाई 1854 में कम्पनी ने भारतीय शिक्षा समस्याओं पर एक घोषणापत्र प्रस्तुत किया जो 'वुड का घोषणापत्र' इस नाम से भारतीय शिक्षा प्रणाली मे प्रसिध्द है। अनुच्छेदों के माध्यम भारतीय शिक्षा के सुधार के लिए एक विशिष्ट योजना का निर्माण किया गया।

2.5.1 वुड की घोषणापत्र की सिफारिशें :-

कम्पनी भारत में शिक्षा का प्रसार का भार अपने उपर लेकर भारतीय शिक्षा में सुधार लाते समय प्राच्च साहित्य के साथ - साथ पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी भाषा ज्ञान के माध्यम से भारतियों को व्यावहारिक ज्ञान से करना महत्वपूर्ण मानती थी जो वुड के घोषणा पत्र में निम्न सिफारिशे थी -

1. शासन को दृढ कराने के लिए भारतियों के नैतिक, बौध्दीक और व्यावहारिक स्तर को उठाने के लिए 'शिक्षा' के प्रचार - प्रसार से राजपदों को संभालने की काबिलत भारतियों में निर्माण करना।
2. भारतीय भाषाओं के पुस्तक के आभाव में अंग्रेजी शिक्षा माध्यम को स्विकारा गया।
3. जनसाधारण शिक्षा का प्रचार - प्रसार होने के लिए प्राथमिक, मीडल एवं हाईस्कूलों की संख्या में वृध्दि कि गई। प्रत्येक प्रान्त में जनशिक्षा विभाग की स्थापना करते हुए संचालक, निरीक्षक, नियुक्त की मॉ की गई। अध्यापको को प्रशिक्षण देने के लिए अध्यापक विद्यालयों की स्थापना की मॉग की गई।
4. विश्वविद्यालयों की स्थापना की मॉग करते हुए लंदन विश्व विद्यालय के नमूने पर कलकत्ता,बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालय खोले जाने की सिफारिश की गई।
5. भारत की शिक्षा का भार केवल सरकार न उठाते हुए, भारत के धनवान व्यक्तियों को नीजी पाठशाला खोलने के लिए प्रेरित किया गया साथ ही उन्हे सरकारी अनुदान देनी की सिफारिश रखी गई।
6. व्यावसायिक शिक्षा - भारतीयों के शिक्षा स्तर को उपर उठाने के लिए उन्हें व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है और इसलिए व्यावसायिक केंद्रो की निर्मिती की महत्वपूर्ण मॉग की गई।
7. स्त्री - शिक्षा को बढावा देने की मॉग की गई।

2.5.2 वुड के घोषणापत्र के दोष :-

1. वुड के घोषणापत्र ने भारतीय भाषाओं को संरक्षण प्रदान किया। परंतु अंग्रेजी भाषा को ही बढावा मिलने के कारण देशी पाठशालाएँ बन्द होने लगी।

2. शिक्षा का उद्देश्य भारतियों को अंग्रेजी भाषा में प्रविण बनाकर प्रशासकीय कर्मचारियों की निर्मिती करना।
3. शिक्षा प्रणाली में परिक्षा प्रणाली को महत्व प्रदान हो गया।
4. माध्यमिक और विश्वविद्यालय शिक्षा के माध्यम अंग्रेजी भाषा रखी गयी
5. भारतियों के आध्यात्मिक शिक्षा विचारों की उपेक्षा करते हुए प्रशासकीय क्लर्क निर्माण करने का उद्देश्य रखा गया। परिणाम स्वरूप; प्राच्य विद्या पिछे पड गई।
6. सहायक अनुदान के माध्यम से पादरियों के शिक्षा स्कूलों को सुरक्षा प्रदान की गई।

वुड के घोषणा पत्र में दोष जरूर है। परंतु, इस घोषणापत्र ने भारतीय शिक्षा नीति को एक निश्चित रूप प्रदान किया । शिक्षा का दायित्व पुरी तरह सरकार ने उठाया । परिणामत: जन - साधारण को शिक्षा के द्वार (खुल गये) सरकार के अधिन एक सुव्यवस्थित और संगठित रूप में पाठयक्रम के अनुसार शिक्षा प्रदान कि जाने लगी, जिससे शिक्षा का प्रचार - प्रसार तेजी से होने लगा।

2.6 स्वतंत्र भारत में शिक्षा प्रणाली :-

विश्वविद्यालयों तथा छात्रों की बढती संख्या को देखते स्वतंत्रता के बाद देश में शिक्षा नीति की ओर ध्यान देना आवश्यक था । क्यों कि ब्रिटीशकालीन शिक्षा से विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रभावित थी, जिससे स्वतंत्र भारत की राजनैतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति अशक्य प्राय: थी। विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार लाने के लिए केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने सरकार से हण्टर कमिशन पर आधारित 'अखिल भारतीय विश्वविद्यालय आयोग' कि स्थापना सन 1948 में की जिसके अध्यक्ष डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन् थे और 10 सदस्य थे। यह आयोग अध्यक्ष डॉ.राधाकृष्णन आयोग के नाम से जाना जाता है।

2.6.1 विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग) :-

विश्वविद्यालय शिक्षा में सुधार और विकास लाने हेतू 4 नवम्बर 1948 को विश्वविद्यालय शिक्षा में गठन किया गया, जिन्होंने एक साल बाद 25 अगस्त 1949 को राधाकृष्णन आयोग ने सरकार के सामने रखते हुए अपने उद्देश्य के बारे में कहा। ''भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा के विषय में रिपोर्ट देना और उन सुधारों एवं विस्तारों के

सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना, जो देश की वर्तमान और भावी सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना, जो देश वर्तमान और भावी आवश्यकताओं के लिए वांछनीय है।'' 28

राधाकृष्णन आयोग ने निम्न सुझाव प्रस्तुत रखे गये।

2.6.1.1 विश्वविद्यालयों को सुझाव :-

1. स्वतंत्र भारत का प्रजातन्त्रात्मक शासन सफल बनाने के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासन, व्यवसाय एवं उद्योग आदि क्षेत्र में नेतृत्व कर सके ऐसे सक्षम भारतीय नागरिकों का निर्माण विश्वविद्यालयों से हो।
2. विश्वविद्यालय देश की संस्कृति के रक्षक एवं पोषक हो इसलिए सातुबन्धित पाठयक्रम की रचना हो। जिसके माध्यम से देश की संस्कृति की उन्नती होकर बन्धुता निर्माण हो।
3. छात्रों के जन्मजात गुणों का विकास हो ताकि वे सामाजिक कार्यो में सहयोग दे।
4. विश्वविद्यालयों ने न्याय, स्वतन्त्रता, समानता और प्रजातन्त्र के भावनाओं की रक्षा करना तथा छात्रों में उसकी वृध्दी करना अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

2.6.1.2 अध्यापक वर्ग के लिए सुझाव :-

1. शैक्षणिक सुधार के लिये अध्यापकों के चरित्र और योग्यता पर ध्यान देते हुए शैक्षणिक, अध्यापन और नेतृत्व योग्यता पर अध्यापकों की नियुक्ती हो।
2. अध्यापकों के निवास विश्वविद्यालयों के निकट हो।
3. अध्यापक अपने पद पर 60 तथा 64 वर्ष की आयु तक कार्यरत रह सकते है।
4. अध्यापकों की प्राविडेन्ट फण्ड का आयोजन ठिक प्रकार से किया जाये।
5. अध्यापकों को अवकाश की सुविधा दी जाए साथ ही सप्ताह में उनका 18 घण्टो का अध्यापन कार्य हो।
6. अध्यापक वर्ग को चार श्रेणियों मं बांटते हुए उनकी वेतनश्रेणी निर्धारित कि गई।

2.6.1.3 अध्यापन का स्तर :-

1. इण्टरमीडियट उत्तीर्ण छात्रों को केवल विश्वविद्यालयों में प्रवेश दिया जाये।

2. विश्वविद्यालय के शिक्षा स्तर को बढाने के लिए इण्टरमीडियट शिक्षा स्तर में ही छात्र की शिक्षा स्तर पर ध्यान देना आवश्यक।
3. व्यावसायिक और टेक्निकल स्कूलों की स्थापना करते हुए छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाये।
4. वर्ष में कार्य दिवस कम से कम 180 दिन होने चाहिए।
5. विश्वविद्यालयों में 6,000 और सम्बन्धित महाविद्यालयों में 1,500 से अधिक छात्र न हो।
6. स्नातक कोर्स 3 वर्ष का कर दिया जाना चाहिए।
7. तृतीय वर्ष की डीग्री परिक्षा के बजाय प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के अंत में अंतिम परिक्षा हो और श्रेणी रखते हुए उनके अंक विभाजन 70.55 तथा 40 प्रतिशत होने चाहिए। साथ ही कक्षाओं में भी टयुटोरियल की व्यवस्था की जाए।

2.6.1.4 स्नातकोत्तर अनुसन्धान :-

1. एम.ए.और एम.एस.सी. की कक्षा प्रवशों के नियम अखिल भारतीय स्तर पर एक ही हो।
2. स्नातकोत्तर कक्षाओं में संगोष्ठी, भाषण और प्रयोग अध्यापन के आधार हो।
3. पी.एच.डी. के खोज कार्य के लिए छात्रों को अखिल भारतीय स्तर पर निर्वचित करते हुए उनके खोज कार्य की अवधि कम - से - कम 2 वर्ष तक होनी चाहिए।

2.6.1.5 पाठयक्रम :-

विश्वविद्यालयों तथा माध्यमिक स्कूलों के पाठयक्रम में कला और विज्ञान के साथ - साथ सामान्य शिक्षा का भी प्रबन्ध किया जाये। सामान्य शिक्षा और विशेषीकृत शिक्षा में सामंजस्य स्थापित करते हुए उनकी ज्ञानकक्षा को बढावा दिया जाये। जिसके माध्यम से छात्रों का सर्वांगिण विकास हो। बी.ए. की उपाधि के लिए 3 वर्ष की अवधि रखी जाये। स्नातकोत्तर उपधि स्नातक बनने के बाद 2 वर्ष के पश्चात् प्रदान करे।

2.6.1.6 व्यावसायिक शिक्षा :-

व्यावसायिक का संबंध अर्थ - कार्यपटुता से न लगाते हुए छात्रों को जीवन उन्नति के लिए व्यावसायिक शिक्षा महत्व दिया जाये। ''व्यावसायिक शिक्षा वह क्रिया है, जिसमें स्त्री एवं पुरूष व्यावसायिक भावनाओं के साथ परिश्रमपूर्ण और उत्तरदायित्व के लिए अपने को योग्य बनाते है।'' 29

2.6.1.7 शिक्षा का माध्यम :-

उच्चशिक्षा का माध्यम अंग्रेजी के स्थान पर किसी भारतीय भाषा का प्रयोग प्रारम्भ किया जाये। उच्चतर माध्यमिक एवं विश्वविद्यालयों में छात्रों को तीन भाषाओं का अध्ययन कराया जाए। प्रादेशिक (मातृभाषा), संघीय भाषा (राष्ट्रभाषा) और अंग्रेजी भाषा।

2.6.1.8 नारी शिक्षा :-

आयोग ने नारी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए कहा - ''शिक्षित महिलाओं के बिना समाज शिक्षित नहीं हो सकता। यदि सामान्य शिक्षा को पुरूषों अथवा स्त्रियों तक सीमित रखना हो तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाना चाहिए क्यों कि तब शिक्षा निश्चय ही भावी पीढी को हस्तान्तरित की जा सकेगी।'' 30

स्त्री शिक्षा को महत्व देते हुए स्त्रियों को हर प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जाये। महिलाओं के पाठयक्रम में गृहशास्त्र, अर्थशास्त्र, ललितकलाओं को स्थान हो। स्त्री जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में योग्य बने इसलिए उसके अनुकूल पाठयक्रम को बनाया जाये। स्त्रियों अपने को सामान्य समाज के अनुकूल अपने को ढाल सके ऐसी शिक्षा प्राप्त करे।

2.6.2 डॉ.राधाकृष्णन आयोग का मूल्यांकन :-

विश्वविद्यालय शिक्षा में राधाकृष्णन आयोग का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके सुझाव तत्कालीन देश की स्थिती को देखते हुए शिक्षा में सुधार लाने में प्रशंसनीय रहे। परंतु, ललित कलाओं की उपेक्षा, धार्मिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा पर आयोग ने बल नही दिया, साथ ही माध्यमिक शिक्षा कि उन्नती की उपेक्षा के परिणामस्वरूप ; विश्वविद्यालयीन सुधारकार्य की व्यर्थता स्पष्ट हो जाऐगी यह देखते हुए शिक्षा विशेषज्ञों ने माध्यमिक शिक्षा आयोग' का गठन किया।

2.7 माध्यमिक शिक्षा आयोग :-

मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ.लक्ष्मणस्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में 23 सितंबर 1952 में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' की स्थापना की। जिन्होंने जून 1953 को माध्यमिक शिक्षा संबंधी सुझाव सरकार को प्रस्तुत किये। यह आयोग मुदलियार आयोग के नाम से जाना जाता है, इसके सुझाव निम्नप्रकार से रहे -

2.7.1 मुदलियार आयोग के सुझाव :-

1. जनतन्त्रात्मक नागरिकता की भावना का विाकस करने के लिए छात्रों में अनुशासन, देशप्रेम, सहयोग, सहिष्णूता आदि गुणों का विकास करते हुए उन्हें योग्य नागरिक बना सके।
2. छात्रों में नेतृत्व गुणों का विकास करनेवाली शिक्षा देना परमआवश्यक है।
3. छात्र के सर्वांगिण व्यक्तित्व विकास की ओर ध्यान देनेवाली शिक्षा हो।
4. जीविकोपार्जन कि क्षमता का विकास करने के लिए आध्यात्मिक स्तर से वाणिज्य, टेक्नीकल विषयों का ज्ञान छात्रों को दिया जाए।

2.7.2 माध्यमिक शिक्षा का पुनर्गठन :-

आयोग ने माध्यमिक शिक्षा पुर्नगठन की आवश्यकता को बनाते हुए निम्न सुझाव रखे -

माध्यमिक शिक्षा काल 7 वर्षो का हो। 3 वर्ष मिडल या 4 वर्ष का उच्चस्तर माध्यमिक स्तर हो। माध्यमिक शिक्षा 11 से 17 वर्ष तक की छात्र - छात्रओं को प्रदान की जाये। उच्चस्तर माध्यमिक कक्षाओं मे इण्टर मीडिएट को सम्मलित करते हुए १२ वीं कक्षा डिग्री - कोर्स में मिला जाये। पाठयक्रम में भाषाएँ, समाजविज्ञान, सामान्य विज्ञान, गणित, कला और संगीत, शिल्प और शारिरिक शिक्षण यह विषय रखे जाएँ। पाठयक्रम में लचिलापन हो। माध्यमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा हो। बहुभाषी अल्पसंख्यांकों के लिए केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड' के आधार पर कार्य किया जाए। उच्चस्तर पर अंग्रेजी माध्यम के साथ मातृभाषा को भी रखा जाए।

माध्यमिक शिक्षा का पुनर्गठन करते समय छात्र के चरित्र निर्माण पर ध्यान दिया गया। ज्ञानार्जन उद्देश्य न हो इस तरफ ध्यान देते हुए संपन्न नागरिक निर्मिती का ध्येय

रखा गया। अध्यापकों के स्थित सुधार ने के लिए वेतनश्रेणी, प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अनुशासन की स्थापना के लिए अध्यापक और छात्र के अपनत्व के सम्बन्ध हो। छात्रों को पाठय सहभागी क्रियाओं तथा सामूहिक खेल - कुदों मे उचित अवसर प्रदान करते हुए व्यक्तित्व निर्माण में ध्यान दे।

2.7.3 मुदलियार आयोग का मूल्यांकन (माध्यमिक शिक्षा आयोग)

मुदलियार आयोग द्वारा प्रस्तुत किये गये सुझाव माध्यमिक शिक्षा क्षेत्र के लिये अत्याधिक लाभप्रद हुए इस आयोग ने दिये सुझावों को स्विकारते हुए जर्जर होती माध्यमिक शिक्षा का पुर्नगठन आवश्यक था, इस बारे में भगवान दयाल कहते है। ''यदि आयोग के अधिकांश सुझावों को क्रियान्वित कर दिया जायेगा, तो माध्यमिक शिक्षा इस देश में निश्चितरूप सम्पूर्ण देश के हित में सुनियोजित प्रगति समभ्व हो जायेगी।'' 31

2.8 कोठारी आयोग :-

राधाकृष्णन एवं मुदलियार आयोग ने विश्वविद्यालयीन शिक्षा' की ओर ध्यान देते हुए तत्कालीन परिस्थिती में स्थित शिक्षा समस्याओं का हल प्रस्तुत नहीं किया था। परिणामस्वरूप; शिक्षा की गुणवत्ता एवं स्वरूप में अपेक्षित सुधार तथा विकास नहीं हुआ और सम्पूर्ण शिक्षा में सुधार हेतू राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन (1964) में किया, जिसे व्यापक आयोग भी कहा जाता है। इस भारतीय शिक्षा आयोग ने 2 अक्तूबर 1964 को अपना कार्य आरम्भ करते हुए अपने सुझाव 29 जून 1966 को प्रस्तुत किये। इसके अध्यक्ष जी.एस. कोठारी थे। यह आयोग कोठारी नाम से जाना जाता है।

2.8.1 कोठारी आयोग के सुझाव :-

इस आयोग के समय एम.सी.छागला केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री थे। 700 पृष्ठों के इस आयोग में शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण अंगों पर विचार व्यक्त कर सुझाव दिये थे इसलिए इसे राष्ट्रीय विकास की संज्ञा दी जाती है। इस आयोग ने निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की गई।

2.8.1.1 शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य :-

जनता के विकास के साथ देश का विकास जोडते हुए शिक्षा में सुधार लाने के लिए शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित करते हुए पॉच सूत्री कार्यक्रम का सुझाव दिया।

1. शिक्षा का सम्बन्ध उत्पादकता से स्थापित करते हुए उत्पादन में वृध्दि की जाए।
2. शिक्षा द्वारा प्रजातन्त्र को सदृढ बनाया जाए।
3. आधुनिक ज्ञान - विज्ञान और अनिवार्य कौशल्यों में सामंजस्य प्रस्थापित करते हु शैक्षिक प्रसार - प्रचार आवश्यक।
4. शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक मूल्यों का विकास करना चाहिए।
5. शैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकीकरण को सशक्त करना।

2.8.1.2 विद्यालय शिक्षा :-

नवीन शिक्षा प्रणाली का सुझाव देते हुए पूर्व - प्राथमिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए प्रत्येक जिलें में पूर्व - प्राथमिक शिक्षा के केंद्र खोलना चाहिए। साथ ही सब बच्चों को 7 वर्ष तक की शिक्षा नि:शुल्क देने के संविधान के प्रावधान को स्विकार करे। शिक्षा का व्यावसायिकरण करते हुए व्यावसायिक शिक्षा को बढावा देना चाहिए। विद्यालयों में पाठयक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के द्वारा रखने चाहिए। निर्धन छात्रों को छात्रवृत्तियों दी जानी चाहिए। सैकेण्डरी स्कूल के शिक्षा स्तर की तरफ ध्यान देते हुए, हायर सैकेण्डरी स्कूल को बढावा मिले।

2.8.1.3 उच्चशिक्षा :-

भारत में वैदिक, बौध्द तथा मुस्लिम शासकों के समय में उच्चशिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान रहा। परंतु आधुनिक उच्चशिक्षा का प्रारंभ अंग्रेजी शिक्षा नीति के परिणाम स्वरूप 1757 से 1947 तक ब्रिटीशें ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सुस्थापित करने का प्रयास और विकास किया। भारत में आधुनिक उच्चशिक्षा काल को चार भागों में देख सकते है।

2.8.1.3.1 महाविद्यालयों का युग (1757 - 1857) :-

इस समय सर्व प्रथम वारेन हैस्टिंगज ने कलकत्ता में मदरसा की स्थापना की। इसके पश्चात बनारस संस्कृत महाविद्यालय, हिन्दू कॉलेज निर्माण किया गया। साथ ही व्यावसायिक शिक्षा के चिकित्साशास्त्र के ३ और इंजीनियरिंग के कॉलेज की स्थापना की गई थी।

2.8.1.3.2 प्रथम विश्वविद्यालय (1857 - 1916) :-

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने लंदन विश्वविद्यलय के आदर्श पर कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय प्रारम्भ किये । 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम में लार्ड कर्जन के सुझाव को देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन में सुधार, प्रस्तकालयों एवं प्रयोग - शालों का निर्माण, कॉलेजों पर कडे निर्बंध डालकर उच्चशिक्षा का स्तर सुधारणे की बात की गई।

2.8.1.3.3 नवीन विश्वविद्यालयो का युग (1916 - 1947) :-

1916 के बाद कॉलेज छात्रों की बढती संख्या को देखकर नवीन विश्वविद्यालयों की निर्मिती कि गई।

2.8.1.3.4 स्वतन्त्रता का युग (1947 से आज तक) :-

स्वतन्त्रता के बाद भारत में डॉ.राधाकृष्णन आयोग कि स्थापना की गई उन्होंने उच्चशिक्षा के तथा गुणात्मक विकासके लिए सुझाव दिये साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना 1953 में की गई। आगे चलकर कोठारी आयोगने उच्चशिक्षा में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव रखते हुए विश्वविद्यालयों का मुख्य लक्ष्य नवीन खोजे के साथ - साथ प्राचीन ज्ञान का विश्लेषण करना, नवीन ज्ञान का विाकस करना राष्ट्रीय चेतना का विकास करना, इन बातों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया साथ ही विज्ञान, कृषि, इंजिनियरिंग, व्यावसायिक उच्चशिक्षा देश के विकास के लिए आवश्यक माना गया। आज भारत में 222 विश्वविद्यालय और 18 डीम्म टू बी युनीवर्सिटी है।

2.8.1.3.5 स्त्री शिक्षा :-

कोठारी आयोग ने स्त्री शिक्षा को बढावा देने के लिए प्राथमिक शिक्षा के प्रचार - प्रसार को महत्वपूर्ण माना । माध्यमिक शिक्षा विस्तार को बढावा देते हुए बालक - बालिका का माध्यमिक शिक्षा का अनुदान 1:3 तथा उच्चशिक्षा का 1:2 होना चाहिए। केन्द्र तथा राज्य में महिलाओं तथा लडकियों की शिक्षा के लिये अलग विभाग होना चाहिये। विशेष योजना, तथा अनुदान की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रौढ स्त्रियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र होने चाहिए । 'कमेरी ऑन एजुकेशन फॉर वीमैन' को प्राथमिकता दी गई।

2.8.1.3.6 प्रौढ शिक्षा :-

प्रौढ शिक्षा के लिए संगठन को महत्वपूर्ण मानते हुए प्रौढ शिक्षा के लिये सरकार ने विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से प्रोत्साहित किया । वयस्कों के शिक्षा विकास संदेश का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में योगदान प्राप्त करना के सुझाव रखा गया।

2.8.1.3.7 अध्यापक की स्थिती :-

कोठारी आयोग ने अध्यापन के स्तर को उन्नत करने का सुझाव रखते हुए अध्यापकों के वेतन में वृध्दी कि जाये । उनके वेतन में समरूपता हो । मुहम्मद करीम छागला कहते है । ''ये वेतन - मान अध्यापकों का महाधिकार पत्र है, मै आशा करता हूँ कि हम इन संस्तुतियों को लागू करने में समर्थ होंगे।'' 32

इस तरह दस वेतन मानों का सुझाव रखा गया । अध्यापकों के प्रशिक्षण, पुरस्कार, गुणवत्ता इन्ह बातों पर विशेष बल दिया गया । अंग्रेजी भाषा को भारतीय शिक्षा में अनिश्चित काल तक रखने के साथ - साथ क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान करना और 'हिंदी' भाषा के महाविद्यालयों को बढावा देने की बात रखी गई।

इस तरह आयोग ने राष्ट्रीय विकास तथा राष्ट्रीय पुनर्निमाण में शिक्षा को सशक्त साधन मानते हुए अध्यापकों की स्थिती सुधार का सुझाव रखा।,

2.8.2 कोठारी आयोग का मूल्यांकन :-

कोठारी आयोग ने शिक्षा संबंधी व्यापक दृष्टिकोन रखते हुए पूर्व - प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक सभी समस्याओं पर गहनता से विचार करते हुए सारगर्भित सुझाव रखे । शिक्षा को आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ जोडते हुए भारतीय समाज के समग्र उन्नति के लिए सशक्त शिक्षा प्रणाली को विकास का साधन माना और प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक अनुदान देनी बात रखी गई । अंग्रेजी शिक्षा को खारिज करने के बजाय अनिश्चित काल तक रखते हुए अंग्रेजी को महत्ता प्रदान की । राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण का सशक्त माध्यम शिक्षा को स्विकारते हुए आशावादी दृष्टी से व्यावहारिक सुझाव प्रदान किये।

2.9 ईश्वरभाई - आदिशेषय्या कमेटी

भारतीय शिक्षा आयोग ने हर पॉंच साल बाद शिक्षा प्रणाली पर मूल्यांकन की बात रखी थी। परंतु, 1977 तक कोई मूल्यांकन कार्य नही हुआ। मार्च 1977 में जनता दल की सरकार आने पर कोठारी आयोग के मूल्यांकन पर बात चली। जिसके अध्यक्ष डॉ. इश्वरभाई पटेल थे, इस आयोग में N.C.E.R.T. द्वारा 10 + 2 के पाठयक्रम का मूल्यांकन, वर्तमान शिक्षा पध्दती की उपयोगिता पर विचार रखे गये। उन्होंने शिक्षा स्तर का समय मनुष्य व्यक्तित्व के विकास के परिवर्तन का समय स्विकारते हुए सामान्य शिक्षा के साथ - साथ व्यावसायिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उच्च माध्यमिक शिक्षा को अन्तर्राष्ट्रीय सहभागीता और सतत के सिध्दान्त के साथ - साथ बेरोजगारी उन्मूलन, ग्रामीण विकास प्रौढ साक्षरता, गरीबी हटाने के अनूकूल शिक्षा के साधन के रूप में स्विकारते हुए राष्ट्रीय उन्नती के विचार रखे।

2.10 नवीन शिक्षा नीति :-

कोठारी आयोग ने दी हुई सिफारिशों के अनुसार कार्यन्विकरण के बावजूद भी 'शिक्षा' सामाजिक, आर्थिक बदलाव लाने में असफल रही। शिक्षा के दूरगामी परिणाम दृष्टी में नही आये तब लगभग बीस साल बाद शिक्षा पर पुन:विचार प्रारम्भ हुआ और 1985 में 'शिक्षा की चुनौती' नामक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति रखी गई।

1. प्रथमत: केन्द्र सरकार ने शिक्षा को राष्ट्रीय स्तर पर महत्व देते हुए निश्चित शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन पर बल दिया गया।
2. नई शिक्षा 10 + 2 + 3 स्तर को देश के प्रत्येक भागों मे रखा गया।
3. राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एकबीज पाठयक्रम प्रणाली रखी गई।
4. शैक्षिक अवसरों में समानता लाने के लिये महिलाओं, अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों, अल्पसंख्याकों, विकलांगों, पिछडे हुए क्षेत्र के लोगों में समान रूप से शैक्षिक प्रसार एवं सुविधायें सुलभ कराने का संकल्प किया गया।
5. प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता को स्थान दिया गया।
6. नवोदय विद्यालयों की स्थापना करते हुए 75 % सीटें ग्रामीण बच्चों के लिये रखे गये।

7. माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया गया।

2.10.1 शिक्षा का विकेन्द्रीकरण :-

शिक्षा का विकेन्द्रीकरण करते हुए। शिक्षा के प्रचार - प्रसार हेतू राष्ट्रीय स्तर पर निम्न संस्थाओं का निर्माण किया गया।

1. विश्वविद्यालय आयोग (U.G.C)
2. अखिल भारतीय तकनीकी परिषद (AICTE)
3. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)
4. भारतीय चिकित्सा परिषद (IMC)
5. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान (NCERT)
6. राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन तथा प्रशासन संस्था (NIEPA)
7. अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रायोगिकी शिक्षा मंत्रालय (IISTE)

इस तरह सभी स्तरों पर शिक्षा का विकेन्द्रीकरण करते हुए उपर्युक्त संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन लाते हुए अनुसंधान और स्नातकोत्तर शिक्षा कार्यक्रम को मजबूत बनाते हुए देश के आर्थिक, सामाजिक, प्रायोगिक विकास का उद्देश्य रखा गया।

2.11 आचार्य राममूर्ति समिति (1990)

सन 1989 में केन्द्र मे 'राष्ट्रीय मोर्चा सत्ता' आ गई। इस सरकार के प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने मई 1990 में 1986 के शिक्षा नीती के समीक्षा हेतू आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता एवं 17 सदस्यीय समिती का गठन किया। इस समिती को सरकार ने तीन कार्य सौंपे गये।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 की समीक्षा करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में संशोधन हेतू सुझाव देना।
3. संशोधन नीति के क्रियान्वयन हेतू सुझाव देना।

2.11.1 आचार्य राममूर्ति समिति के सुझाव :-

1. शिक्षा का मूल उद्देश्य अहिंसक एवं शोषण रहित समाज का निर्माण करना इसलिए बच्चों के भावपक्ष का विकास, धर्म निरपेक्षता को बढावा देना, रोजी - रोटी कमाने के योग्य बनाना।
2. प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' योजना चालू रखे और उसे गति प्रदान करे।
3. आंगनबाडी व्यवस्था को महत्व देते हुए, पूर्व - प्राथमिक शिक्षा स्थानीय आवश्यकता नूसार प्राणालियों का निर्माण करना।
4. व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय - समय पर अध्यापकों को प्रशिक्षण देते हुए पाठयक्रम को अद्युनातन बनाना। संगणकीय शिक्षा को अग्रक्रम देना।
5. प्रौढ शिक्षा के माध्यम से प्रौढों को सक्षम बनाते हुए राष्ट्रीय विकास में योगदान पाना ।
6. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद को संवैधानिक स्तर प्रदान किया जाये।
7. कृषि विश्वविद्यालय ग्रामीण विकास के लिए केन्द्र स्थापित करे।
8. संगणक शिक्षा पर बल देते हुए शिक्षा में दृक - श्राव्य माध्यमों को उपयोग करना।
9. अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण, पाठयक्रम निश्चित किये जाये । शिक्षक - शिक्षा पत्राचार के माध्यम से न दी जाये। अध्यापकों को पाठयक्रम निर्माण कार्यकारिणी परिषद, सीनेट निर्णायक निकायों में सदस्यत्व प्रदान किये जाये।
10. उच्चशिक्षा समस्याओं को हल करने हेतू विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का पुर्नगठन करते हुए क्षेत्रीय कार्यकाल निश्चित किया जाये।
11. अध्यापक स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट तथा डॉक्टरेट पश्चात अनुसंधान के अतिरिक्त अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करे। उन्हें परीक्षाओं के संचलन से मुक्त किया जाए।

आचार्य राममुर्ति शिक्षा समिति के सुझाव को पूर्णरूप से क्रियान्वित करने के प्रयास हो रहे है। परंतु, बढती जनसंख्या और आर्थिक अभाव के कारण आज भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपना उद्देश्य पाने में असफल ही रही है।

2.12 जनार्दन रेड्डी समिति - जनवरी 1992

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का संशोधिनरूप

केन्द्रीय शिक्षा सलाहाकार तथा परिषद ने जुलाई 1991 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति समिति का गठन आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री जनार्दन रेड्डी की अध्यक्षता में की। उन्होंने अपना प्रतिवेदन जनवरी 1992 मे प्रस्तुत करते हुए निम्न सुझाव रखे।

2.12.1.1 उचित अर्थ वितरण के सुझाव :-

शिक्षा के लिए सही प्रशासन और उचित अर्थ वितरण व्यवस्था होनी चाहिए। प्राथमिक शिक्षा को प्रथम स्थान देते हुए जिला शिक्षा परिषदों की स्थापना करते हुए शैक्षिक संसाधनों का उचित प्रयोग करते हुए उच्च तथा तकनीकी शिक्षा को स्ववित्त बनाने के प्रयास होने चाहिए।

2.12.1.2 पूर्व - प्राथमिक शिक्षा नि:शुल्क हो :-

पूर्व - प्राथमिक शिक्षा कि तरफ ध्यान देते हुए कर्मचारियों को प्रशिक्षण देकर शिशु - आहार, देखभाल, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण योजनाओं से संबंधित योजनाओं के माध्यम से प्रशिक्षित करते हुए समाज स्वास्थ्य को शिक्षा से जोडना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा को सर्वाभौमिकता प्रदान करते हुए 14 वर्ष की आयु तक बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

2.12.1.3 माध्यमिक शिक्षा परिषदों का पुनर्गठन :-

माध्यमिक शिक्षा परिषदों का पुन:गर्ठन करते हुए, उन्हें स्वायत्त बनाना चाहिए। प्रधानाचार्यां को वित्तय अधिकार प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय कि स्थापना करते हुए उसकी कार्यप्रणाली निश्चित करना आवश्यक है।

2.12.1.4 उच्चशिक्षा में सुधार :-

उच्चशिक्षा में सुधार लाने के लिए पदर के क्षेत्रीय कार्यालय होने चाहिए। नये - नये पाठयक्रम शुरू किये जाये। अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज योजना का स्विकार करना चाहिए।

2.12.1.5 अध्यापकों को प्रशिक्षण :-

शिक्षक - शिक्षा पाठयक्रम का आयोजन होना चाहिए। प्राथमिक अध्यापकों के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केंद्रो की निर्मिती करनी चाहिए।

2.12.1.6 तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा :-

तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा को बढावा देते हुए नये तकनीकी परिषद शिक्षा संस्थानों का निर्माण होना आवश्यक है।

2.12.1.7 त्रिभाषा सूत्री :-

त्रिभाषा सूत्र को लागू करते हुए उच्चशिक्षा में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए।

इस तरह जनार्दन रेड्डी ने पूर्व - प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चशिक्षा को प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक बच्चे को है यह बात रखते हुए शिक्षा के नीजीकरण पर आशंका जताते हुए शिक्षा का वित्तय जिम्मेदारी उठाने के सुझाव रखे।

2.13 प्रो. यशपाल समिति (1992 - 93)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 1 मार्च 1992 में स्कूली छात्रों के शैक्षिक बोझ को कम करने के लिए उपाय बनाने के लिए राष्ट्रीय सलाहाकार समिति का गठन किया। इस समिति के अध्यक्ष प्रो. यशपाल के अध्यक्षता में समिती ने 15 जुलाई 1993 में 'शिक्षा बिना बोझ' की नाम से अपना प्रतिवेदना प्रस्तुत किया।

इस प्रतिवेदन में स्कूली बच्चों क पाठयपुस्तकों का बोझा कम करते हुए उन्हें व्यावहारिक ज्ञान देने के साथ - साथ कार्यानूभव की तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए और उसी के अनुसार पाठयक्रमों की निर्मिती होनी चाहिए इस बात पर बल देते हुए 'शिक्षा बिना बोझ' के इस नीति को प्रस्तुत किया।

इस तरह स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा प्रणाली में विकास लाने हेतू सरकार ने तीन राष्ट्रीय शिक्षा नितियॉ (1986,1979 तथा 1986 का गठन किया। 1986 वो राष्ट्रीय शिक्षा नीती पर अनेक पुर्नगठन जमितियों के माध्यम से शिक्षा में सुधार लाने का प्रयास किया गया। परंतु, आज भी राष्ट्रीय शिक्षा नीती में महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ है जिसके माध्यम से हम शिक्षा के राष्ट्रीय उद्दिष्टों को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल नही हुए है।

आज भारतीय शिक्षा में बदलते प्रवाह के साथ परिवर्तन किया जा रहा है । संगणकीय शिक्षा, कक्षा 1 से अंग्रेजी का ज्ञान, मूल्य शिक्षण, पर्यावरण शिक्षण इन्ह बातों को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए विश्व के बदलते समाज जीवन के साथ भारत देश के समाज में भी बदलाव लाने के लिये शिक्षा में तेजी से परिवर्तन लाया जा रहा है । नीजीकरण, भमण्डलीकरण, उदारीकरण को लेते हुए विदेशी शिक्षा का भारत मे फिर एक बार प्रवेश हो चुका है। नीजीकरण और बढते शुल्क के कारण आम आदमी फिर से शिक्षा से दूर रहने का डर है ; फिर भी नये प्रवाह के साथ चलते हुए भारतीय शिक्षा प्रणाली में समय के साथ बदलाव जरूर हो रहा है आवश्यकता है शिक्षा को अधिकार देश के प्रत्येक बालक को मिले और भारत देश धर्मनिरपेक्ष होते हुए महासत्ता बनने में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान दे ।

2.14 निष्कर्ष :-

भारतीय शिक्षा परंपरा का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट होती है भारत में प्राचीन काल से शिक्षा को मनुष्य जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया है । प्राचीन शिक्षा में आर्थिक शिक्षा, राष्ट्रीयता की निर्मिती, चरित्रसंपन्नता, ज्ञानोपार्जन इन उद्देश्यों को लेकर शिक्षा को वैदिक काल में व्यक्तित्व निर्माण के साथ - साथ राष्ट्र निर्मिती के लिये शिक्षा का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था । परंतु सिर्फ उच्चविर्णियों को शिक्षा का अधिकार रहने के कारण अन्यवर्णो के लोगों को शिक्षा से दूर रहना पडा और समाज विकास का चक्र रूका हुआ दिखाई देता है ।

बौध्द काल में शिक्षा के उद्देश्य वैदिक काल के ही रहे । परंतु शिक्षा अधिकार जन - साधारण को प्रदान करते हुए भारतीय समाज में बहुत बडी क्रांती ला दी । ज्ञानार्जन के साथ - साथ निर्वाण को प्राप्त करना यह बौध्द शिक्षा का लक्ष्य था। परंतु, इस शिक्षा नीति के कारण यह कालखंड अहिंसा का तत्व लेकर शांती का काल रहा जिसने अपने ज्ञान - विज्ञान से पुरे विश्व को आकर्षित करते हुए सत्य, अहिंसा, करूणा, प्रज्ञा, शील इन तत्वों को पुरे विश्व में फैलाते हुए मानवतावाद की स्थापना की । स्त्री को शिक्षा का अधिकार प्रदान कर समाज विकास में स्त्री का महत्व स्थापित किया ।

मुस्लीम शासन काल में मुस्लीम शासकों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण जरूर माना । परंतु वैदिक और बौध्द धर्मीय शिक्षा का विरोध करते हुए अरबी - फारशी में शिक्षा देकर

इस्लामधर्म का प्रचार - प्रसार करना अपना उद्देश्य रखा। परिणामत: प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली 'गुरूकुल' शिक्षा पध्दती अस्तित्व के लिये संघर्ष करती रही।

अंग्रेजी शासन काल में गुरूकुल और मुस्लीम शिक्षा एक साथ - समाज में चल रही थी। परंतु समाज में स्थित रूढी, परंपरा कुरितीयों के कारण शिक्षा व्यवस्था अत्यंस्थ अवस्था में थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बंगाल पर विजय प्राप्त करने बाद में अपने सत्ता के विस्तार के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली की तरफ ध्यान देना आवश्यक समजा आगे मुघलशासन को खत्म करने के बाद भारत में अंग्रजी सत्ता चलाने के लिए प्रशासकीय कर्मचारियों की निर्मिती के लिये अंग्रेजी भाषा जाननेवाले शिक्षित भारतीय समाज निर्मिती के लिये ब्रिटीश पार्लमेण्ट ने भारत में शिक्षा संबंधी प्रचार - प्रसार के लिए अनेक योजनाओं का निर्माण करते हुए यहॉ की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के प्रयास किये। इस तरह आज के आधुनिक भारत के निर्माण की नींव अंग्रेजों के शिक्षा नीति का वरदान ही मानना चाहिए।

स्वतन्त्रता क`बाद आधुनिक भारत मे निर्माण के लिए शिक्षा को राष्ट्रनिर्मिती का साधन मानते हुए पूर्व प्राथमिक शिक्षा से उच्चशिक्षा तक विचार होता रहा। जिसमें रामकृष्णनन आयोग, माध्यमिक आयोग, कोठारी आयोग, ईश्वरभाई आयोग, आचार्य राममूर्ति आयोग, जनार्दन रेड्डी आयोग, प्रो.यशपाल आयोंगो का समय के साथ गठन करते हुए शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के प्रयास होते रहे। के गॅट करार के बाद नीजीकरण के परिणाम स्वरूप ; भारतीय शिक्षा पर विदेशी शिक्षा प्रभाव तेजी से बढ रहा है। साथ ही विदेशी शिक्षा संस्थाओं के आगमन से विश्वभर का ज्ञान - विज्ञान भारतीय समाज का व्यक्ति प्राप्त कर रहा है। परंतु, फिर भी शिक्षा के बढने शुल्क, विदेशी शिक्षा से मुकाबला करना यह प्रश्न आज के समाज के सामने खडे है। फिर भी शिक्षा का अधिकार समाज के प्रत्येक बालक को प्राप्त हो इसलिए सरकार की तरफ से प्रयास चल रहे है। समाज के प्रत्येक बालक को शिक्षा का अधिकार प्राप्त होने के लिए शासन के साथ - साथ समाज का योगदान भी आवश्यक है।

अध्याय दो:

सन्दर्भ संकेत

1. डॉ. नीता पांढरपांडे - 'हिन्दी उपन्यासों मे शैक्षिक समस्याएँ,' पृ - 18
2. डॉ. नीता पांढरपांडे - 'हिन्दी उपन्यासों मे शैक्षिक समस्याएँ,' पृ - 18
3. डॉ.रामशकल पाण्डेय, डॉ.बीना कपूर - 'शिक्षा के दार्शनिक आधार; पृ - 99
4. वही, पृ - 128
5. वही, पृ - 138
6. डॉ.रामपाल सिंह:शिक्षा सिध्दान्त - लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पृ - 4
7. डॉ.नीता पांढरपांडे - 'हिन्दी उपन्यासों मे शैक्षिक समस्याएँ', पृ - 19
8. वही, पृ - 20
9. प्रा.एल.जी.देशमुख - 'भारतातील शिक्षणाचा विकास', पृ - 6
10. वही, पृ - 6
11. वही, पृ - 10
12. डॉ.नीता पांढरपाण्डे - 'हिन्दी उपन्यासों में शैक्षिक समस्याएँ', पृ - 31
13. आर.ए.शर्मा - 'भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास', पृ - 21
14. वही, पृ - 24
15. वही, पृ - 25
16. वही, पृ - 26
17. एल.जी.देशमुख - 'भारतातील शिक्षणाचा विकास', पृ - 34
18. डॉ.के.पी.माथूर,'भारतीय शिक्षा का इतिहास;विकास एवं समस्या पृ - 7
19. वही, पृ - 6
20. अनिल कुमार पाण्डा,'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ पृ -27
21. वही, पृ - 28
22. आर.ए.शर्मा - 'भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास', पृ - 43

23. वही, पृ - 63

24. अनिलकुमार पाण्डा,'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ'पृ- 50

25. वही, पृ - 54

26. डॉ.नीता पांढरपांडे,'हिन्दी उपन्यासों में शैक्षिक समस्याएँ', पृ - 37

27. अनिलकुमार पाण्डा,'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ',पृ - 56

28. डॉ.नीता पांढरपांडे - 'हिन्दी उपन्यासों में शैक्षिक समस्याएँ', पृ - 44

29. के.पी.माथूर - 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ', पृ - 24

30. अनिलकुमार पाण्डा - 'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ', पृ - 138

31. डॉ.नीता पांढरपांडे - 'हिन्दी उपन्यासों में शैक्षिक समस्याएँ', पृ - 46

32. आर.ए.शर्मा - भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास', पृ - 322

अध्याय तीन

मैत्रेयी पुष्पा के शैक्षिक समस्याओं पर चर्चा करनेवाले उपन्यास

'इदन्नमम', 'चाक', अल्मा कबूतरी, विजन का संक्षिप्त परिचय

3.0 विषय प्रवेश :-

लेखक अपने समय का चित्रकार होता है। जिस परिवेश में वह जीता है; उसके सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिकता को लेकर कभी वास्तविक तो कभी काल्पनिक घटनाओं को लेकर अपना रचना संसार बुनता है। मैत्रेयी पुष्पा समकालीन साहित्यकारों में अपने परिवेश को लेकर उभरी लेखिका है वह जिस गांव, समाज में पली - बढी वही उसके साहित्य का मुलाधार है। जमींदारों, सरमजामशाहों और अंग्रेज अधिकारियों के कुर्की - निलामी के पाटो पीसनेवाले माहौल में मैत्रेयी पुष्पा का जन्म हुआ था। परंतु देश के आजादी के सुंदर ख्वाब देखनेवाले भारतीय समाज में मैत्रेयी पली - बढी और उसी ख्वाब को टूटते हुए छटपटाते भारतीय समाज का चित्रण मैत्रेयी के साहित्य का मूलाधार बना। भारतीय समाज के श्वास रहे ग्राम आज कौन से अवस्थाओं से गुजर रहे है, इसका यथार्थ चित्रण मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य है। आज के भारतीय ग्रामों की स्थिती के बारे में विवके राय कहते है। ''आज गॉव का अर्थ अशिक्षित,असहाय,निराधार,नंगे - भूखे बेरोजगार, कुंठित लोगों का एक अंधकाराछन्न संस्कार जो पुराना रह न सका और नया आकार भी ग्रहण न कर सका।'' 1

स्वतन्त्रता के बाद ग्रामों के राजनीतिक आर्थिक जीवन में तेजी से बदलाव आता गया। हरित क्रांती, श्वेतक्रांति, शिक्षा क्रांति पंचवार्षिक योजनाओं के परिणामस्वरूप गांव के जीवन में उथल - पुथल मचा दी 'तंत्र' और 'यंत्र' दोनों के संपर्क से गांव के लोगों के जीवन में बनता - बिगडता परिवेश निर्माण हो गया। देश के विकास को ध्यान में लेकर अनेक योजनाओं का आगमन ग्रामों में होने लगा, जिससे प्रभावित लोक - जीवन का यथार्थ चित्रण मैत्रेयी ने अपने साहित्य में किया है। बनते - बिगड़ते गावों की छटपटाहट मैत्रेयी का साहित्य है। जिन्ह गावों में आरोग्य, जल, बिजली, शिक्षा जैसी प्राथमिक सुविधाएँ भी आज नहीं पहुँची है और जहॉ वह सुविधाएँ प्राप्त करा दी जाती है; वह गॉव के राजनीति में बीच में ही हडप ली जाती है। ऐसी स्थिती में जीनेवाले गावों का

चित्रण 'इदन्नमम' , 'चाक', अल्माकबूतरी उपन्यासों में यथार्थता से स्पष्ट होता है। तो 'विजन' में मैत्रेयी पढे - लिखों के संसार में भी स्वार्थांधता से इन्सानियत के कलंक लगाने का व्यापार चलता है। इसका यथार्थ चित्रण करते हुए। भारतीय समाज शिक्षा के अभाव में आज भी यहाँ की जनता 'आजादी' का अर्थ समझ नही पाई है, 'आजादी' उसके आस - पास भी नजर नही आ रही है। उन्हें आजादी का आनंद देना हो तो शिक्षा का प्रचार - प्रसार आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रखकर मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में शिक्षा समस्याओं पर विचार प्रस्तुत किये है। प्रस्तुत अध्ययन ऐसे ही शिक्षा से सम्बन्धित उपन्यासों पर आधारित है।

3.1 'इदन्नमम' :-

'इदन्नमम' मैत्रेयी पुष्पा का तिसरा उपन्यास है, 1994 में प्रकाशित 368 पृष्ठों के इस उपन्यास ने मैत्रेयी पुष्पा के लेखकिय व्यक्तित्व का परिचय भारतियों को करा दिया। बुंदेलखण्डिय ग्रामजीवन पर आधारित 'इदन्नमम' उपन्यास ख्यातिप्रधान रहा है।

बुंदेलखण्ड प्रदेश के पर्वत - पहाडी इलाके के दूर - दराज में बैठे गांवो का चित्रण 'इदन्नमम' की पृष्ठभूमि है। 'सोनपूरा' गांव के प्रधान महेंद्रसिंह अपने गाँव की महत्वपूर्ण प्राथमिक आवश्यकता 'अस्पताल' का निर्माण करना चाहते है। परंतु, राजनीतिक तीकडमबाजी का शिकार बना महेंद्रसिंह अस्पताल के उद्घाटन समारोह के समय ही विरोधी पार्टी द्वारा मारा जाता है। महेंद्रसिंह के हत्या के बाद उसकी पत्नी 'प्रेम' जीजा रतन यादव के साथ भाग जाती है। टाऊन एरिया का चेअरमन रतन यादव उनके स्त्रियों को फसाकर जमीन हडप लेता है। रतन यादव के कहने पर प्रेम की जायदाद की इकलौती वारिस 'मंदाकिनी' को पाने के लिए 'प्रेम' अपनी सास 'बऊ' पर मुकदमा चलाती है। अपने खानदान की अंतिम निशानी 'मंदा' को बचाने के लिए बऊ अपना गांव छोडकर 'श्यामली गांव' के प्रधान 'पंचमसिंह दादा' के द्वार पहुँच जाती है।

'श्यामली' गांव का दादा पंचमसिंह सहित तीन भाईयों का संयुक्त परिवार गांव के लिए आदर्श था। दादा पंचमसिंह के बेटे विक्रमसिंह का बेटा 'मकरंद' गांव में ही शिक्षा ले रहा है। मझले भाई गोविंद सिंह खेती - बाडी देखते है। उनके बेटे यशपाल का कुसमा के साथ विवाह हुआ है। परंतु वह निसंतान होने के कारण यशपाल दुसरा विवाह करता है। दादा पंचमसिंह के छोटे भाई अमरसिंह अविवाहीत है, साथ ही तपेदिक के मरीज। इनके

अलावा डबल बब्बा इस घर में सेवक के रूप में कार्यरत है। टूटते - बिखरते परिवार के माहौल में दादा पंचमसिंह का परिवार गांव के लिए एकता का आदर्श उदाहरण है। गांधीवादी विचार के धरोहर दादा पंचमसिंह, मोदी लल्ला और चीफ साहब तीनों राष्ट्रीय एकात्मता के पुरस्कर्ता है। जिन्होंने 'श्यामली गांव' में कभी विभेद होने नही दिया था। राष्ट्रीय एकात्मता का प्रतिक 'श्यामली' गांव का वर्णन करते हुए 'बऊ' कहती है - ''धरती आसमान का अन्तर है। सोनपुरा और श्यामली गांव में फरक ही फरक है। यहीं की तो रीति - रसम ही अलग है। शहरों में कुछ भी होता रहे, अंगरेजी पढे लोग न माने जाति - बिरादरी, पर अपने गॉव - पुरबों में ऐसी अनीत नहीं है अभी।'' 2

श्यामली गांव में पनाह पाई 'बऊ' मुफ्त की रोटी खाने से मना करती है। अपनी जमीन की देखभाली भाई गोविंदसिंह के हाथ सौंप देती है। अकलेपन को महसूस करनेवाली 'मंदा' की दोस्ती दादा पंचमसिंह के पोते मकरंद के साथ हो जाती है और समय के साथ वह प्रेम में बदलती है। आधुनिकता कि लहर और भौतिक सुख - सुविधाओं के चपेट में आया गोविंदसिंह के अंदर का स्वार्थ जागृत हो जाता है और दादा पंचमसिंह को 'मंदा' को लेकर शुरू मुकदमा चलाने से रोक लगता है। मंदा की जमीन हडपने के हेतू 'मंदा' की सगाई घर के लडके से ही करने को बात करता है। बऊ 'मंदा' और 'मकरंद' के बीच के लगाव को देखते हुए मंदा और मकरंद की सगाई के लिए तैयार हो जाती है। परंतु सगाई के बाद 'मंदा' के जीवन में भटकाव आ जाता है। पुलिस के गिरप्तारी से बचने के लिए चीफ साहब की बहन अनवरी के घर, तो कभी ओरछा के गढी में, तो कभी भारत मामा के गांव मंदा को रूकना पडता है। भारत माता के गांव में कैलास मास्टर मंदा पर बलात्कार करता है। अंदर से टूटी हुई 'मंदा' को बहू के रूप मे स्वीकारने से मकरंद की मॉ इन्कार कर देती है। सगाई टूट जाने पर सात साल बाद बऊ मंदा को लेकर अपने गांव 'सोनपूरा' लौट आती है।

स्वतंन्त्रता के बाद देश के विकास के लिए अनेक पंचवार्षिक योजनाओं का निर्माण करते हुए कृषि उत्पादन में वृध्दि, आय का समुचित वितरण करते हुए, दरिद्रता निर्मुलन और नए कार्य क्षेत्र पैदा करते हुए; बेकारी दूर करना इन्ह उद्देशों को पूरा करने के लिए सरकारने ग्रामीण क्षेत्र में अनेक कल - कारखाने, बॉध परियोजना, बिजली परियोजना बनायें। परंतु, कल - कारखानों के माध्यम से जमीदारी से कारखान मालिक बने नये

सामंत वर्गों ने भारतीय समाज के किसान, मजदूर, गरीब श्रमजीवी वर्ग का शोषण निरंतर जारी रखा । परिणामस्वरूप ; अपनी मुक्ति के लिए 'हिंसा' तक उतरने वाले श्रमजीवी लोगों ने अपने गणतंत्रिक देश में अपने अधिकार के लिए संघर्ष प्रारंभ किया । 'मंदा' अपने गांव आने पर पिता का अधुरा सपना 'अस्पताल' शुरू करने के संकल्प से गांव में प्रवेश तो करती है । परंतु, गांव की खेती क्रेशर मालिकों और अभिलाखसिंह जैसे ठेकेदारों के हाथ में चली जाने के कारण गांव का किसान, मजदूर बनकर अपने ही भूमी में खानाबदोश की जिंदगी जी रहा है । व्यथित हुई मंदा कोयले के महाराज से पारीछा गांव की कहानी सुनती है । वहाँ के लोगों ने अपने हक्क के लिये जागृत होकर संघर्ष करते हुए, अपने अधिकार को प्राप्त किया था । पारीछा गांव की कहानी सुनी अल्पशिक्षित 'मंदा' अपने गांव में भी परिवर्तन लाने का संकल्प उठाती है और सदियों से प्राथमिक सुविधाएँ आरोग्य, शिक्षा, बिजली, जल, जैसी सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए संघर्ष खडा कर देती है -'' ''सो जागो रे जागो । चेतो रे चेतो । छोटे - बडे, नन्हें - मुन्ने, बूढे - पुराने, नये जवानों के अलावा ढोर - चोंपे, परेवा - पंछी, नदी - ताल, पेड - रूख, हवा - पानी यहाँ तक कि दिसों दिशाओं को जगाना होगा । बचने - बचाने को जूझना होगा । अमीर - गरीब, शत्रु - मित्र सब को शामिल होना होगा इस यज्ञ में । समय पडे तो समिधा - सामग्री भी बनना होगा । बात होम की है । बात आन्दोलन की है ।'' 3 गांववालों में शोषण के विरूध्द खडा करते हुए मंदा अनेक संघर्षो से गुजरते गांव का प्रतिनिधित्व करती है । जिसमें उसे गंदी, स्वार्थी राजनीति, भ्रष्टाचार, पुलिस, सरकारि अफसरों कि कुनीतियों का सामना करना पडता है । परंतु, मंदा अपने संकल्प पर अटल रहते हुए अपने गांव मे आरोग्य, शिक्षा, बिजली जैसी सुविधाएँ लाने के लिए संघर्षशील रहती है । 'इदन्नमम' में 'शिक्षा' समस्यापर विचार रखते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने सोनपुरा, गोती जैसे ग्रामों के माध्यम से शिक्षा की असुविधा और समस्याओं पर दृष्टी डाली है । साथ ही भृगुदेव के माध्यम से दलित शिक्षा समस्याएँ प्रस्तुत की है । 'मकरंद' के 'इलाहाबाद' में डाक्टरी पढते समय आये अनुभवों के माध्यम से शहरी शिक्षा समस्याओं पर विचार रखते हुए । शिक्षा क्षेत्र में फैली कुरीतियों पर प्रकाश डाला है ।

'इदननमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने स्वतन्त्रता के बाद आधुनिकता के होड में लगे ग्रामीण जीवन का चित्रण करते समय गांवों में स्थित रूढी - प्रभा - परम्परा,

अंधविश्वास, नारी शोषण, अवैध यौन - सम्बन्ध, जातीय एवं साम्प्रदायिक तनाव, किसान से मजदूर बने लोगों का जीवन, वनों से भगाये गये आदिवासी मजदूर, शोषक और गुंडाई प्रवृत्तियों, गंदी राजनीति, हत्याकांड, जमीन - जायदाद की हडपनीति, चुनावी नीति, जातीय - धार्मिक, साम्प्रदायिक भेदभाव, डाकूओं का आंतक, रिश्तों में उभरनेवाले तनाव, टूटते - बिखरते संयूक्त परिवार, सरकार विरूध्द आन्दोलन, प्रशासकीय भ्रष्टाचार, गांव की आरोग्य, शिक्षा की समस्याएँ वहाँ के लोगों की भाषा, संस्कृति का यथार्थ चित्रण करते हुए ; प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप संक्रमण अवस्था से गुजरते ग्रामीण भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण 'इदन्नमम' की कथावस्तु है। जिसमें एक अल्पशिक्षित नारी 'मंदा' परिवर्तन का मेरूदंड उठाती है और गांव में क्रांती लाती है। विद्या सिन्हा 'इदन्नमम' के बारे में कहती है - ''भाषा की स्थानीयता, सामाजिक, व्यक्तिगत, राजनीतिक, आर्थिक - संघर्ष के बीच भरपूर स्थानीय यथार्थ को उभारते हुए स्त्री की संघर्षशीलता और सार्थकता ढुँढने की संवेदनशील आंचलिक कथा कही गई है।'' 4 इस तरह 'इदन्नमम' मे बुंदेलखण्ड अंचल की स्वतन्त्रता के बाद बदलते झा किया प्रस्तुत करते हुए औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप टूटते बिखरते ग्रामांचल के परिदृश्य का यथार्थ चित्रण है।

3.2 'चाक' :-

'चाक' मैत्रेयी पुष्पा का 1997 में प्रकाशित चौथा उपन्यास है। ब्रजप्रदेश के 'अंतरपुर गाँव' का स्वतन्त्रता के बाद बदलते परिवेश का चित्रण है। राजनीति और शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार इन्ह दो मुद्दो के इर्द - गिर्द घूमनेवाली कथावस्तू स्वतन्त्रता के बाद ग्रामीण भारतियों मे राजनीति को लेकर आई सजगता और सत्ता लोलुपता के कारण खेली जानेवाली गंदी राजनीति 'अतरगाँव' के माध्यम से लेखिका ने पाठक के सामने चित्रित की है। गंदी राजनीति के साथ - साथ समाज में बढते भ्रष्टाचार का चित्रण शिक्षा क्षेत्र के माध्यम से करते हुए भारतीय समाज के उन्नति में पाँव अडानेवाले स्वार्थी राजनीति लोग और भ्रष्ट नौकरशाह के कारण आज भी ग्रामीण समाज 'शिक्षा' जैसी आवश्यकता प्राप्त करने से कोसो दूर है। अशिक्षित लोगों के अज्ञान का फायदा उठाते हुए राजनीति और भ्रष्टाचार के माध्यम से आज के गाँव का चित्रण किया है।

'चाक' उपन्यास की कथावस्तु नायिका 'सारंग' की फुफेरी बहन 'रेशम' की हत्या से होती है। 'रेशम' का पति करमवीर फौज में विषैली दारू पिकर मर जाता है और पच्चीस साल की नवजवान युवती रेशम अपनी यौन भावनाओं पर काबू न पाति हुए पति देहांत के बाद ५ महिने की गर्भवती है। घर की इज्जत को ध्यान में रखते हुए उसके घरवाले उसकी शादी देवर डोरिया से कराना चाहते है। परंतु रेशम विवाह के लिए राजी नही होती। ससुरवाले उसे बच्चा गिरवाने के लिए कहते। उस बात का भी वह इन्कार करती है। 'रेशम' को समझा - बुझाकर, डरा - धमकाकर डोरिया के साथ शादी के लिए राजी करना चाहते थे। परंतु इन्कार करनेवाली रेशन को बिछौरे में धुसकर कंडे बाहर फेकनेवाली बिछौरे को गिराकर ही उसे मार दिया जाता है और इस हत्या को एक हदसा शाबित किया जाता है।

ग्यारहवीं कक्षा तक पढी सारंग अपनी बहन रेशम की हत्या से बैचन हो जाती है औ पती रंजीत के हाथों देवर दलवीर की सहायता से गिरफ्तार करवाती है। परंतु डोरिया का बडा भाई गांव का हेडमास्टर थानासिंह गवाहों को खरीदकर डोरिया को छूडवा लाता है। और रंजीत के पिता गजाधरसिंह और डोरिया के पिता साधजी इन्ह दो परिवारों में दुश्मनी शुरू होती है।

डोरिया सारंग की धौरी गाय के बछडे को जहर देकर मार देता है और संदेश देता है कि सारंग का एकलौता बेटा 'चंदन' को भी मार देगा। जिससे परेशान होकर सारंग, रंजीत और गजाधरसिंह चंदन को पढने के लिए दलवीर दरोगा के पास आगरा भेज देते है। चंदन के आगरा जाते समय सारंग को अपना बचपन याद आ जाता है। सौतेली माँ के डाह के कारण उसे गुरूकुल भेजा जाता है। गुरूकुल में कडे अनुशासन में लडकिया पढती - बढती है। परंतु, अपने यौन भावनाओं को रोक न लगाने के कारण शारदा, शकुंतला जैसी लडकियों को माताओं द्वारा किए गए अत्याचारों का शिकार होना पडता है। तब सारंग अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती है जरूर परंतु लडकियों को उकसाने के कारण उसे गुरूकुल से निकाल दिया जाता है। गुरूकुल में पढी - बढी सारंग अपने घर से दूर रहने का दु:ख मालूम है। इस कारण वह चंदन बिछोह में दु:खी रहने लगती है यहाँ तक की वह तीज - त्यौहार भी भूल बैठती है। 'अतरपुर' गांव का प्रधान एक स्वार्थी राजनीतिक नेता का प्रतिक है। ग्रामविकास का स्वागं करके गांव के विकास के लिये

आये फंड हडप लेता है। सरकारी अफसरों, अहलकारों से मेलजोल रखनेवाला फत्तेसिंह धूर्त, चालाक, भ्रष्टाचारी एवं पद लोलुप है। फत्तेसिंह प्रधान का बडा लडका हुकूमसिंह है। जिसे वह गांव के स्कूल के हेडमास्टर थानासिंह के गैरहाजिरी में काम करवाता है और थानासिंह उसे महिन तीन सौ रूपये देते है। इस तरह फत्तेसिंह अपने बेरोजगार हुकमा को नौकरी पे लगाता है और उसका छोटा लडका राकेश गांव के स्कूल में पढता है। जो चंदन का सहपाठी था। थानासिंह मास्टर भी स्कूल मे भ्रष्टाचार करता है। बच्चों को फेल करके टयूशन लेनी की तरकीब निकालकर अनपढ गांववालो को फसाता रहता है। उनके विरूध्द जानेवाले नेकसे मास्टर को आफिम खाकर स्कूल मे सो जाने का झूठा इल्जाम लगाकर उसका तबादला करा देते है। इस तरह भ्रष्टाचार के माध्यम से फत्तेसिंह प्रधान और थानासिंह मास्टर मिली भगत करते हुए पैसा कमाते रहते है।

'अतरपुर' गॉव में बांदीपूर से तबादला होकर नये मास्टर श्रीधर प्रजापति नियुक्त होते है । श्रीधर प्रजापति नेक, ईमानदार, भ्रष्टाचार का विरोध करनेवाले है उन्होंने बादीपूर में केका नाम की अत्याचारित एवं पीडित नारी की सहायता की थी । परिणामस्वरूप गांववालों ने उन्हें गांव से निकाल दिया था। परंतु कुम्हार जाती के श्रीधर ने बचपन से ही समाज की प्रताडना सही थी। निम्नजाती और गरीबी के कारण पनाह में पले बडे मास्टर बच्चों के जीवन को शिक्षा के माध्यम से सही आकार देना ही अपना धर्म समझते है । चट्टा चौथ के त्यौहार के समय श्रीधर मास्टर सारंग के घर आते है वह श्रध्दापूर्वक उसके पॉव पूँजती है। उसे लगता है कि, श्रीधर ही उसका चंदन से बिछोह का दु:ख समझ लेगा और सहायता करेगा। किंतु, सारंग ने श्रीधर मास्टर के पॉव छुने को लेकर गांव में चर्चा होती है, पति रंजित भी नाराज हो जाता है।

'चंदन' को गांव वापिस बुलाने की बात सारंग के मन में बार - बार आती है और दुश्मन डोरिया को कुश्ती में हराने के लिए वह चचेरे देवर भॅवर के जीजा नाडफवाले के केलासिंह को गांव में बुलाती है। डोरिया केलासिंह के हाथों कुश्ती में हार जाता है। सारंग ने ही केलासिंह को बुलावया था, यह खबर गांव में फैल जाती है और घरवाले भी उसपर नाराज हो जाते है। फत्तेसिंह प्रधान थानासिंह और रंजीत के घर की दुश्मनी भूलाने की बात करता है। परंतु फिर भी भूरा द्वारा रंजीत के बीच रास्ते में पिटाई की जाती है।

फत्तेसिंह प्रधान ग्रामविकास के नामपर स्कूल की पुरानी इमारत की जगह नई इमारत बनवाने के लिए आये पैसे हडपना चाहता है। इस घिनौने काम में वह हेडमास्टर थानासिंह और रंजीत को शामिल करवा लेता है। फंड की अर्जी पर श्रीधर मास्टर की दस्तखत की आवश्यकता है जो ईमानदार श्रीधर दस्तखत करने के लिए राजी नही होता है। उसे प्यार से डरा - धमकाकर समझाने की कोशिश कि जाती है, अंत मे गुंडो द्वारा श्रीधर मास्टर को पिटवा दिया जाता है।

एक रात सारंग श्रीधर मास्टर को देखने बीबी के घर जाती है और अपना सर्वस्व उसे समर्पित करती है। इस बात को लेकर पती रंजीत द्वारा बार - बार पीटती तथा प्रताडीत होती रहती है। परंतु अपने बच्चे चंदन को घर वापस बुलाने की चाह में वह श्रीधर मास्टर का साथ देती रहती है। एक दिन चंदन भी अपने चाचा के घर से भाग आ जाता है। चंदन के आ जाने पर सारंग खुश रहने लगती है। परंतु पती रंजीत फत्तेसिंह प्रधान के चंगुल मे फसकर गांव के चुनाव में उतरने के ख्वाब देखने लगते है। परंतु, चुनाव के लिये योग्य सारंग ही यह बात - श्रीधर मास्टर, देवर भँवर और ससूर गजाधरसिंह उसे समझा देते है। सारंग प्रधानपद के लिए पर्ची भर देती है पती रंजीत के समझाने पर भी वह अपना नाम वापस नही लेती है। सारंग की जीत पक्की है यह देखकर गांव के प्रधान फत्तेसिंह, रंजीत, गिरीश, यागी, सुलेमानसिंह बुथ कैच्चारिंग की योजना बनवाते हैं। इस तरह पढी - लिखी औरत सारंग ईमानदार श्रीधर मास्टर की साहयता से गांव में परिवर्तन लाना चाहती है। गांव की गंदी राजनीति और शिक्षा क्षेत्र के भ्रष्टाचार को मिटाने का दोनो का भरकस प्रयास ही परिवर्तन का 'चाक' है। जिसे घुनाने का कार्य सारंग और श्रीधर मास्टर, जैसे लोग की कोशिश कर रहे है यही 'चाक' की कथावस्तु का लक्ष्य है।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' के माध्यम से भारतीय गाँवों की शैक्षिक स्थिति का यथार्थ चित्रण करते हुए भ्रष्टाचारी थानासिंह हेडमास्टर का चित्रण करते हुए, शिक्षा क्षेत्र में स्थित भ्रष्टाचार बच्चों को फेल करना, अशिक्षित माँ - बाप से पैसों की लूट करना। अपने पद को गल इस्तमाल करते हुए, अपने जगह खुद की गैरहाजरी में प्रधान फत्तेसिंह के बेटे हुकूमसिंह को महिना तिन सौ रुपये पर रखना। प्रधान फत्तेसिंह से मिली - भगत करते हुए, सरकारी फंड के पैसे हडपना। ईमानदार श्रीधर मास्टर को पटिवाना आदि का चित्रण करते हुए शिक्षा व्यवस्था में स्थित समस्याओं का यथार्थता से चित्रण किया है। साथ ही

गांव के तीज - त्यौहार, संस्कृती, रीति - रिवाज रूढी - परंपराओं का चित्रण करते हुए संक्रमण स्थिती से गुजरते गांवों, का यथार्थ चित्रण 'चाक' के माध्यम से किया है।

3.3 अल्मा कबूतरी :-

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास लेखन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का साहित्यिक क्षेत्र में एक अलग, प्रशंसनीय प्रयास है। अंग्रेजी शासन काल मे भारत देश में जिन्हें अपराधी गन्हेगार जन - जातियॉं करार कर दिया था वह स्वतन्त्रता के बाद अपना व्यक्तिस्वातं™य प्राप्त करने के लिए किस प्रकार संघर्ष कर रही है इसका दस्तावेज 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास है।

'अल्मा कबूतरी' कि कहानी कबूतरी कदमबाई और कज्जा समाज के मसाराम से शुरू हो जाती है। कज्जा लोग अपराधी जातियों का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग कर लेते है और समय आने पर उन्हे खत्म कर देते है इसका उदाहरण कदमबाई का पति जंगलिया है। जंगलिया को मारकर मसाराम कदमबाई को प्राप्त करता है। कदमबाई का बेटा 'राणा' मंसाराम का ही अंश है। जिस कारण कदमबाई मंसाराम की और आकर्षित हो जाती है। कदमबाई और मसाराम की प्रेमकहानी गांव के संस्कारों से टकराहट करती हुये आगे बढती है। 'राणा' को मसाराम के बेटे से दोस्ती हो जाने पर पढाई करने की इच्छा जागृत हो जाती है। परंतु, जिस समाज ने सदियों से दलित, शुद्रों को शिक्षा से दूर रखा वह कज्जा समाज स्कूल जाते राणा पर अत्याचार करता है।

''मास्टरजी ने कहा दिया था - तू नल नहीं छुएगा। नल के आसपास भी देख लिया तो ... याद रखना, यहॉं सिपाही आते हैं, पकडवा दुँगा।

प्यास के कारण उसका गला चटकने को आ गया, नल नहीं छू सका।

''पानी !''

मास्टरजी ने सुझाव दिया, 'तालाब में से पीकर आ।'

राणा देखता रह गया। पॉंचवी कक्षा का बच्चा। 'पानी की स्वच्छता वाला पाठ अभी दो दिन पहले ही पढाया था। मास्टरजी को पता नहीं कि तालाब में कज्जा लोगों के बच्चे टट्टी पेशाब फेंकते हैं। औरतें - आदमी शौचते हें।'' 5

इस तरह आदिवासी अपराधी जाति के राणा को शिक्षा ग्रहण करते समय उच्चवर्णियों लोगों के अन्याय - अत्याचार का शिकार होना पडता है। स्वतन्त्रता के बाद

भी आज इन्ह जातियों को मनुष्यत्व के अधिकार प्राप्त नही हुए है। आज भी वह गांव के बाहर बस्ती बनाकर जीते है। कज्जा लोगों की तरह जीवन जीने की हरकत भी की तो उन्हें एक ओर फिर पटक दिया जाता है। कबुतरा जाति के जिंदगी के बारे में मैत्रेयी पुष्पा कहती है। ''हमारा जो समाज है वह एक ही समाज नहीं है, उसमें टुकडे - टुकडे हैं। उसका ही एक टुकडा है अपराधी जनजाति समाज का, टुकडा नहीं, वह कुचला हुआ समाज है। वह ऐसा टुकडा है जिसके पास अपना कुछ नहीं है। न खेत, न घर, न मजदूरी। उसके पुरूष के पास जब कुछ नहीं है तो वे चोरी करते हैं, चोरी उनका पेशा है। सभ्य समाज के लोग अपने अपराधियों की जगह उनका उपयोग करते हैं। यह उनकी नियति है कि वे दूसरे अपराधियों की जगह जेल में रहें। वे कहते है। चोरी हमारा पेशा है, बलकतरी हमश पेशा है, गाय - भैंस चुराना हमारा पेशा है और स्टार्टर चुराना हमारा पेशा है, तो ऐसे लोग या तो जेल जाते हैं या जंगल में छिप जाते हैं। उनकी औरतें रह जाती हैं जिनके पास शराब बेचने के अलावा कुछ नहीं रह जाता। गॉव में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता। मुर्गिया, कलंदर, कबूतरा वगैरह को गॉव में नहीं घुसने नहीं दिया जाता। उनके रास्ते भी अलग होते हैं। झाड - झंखाडों में होते हुए कहीं के कहीं पहुँचते हैं। शराब बनाने की सामग्री भी छिपाकर लाते हैं। उनके लिए सडक भी नहीं है, और सुविधाएँ भी नहीं है, उनके बच्चें स्कूलों में नही पढ सकते। औरतें अगर खेतों में निकलती हैं तो लोग उनका शरीर देखते हैं। किसान कहते हैं कि पहले इधर चल तो औरत कहती है, चल, पहले इधर ही चल। उसे यह सब करना होता है वरना उसके बच्चे और घरवाले भूखे मर जाएँगे।'' 6

इस तरह सदियों से कुंचला जानेवाला यह समाज मनुष्य के अधिकार की मॉंग करने की कोशिश करता है तो उसें लाखो यातनाओं से गुजरना पडता है। 'अल्मा कबूतरी' में 'अल्मा' का पिता रामसिंह को पढाने की कसम उसकी मॉं भूरी कबूतरी लेती है, तब उनका समाज पहले उसका विरोध करता है, परंतु मनुष्य के अधिकार, मनुष्य की तरह जीवन जीने का ख्वाब देखनेवाली भूरी अपने बच्चे रामसिंह को पढाती है। उसके बदले अपना शरीर कज्जा लोगों को समर्पित करती जाती है। हर दिन के बलात्कार को झेलती भूरी कबूतरी अपने रामसिंह को अध्यापक बनाती है। परंतु, किसी अपराधी जाति ने अध्यापक बनन्या ना मंजूर करनेवाला समाज उसे बार - बार पुलिस थाने में ले आता है। सरकारी अफसरों को रिश्वत देकर तंग आकार रामसिंह नौकरी छोड देता है। पढ -

लिखकर अपने समाज में सुधार लाने की सोच रखनेवाले रामसिंह कि पढाई अपने जात - भाइयों को जेल से छुडवाने के लिये काम आती है । रामसिंह नौकरी छोडकर अपने जात - भाईयों को जेल से छुडवाने का काम करता बदले में पुलिस को रिश्व देता है । नही तो किसी कज्जा आदमी के गुन्हा की जगह अपने जात भाई को गुन्हेगार बनाकर खडा कर देता है । परंपरा से आई वर्णव्यवस्था के सामने हारा हुआ रामसिंह अपने बेटी अल्मा को पढता है । वह अंग्रेजी तक पढ - बोल सकती है । जंगल में अपनी झोपडी में अल्मा को शिक्षा देनेवाला रामसिंह लडकी के लिये पढा लिखा वर ढुँढना चाहता है और कदमबाई के यहाँ पहुँच जाता है ।

अल्मा और राणा के रिश्ते की बात हो जानेपर रामसिंह राणा को लेकर अपने घर चला जाता है । वहाँ अल्मा और राणा में अपनत्व बढ जाता है । परंतु वहाँ के माहौल के बारे में राणा के मन में संदेह रहता है । उसे रामसिंह पर ही संदेह होता है कि वही अपने लोगों को पुलिस के हाथ मरने छोड देता है । अल्मा राणा के प्रति पूरी तरह समर्पित हो जाती है । परंतु राणा रामसिंह के घर से भाग निकलता है । रामसिंह पुलिस को खुद को समर्पित करते हुए मृत्यू को अपना लिया था । रामसिंह का मृत शरीर देखकर राणा पागलसा हो जाता है । पागल राणा को लेकर कदमबाई जिंदगी बिताने लगती है और अल्मा अपने ही पिता ने लिए कर्ज को चुकाने हेतू एक से दुसरे के हाथों बेची जाती है । 'अल्मा' का हर जगह शोषण होता रहता है । परंतु राणा से प्रित लगाई बैठी 'अल्मा' हर संकट को पार करती आगे निकल जाती है । डाकू से मंत्री बना रामशास्त्री के मृत्यू के बाद उसकी विधवा घोषित करके उसे चुनाव में खडा किया जाता है । जिसे वह स्विकार करती है, शायद अपने जाति के हित के लिए वह यह निर्णय लेती दिखाई देती काक्ष चुनाव में जित कर अपने जाति को मनुष्य बनकर जीने का अधिकार प्रदान कर सके ।

इस तरह मैत्रेयी पुष्पाने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास के माध्यम से एक अपराधी जाति के स्थिती - गती का वर्णन तो किया ही है, साथ में आज दलित - आदिवासी लागों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त करते समय किन्ह - किन्ह समस्याओं का स्वतंत्र भारत में सामना करना पड रहा है, इसका यथार्थ चित्रण करते हुए; एक संघर्षशील कबूतरा जाति के स्त्री की जिंदगी के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया है ।

3.4 विजन :-

प्रेमचंद के समान अपने समय और समाज को ईमानदारी से प्रस्तुत करने का कार्य समकालीन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा कर रही है। जनवरी 2002 में प्रकाशित 'विजन' यह उपन्यास विशिष्ट 'प्रोफेशन' को केंद्र मे रखकर लिखा गया एक ख्याति प्राप्त उपन्यास है। यह उपन्यास 'मेडिकल फिल्ड' अर्थात नेत्र चिकित्सा' के क्षेत्र पर केंद्रित होते हुए महानगरीय माहौल को अभिव्यक्त करता है। 'विजन' उपन्यास मे स्त्री के शोषण, संघर्ष और साहस की कथा चित्रित की गई है। स्त्री उच्चशिक्षित होकर अपने कार्य को निष्ठापूर्वक न्याय देना चाहती है परंतु पुरूषी अहंम भाव की भारतीय समाज व्यवस्था उसके ज्ञान का उपयोग करके नहीं लेता, बल्की वह स्त्री है इस कारण उसे दबाया रखा जाता है। स्त्री के उच्च शिक्षा के लिए रोक लगाना, उन्हे कॉन्फरन्स में शोधनिबंध प्रस्तुत करने के लिए रोकना, बच्चों के परवरीश में स्त्री की शिक्षा रूकना, लडकों को शिक्षा देने के लिये डोनेशन देना, पढे - लिखें डॉक्टर अध्यापक के द्वार स्त्री मरीज पर बलात्कार करना, पद नियुक्ती में धांदली निर्माण करना आदी शिक्षा संबंधी समस्याएँ और पढ - लिखे करिअरिस्ट स्त्री की उन्नति को रोक लगाना। जिसे परंपरा और रीति - रिवाजों को श्रेष्ठ माननवले पढ - लिखे लोगों का साथ देना, इन्ह विषयों को लेकर 'विजन' कि कथा चलती है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) दिल्ली के नेत्र विभाग मे होनेवाले 'भ्रष्टाचार की पोल खोलने वाला यह उपन्यास मानवीय अवयवों की विक्री किस प्रकार होती है, डॉक्टर लापरवाही ऐ कैसे काम करते है इसका यथार्थ चित्रण रोंगटे खडा कर देता है। 'विजन' कि नायिका नेहा ने 'नेत्र चिकित्सा' मे डॉक्टरी हासील की है। अपने ससुर आर.पी.शरण के नेत्रचिकित्सालय मे वह विपन्न अवस्था में बैठी है। मरीज को गलत इंजेक्शन देने से मौत हो जाने पर अपना 'आपा' खो बैठी नेहा शांत बैठी है। परंतु उसके मन में अशांती का तुफान है। उसे याद आ जाता है, नेत्र चिकित्सा की पदवी ग्रहण करते समय मरीजों की प्रामाणिकता से सेवा करने की ली हुई शपथ और दूसरी और अपने ससुर के नेत्रालय में चलने वाली धॉंधलिया। जिसका विरोध वह नही कर सकती है। क्योंकि उसके पति और परिवार का भविष्य यह नेत्रचिकित्सालय है।

डॉ.नेहा को अपनी पुरानी जिंदगी याद आती है। डॉ.आर.पी.शरण और डॉ.अजय नए यंत्रों - उपकरणों के केवल नाम जानते हैं, प्रयोग करने में उनके हाथ काँपते है। परंतु, वे 'फेको' उपकरण लानेवाले है और 'एक्साइनर' के बारे में भी सोचने लगे है। डॉ. अजय हमेशा पापा का बेटा बनकर रहता है और पिता के हाँ मे हाँ मिलता रहता है, जिससे नेहा दु:खी रहती है। अजय नेहा को कॉन्स्फ्रेंस मे लेजाता है, वहाँ वह डॉ. अभिमन्यू मिश्रा से कहती है पहले आईबैंक्स की धाँधलियों तो काबू में करो। आँख, बैंक में आने से पहले बिक जाता है। पूअर पेशेंटस का दो - दो तीन - तीन साल में नंबर आता है, मगर उसके बाद भी उन्हें आँख नही मिलती। डेढ हजार की आँख चार हजार मे में भी नही मिलती। डॉक्टरी पेशे मे हर जगह फैले भ्रष्टाचार को देखकर वह दु:खी हो जाती है। डॉ.नेहा कॉन्फ्रेन्स मे 'स्क्विंट पर पेपर प्रेझेंट करती है, सब लोग प्रभावित हो जाते है।

डॉ.नेहा अपने ससुराल में सिर्फ देखने दिखाने भर की चीज है। डॉ.आर.पी.शरण नेहा को कभी ऑपरेशन करने का मौका नही देते उसे सिर्फ ओ.पी.डी. सँभालने की जिम्मेदारी दी जाती है। जिससे नेहा दु:खी रहती है। रंगाचारी अवार्ड प्राप्त करने वाली नेहा की योग्यता को डॉ.आर.पी.शरण स्विकारते नही है। बल्की अपने बेटे अजय को डॉक्टर बनाने के लिए सात लाख रुपये डोनेशन देनेवाले डॉ.आर.पी.शरण नेहा को पोस्ट ग्रॅज्युएट करने दिल्ली भेजना नही चाहते है। नेहा झगडा करके दिल्ली उच्चशिक्षा के लिये आती है वहाँ अपनी पुरानी सहेली डॉ.आभा दी; डॉ.आलोक कि स्थिती को जानती है। डॉ. आभा को 'अनुशासन प्रिया' 'फ्रस्टेएिड वुमन' कहते हुए दूर रहते है। आभा के अपने पती डॉ.मुकूल से विभक्त रहती है। जो डॉ.आलोक वरिष्ठ डॉक्टर जगोटा का शिकार होता है। प्रोफेसर पद कि नियुक्ती चाहने वाले डॉ.आलोक को डॉ.जगोटा पुराने केस में फंसाते है और छ.लाख का दावा करते है।

डॉ.नेहा माँ बननेवाली है यह खबर सुनते ही उसकी पढाई रोकी जाती है घर - परिवार और पति अजय से अत्यंत प्यार करनेवाली नेहा अंत मे उच्चशिक्षा की पढाई छोड देती है और ओ.पी.डी. संभालती है। इस तरह डॉ.नेहा और डॉ.आभा दोनों कुशल, मेधावी और संभावनाओं से भरपूर डॉक्टर है। परंतु पुरूष डॉक्टर कभी प्यार, स्नेह और पारिवारिक उत्तरदायित्व का बहाना बनाकर तो कभी षडयंत्र में फँसाकर इन दोनों महिला डॉक्टरों का 'कैरिअर' तबाह करनेवाली 'विजन' कि कहानी नारी शोषण के साथ

- साथ 'डॉक्टरी पेशा' जैसे प्रतिष्ठित पेशे में चलनेवाला भ्रष्टाचार और स्त्री शिक्षा समस्याओं को उजागर करता है।

3.5 निष्कर्ष :-

नब्बे दशक में लिखे मैत्रेयी पुष्पा के ये सारे उपन्यास लोक जीवन का यथार्थता से चित्रण करते हुए समाज में परिवर्तन लाने में शिक्षित नारी सक्षमता से सक्रिय हो जाती है। तो वह समाज में जरूर बदलाव ला सकती है। परंतु पुरूष प्रधान समाज हमेशा, स्त्री का शोषण करते हुए समाज विकास को ही पीछे धकेल रहा है। इस तथ्य को अपने साहित्य के माध्यम से स्पष्ट करना चाहती है। आज समाज पर राजनीतिका गहरा प्रभाव है। प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति ने प्रवेश पा लिया है। मनुष्य का अज्ञान दूर करनेवाला क्षेत्र 'शिक्षा' पर भी राजनीति हावी गई है। जिसमे भ्रष्टाचार बढते के प्रभाव ने 'शिक्षा क्षेत्र' के भविष्य को अंधकारमय कर रखा है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपर्युक्त उपन्यासों के माध्यम से समकालीन शिक्षा व्यवस्था पर दृष्टी डाली है। आज भी स्त्री को शिक्षा से दूर रखा जा रहा है। ग्रामों में शिक्षा कि असुविधाएँ, भ्रष्टाचार, पदप्राप्ती के लिए तिकडमबाजी, गुटनीती, छात्र का अनुशासनही होना, संगठन, हडताल करना, दलित - आदिवासी समाज को शिक्षा से दूर रखना आदि अनेक समस्याओं पर समय सूचक भाष्य करते हुए आधुनिक भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण किया है।

अध्याय तीन

संदर्भ संकेत

१) विवेकराय ‘ स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्रामजीवन’, पृ - १०९

२) मैत्रेयी पुष्पा, ‘इदन्नमम’, पृ - ३३

३) वही, पृ - १९७

४) विद्या सिन्हा, ‘आधुनिक परिदृश्य’, आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास’, पृ - १५०

५) मैत्रेयी पुष्पा, ‘अल्मा कबूतरी’, पृ - ८२

६) मैत्रेयी पुष्पा, ‘मेरे साक्षात्कार’, (संयो - विज्ञानभूषण)पृ - ४४

अध्याय चार

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री शिक्षा समस्याएँ

(उपन्यास - विजन, चाक, अल्मा कबूतरी, इदन्नमम के संदर्भ में)

4.0 विषय प्रवेश :-

मनुष्य जीवन के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। व्यक्ति विकास और जीवीकार्पोजन का साधन बनी शिक्षा का स्थान मनुष्यजीवन में महत्वपूर्ण है। क्योंकि व्यक्ति विकास से समाज, राष्ट्र का विकास होता है। जिस मनुष्यजाती के विकास का माध्यम शिक्षा है; वह मनुष्यजाती स्त्री और पुरूष इन दो भेदों में विभाजित हो जाती है। परंतु, आधा हिस्सा रही स्त्री भारतीय समाज में शिक्षा से दूर ही रही। प्राचीन काल में भारतीय स्त्री को शिक्षा के अधिकार थे गार्गी अपाला, मैत्रेयी इसके उदाहरण है। परंतु उत्तर वैदिकाल में 'मनुस्मृति' ने स्त्रियों की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया। उन्हें वेद पढने और यज्ञ करने से रोका गया तथा सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया।

बौध्द काल में गौतम बुध्द द्वारा बौध्द शिक्षा प्रणाली में स्त्री को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ था। मुस्लमानों ने स्त्री शिक्षा को बढावा नहीं दिया। ब्रिटिशों के आगमन तक भारतीय स्त्री शिक्षा से दूर ही रही। ब्रिटीशों के भारतीय समाज में प्रशासकीय कर्मचारी निर्माण करने हेतू शिक्षा के प्रचार - प्रसार को बढावा देने के हेतू ने भारतीय समाज में आधुनिक विचार प्रवाह प्रवाहित हुये। पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान के आगमन के साथ - साथ भारतीय स्त्री को भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, यह विचारधारा स्वतंत्र संग्राम के समय तेज बनी। तत्कालीन समाज में महिलाओं को आर्थिक पराधिनता, सामाजिक रूढियों तथा परंपराओं, दहेज - प्रथा, बाल - विवाह, सती - प्रथा, अशिक्षा आदि समस्याओं का सामना करना पड रहा था। भारतीय स्त्री के दु:ख, मुक्ति का द्वार शिक्षा ही है इस सत्य को जानते हुए भारत के आद्य समाजसुधारक महात्मा जोतिराव फुले ने अपनी पत्नी क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले को प्रथम शिक्षित करते हुए भारत की पहली स्त्री पाठशाला 1848 में पुना के भीडेवाडा में शुरू की। भारतीय समाजसुधारक राजाराममोहन राय, म.गांधी, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे आदी ने स्त्री शिक्षा संबंधी समाज में जागृती की। भारतीय महिलाओं में

प्रथमत: डॉ.ऐनी बेझंटने स्वतंत्रता संग्राम के समय स्त्रियों को शिक्षा के लिये चेतित किया। सन १९१४ में मद्रास में 'भारत जागो' शीर्षक से भाषण दिया जिसमें भारतीय नारियों को अपनी दासता समाप्त करने, अपने अशिक्षा को समाप्त करने, बाल - विवाह न करने और निम्न जातियों को सम्मानित स्थान प्रदान करने की मांग की। ब्रिटीश काल में भारतीय समाजसुधारकों और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के विचारों से प्रेरणा लेकर भारतीय स्त्री सामाजिक और राजनीति अधिकारों के लिए पुरूषों के साथ - साथ संघर्षरत रही और शिक्षा को महत्व समझकर शिक्षा ग्रहण करने लगी।

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकारने स्त्री शिक्षा के लिए अनेक योजनाओं को चलाते हुए स्त्री शिक्षा का प्रचार - प्रसार किया। आज स्त्री शिक्षित होकर अनेक उच्चपदों पर कार्यरत है। स्वतंत्रता के बाद स्त्री शिक्षा की स्थिती को हम निम्न प्रकार से देख सकते है - ''सन 1882 में 2054 शिक्षित महिलाएँ थी, 1981 में 7 कराडे 615 लाख, 1991 में महिला साक्षरता 39.29 प्रतिशत एवं 2001 में बढकर 53.6 प्रतिशत हो गयी। सबसे अधिक साक्षरता वाला राज्य केरल 90.9 प्रतिशत है। राजस्थान में 43.9 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 42.2 प्रतिशत एवं बिहार में सबसे कम 33.1 प्रतिशत स्त्रियां शिक्षित है।'' 1 आज भी स्त्री शिक्षा का प्रमाण 50 % प्रतिशत ही है। नारी शिक्षा के प्रचार - प्रसार के बाद भी स्त्री के शिक्षा से दूर रहने के कई कारण समस्याएँ है। आज की समकालीन महिला लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में स्त्री शिक्षा पर अहंम सवाल खडे करते हुए स्त्री जीवन संबंधी अनेक सवाल आज के आधुनिक भारत के समाज को पुछे है। इसमें उन्होंने स्त्री शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है क्यों कि वह शिक्षा को स्त्री मुक्ति का द्वार मानती है। अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री शिक्षा का महत्व, उसके जीवन में आनेवाली समस्याओं को उजागर करते हुए आज के आधुनिक युग में भी शिक्षा ग्रहण करते समय भारतीय स्त्री कौन सी समस्याओं से गुजर रही इसका चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में निम्न प्रकार से किया है।

4.1 मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री शिक्षा समस्याएँ :-

सदियों से पुरूष सत्ताक भारतीय समाज ने स्त्री शिक्षा का महत्व रेखांकित नही किया। इस समाज नें लडकों को पढाया और लडकियों को शिक्षा से दूर ही रखा।

स्वतंन्त्रता के बाद शिक्षा के सार्वभौमिकता के कारण स्त्री को शिक्षा का समानाधिकार प्राप्त हुआ। आज स्त्री पढ लिखकर विविध क्षेत्रों में अपना स्थान निर्माण करते हुये देश के विकास में योगदान दे रही है। परंतु, आज भी ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा संबंधी अनेक गलत धारणाएँ स्थित है। आज भी ग्रामीण स्त्री शिक्षा से दूर है, तो शहरी स्त्री को उच्च शिक्षा को ग्रहण करते समय अनेक कठिणाइयों का सामना करना पड रहा है। आज के स्वतंन्त्रत भारत में स्त्री शिक्षा संबंधी कौनसी समस्याओं का सामना कर रही है, इसका यथार्थ चित्रण मैत्रेयी ने अपने उपन्यास - इदननमम, चाक, आल्माकबूतरी, विजन आदि में किया है वह समस्याएँ निम्न प्रकार की है -

4.1.1 संकीर्ण और संकुचित विचारधारा :-

किसी देश, समाज के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक साधन है, स्त्री भी मानव समाज का अभिन्न अंग है। इसलिए किसी भी देश के विकास में पुरूष के समान स्त्री विकास भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परंतु भारतीय समाज परम्परागत रूढियों से जकडा हुआ है ; वह आज भी स्त्री को घर के चहार दीवारों में बंद करके उसके विकास का माध्यम शिक्षा से दूर रख रहा है। इस समाज ने सदियों से अनेक गलत धारणाओं का पालन करते हुए स्त्री को शिक्षा से दूर रखा।

मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका, मंदा पाँचवी क्लास पढी है, अपने सोनपुरा गांव छोडकर 'श्यामली गांव' आई मंदा आगे की शिक्षा ग्रहण करना चाहती है। परंतु भारतीय समाज के सामाजिक मान्यता के अनुसार लडको को पढाया जाता है लडकियों को नही क्यों कि लडके वंशबेल चढते है, घर का जिम्मा उठाते है। इसलिए उन्हें ही पढने का अधिकार है, इस संकीर्ण विचारधार से ग्रस्त नायिका मंदा की दादी बऊ कहती है -

''बऊ दो क्षण मौन हुई देखती रही।'' कल से ही जायेंगे बऊ ! मकरन्द किताबे ला देंगे मोठ से। पइसा दे देना।'' ''बेटा ना! न मन्दा! 'ना ! क्यों बऊ? ''बिटियाँ, और बालकों को होड जिन करो। तुम्हारा बाहर कढना, ही मुसिबत हो पडेगा मन्दा।'' 2

इस तरह भारतीय समाज में बेटा ही बुढापे का सहारा है, बेटी तो पराये घर का धन है। इसलिए उस के शिक्षा पर पैसे खर्च करना यहाँ के समाज को बोझ लगता है। इस तरह स्त्री को जन्म से ही नाकारने वाले इस समाज के संकीर्ण विचार ने स्त्री को शिक्षा से

दूर ही रखा है। परंतु आज स्त्री को शिक्षित करना आवश्यक है। स्त्री शिक्षा के महत्व के बारे में भारत देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने कहा था - ''लडके को शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, किंतु एक लडकी की शिक्षा सारे परिवार की शिक्षा है।'' 3

4.1.2 जन - साधारण का अशिक्षित होना :-

भारत देश एक विशाल जनतन्त्रात्मक देश है; किसी भी देश की जनत्रन्तात्मक प्रणाली को यशस्वती की ओर ले जाने के लिए वहॉ की जनता का शिक्षित होनो आवश्यक होता है। परंतु आज भी भारतीय समाज में अशिक्षित लोगों की संख्या बडी मात्रा में है। इस विशाल देश विविध प्राकृतिक रूपों के कारण पर्वत - पहाडि इलाके के दूर - दराज के गांवों में आज भी शिक्षा का प्रचार - प्रसार नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप जहॉ शिक्षा ही नही पहुँची है उस समाज, गांव के स्त्री का शिक्षित होना दूर की बात है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में दूर - दरोज में बैठे गांव 'अंतरपुर' की शिक्षा स्थिती का चित्रण किया है।

''जादातर औरते अनपढ है, जो पढी - लिखी भी है वे गोबर - पानी के काम में खपकर अपनी विद्या भूल चुकी है। सारंग ग्यारहवी कक्षा पढी है, मगर कोई उससे चिठ्ठी लिखने के लिए कहे तो उसकी उंगलियों और दिल भितरी तहें साथ - साथ कॉपने लगती है।'' 4 अत : स्पष्ट है की आज भी ग्रामीण स्त्री अधिक मात्रा में शिक्षा से दूर है। स्त्री शिक्षा से दूर न रहे इसलिए भारत सरकारने 1959 में राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा परिषद स्थापित की इस भक्तवत्सलम् समिती ने स्त्री शिक्षा संबन्धी सुझाव रखा -

''सरकार को शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने का कार्य सभी स्थानों पर करना चाहिए, जिसमें स्थानिय लोग उनका लाभ उठा सके - भले ही वहॉ थोडे लोग रहते हों। सरकार का यह उद्देश होना चाहिए की वह प्रत्येक तीनसौं की आबादी (जनसंख्या) वाले क्षेत्र में एक प्राथमिक स्कूल स्थापित करें। पहाडी और छितरी जनसंख्यावाले क्षेत्रो में तो तीनसौं से कम जनसंख्यावाले क्षेत्रो में भी प्राथमिक स्कूल स्थापित करें, जिससे कि समस्त जनसंख्या को एक मील के अंदर ही शिक्षा सुविधा मिल जाए।'' 5

इस तरह अशिक्षा, गरीबी आदि कारणों से ग्रामीण समाज के लोग शिक्षा से दूर रहते है और अपने बाल - बच्चों को पढना भी महत्वपूर्ण नही मानते है। इसलिए आज भी आधुनिक भारत में स्त्री शिक्षा का समाज के अशिक्षित रहने कारण उपेक्षा ही हो रही है।

4.1.3 अल्पा आयु में विवाह :-

भारतीय समाज में हिंदू और मुस्लीम धर्मियों की जनसंख्या बडी संख्या में है। इस समाज पर धार्मिकता का गहरा प्रभाव है। हिंदू और मुस्लीम समाज ने सदियों से स्त्री को शिक्षा से दूर हो रखा इस समाज में बाल - विवाह, सतीप्रथा, दहेज - प्रथा और पर्दा प्रथा आदि कुरूढिया आज भी स्थित है। परिणाम स्वरूप ग्रामीण भारत लडकियों की छोटी उम्र मे ही शादी करा दी जाती है। उसे शिक्षा के अधिकार से दूर रखते हुए, अपना कर्तव्य बडा मानकर मॉ - बाप छोटी आयु में ही लडकियों के हाथ पिले कर देते है और उनकी शिक्षा बिच में ही छूट जाती है।

भारतीय समाज में स्त्रियों के अल्पशिक्षित रहने के बारे में जे.सी. अग्रवाल कहते है - ''माता - पिता में लडकियों को स्कूल भेजने के प्रति उपेक्षा भाव, उनमें लडकियों के स्कूल में पढाई के प्रति पूर्वग्रह, उनके घुमने - फिरने, विशेष रूप से यौवनारंभ के बाद बाहर निकलने पर प्रतिबंध छोटी उम्र में शादी और उनपर महिलाओं के दायित्वों को संभालने का दबाव। इनके पीछे पितृतृंत्रात्मक मूल्य और खैया है, जिसका हमारे समाज पर गहरा प्रभाव है।'' 6

इस तरह लडकी पराये घरा का धन और उसके यौनी शुचिता को अनन्यसाधारण महत्व देने के कारण आज भी भारतीय समाज में लडकियों की छोटी आयु में शादी करा दी जाती है।

4.1.4 शिक्षा के प्रति अनुचित विचार :-

भारतीय समाज में लडकों को बुढापे का सहारा और घर चलानेवाला, कमानेवाला उपयोगी मानकर शिक्षित किया जाता है। लडकी पढ लिखकर ससुराल चली जायेगी या उसे शिक्षा दी तो अच्छा घर' प्राप्त हो जायेगा। इस संकुचित विचार से लडकियों के 'शिक्षा' को प्रतिबंध लगाया जाता है। विजन उपन्यास में नेहा के पढे - लिखें मॉ - बाप नेहा की उच्च शिक्षा इस कारण रोकते है की डॉ. अजय शरण जैसा रिश्ता उसे

दुबारा नहीं मिलेगा । नेहा अपने मॉ - बाप का विरोध करती हुई कहती है ।'' मम्मी में सोने के महल में कैद होने नहीं जा सकुंगी ।'' 7 तब नेहा के मॉ - बाप अपनी कर्तव्य का बोस उस पर डालते हुए उसे सुनाते है ।

''तु क्या कह रही है, यह समझती है? पढ - लिखकर यही सीखा है? अपने बडों पर भरोसे के बदले शक संदेह करो, तुझे पेट काटकर पढाया और यह बदला पाया । नेहा . ... सोचा था कि कभी अच्छे दिन.... पर तु आजकल के बच्चों से अलग कैसे हो जायेगी ? मॉ - बाप के गले में रस्सा डालों और मनमाने तौर पर खींचो ।'' कहकर मॉ रूआँसी हो गई ।'' 8

इस तरह शिक्षा के प्रति अनुचित विचार रखते हुए आज के आधुनिक समाज में भी स्त्री को शिक्षा से दूर ही रखा जा रहा है और इसके पीछे महत्वपूर्ण कारण है पुरूष प्रधान समाज का वर्चस्व आज भी स्त्री बेटी, माता और पत्नी के रूप में ही देखना चाहता है; उसे समानाधिकार देकर वह उसे सहचारिणी, सखी के रूप में कब स्विकार करेगा इस एक सवाल ही है ।

4.1.5 ग्रामीण क्षेत्रों का पिछडापन :-

आज स्वतन्त्रता के 60 साल बाद भी हमारे देश के गांव अविकसित ही है, आज भी बिजल, जल, शिक्षा, आरोग्य जैसे प्राथमिक सुविधाएँ वहॉ पहुँची नही है । दूर - दराज के पहाडी - पर्वत, इलाकों में रहनेवाला आदमी आज भी शिक्षा से दूर है । जहॉ बालकों के शिक्षा का अभाव है, वहॉ स्त्री शिक्षा की बात करना निरर्थक है ।ग्रामीण क्षेत्र के पिछडेपन के बारे में मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' उपन्यास में यथार्थ चित्रण मिलता है - ''बाते कैशर की ही क्या, विभिन्न मुद्दों पर हुई, पोस्ट ऑफीस से लेकर स्कूल, सडक और फिर अस्पताल तक आ पहुँची । निरसिंहगढ के सरपंच जी कहने लगे, ''इस अंधेर को क्या करें कि सडक के आस पास के गॉवों में दो - दो स्कूल और अपने दूर - दराजी गांव मीलों पर एक स्कूल के लिए तरसते है -'' 9

इस तरह आजादी के 60 साल बाद भी भारत देश के ग्रामीा इलाकों में प्राथमिक शिक्षा तक की सुविधा में पहुँची नही है, वहॉ स्त्री शिक्षा की कल्पना करना ही व्यर्थ है ।

4.1.6 आर्थिक समस्या :-

शिक्षा के प्रमुख दो उद्देश्य माने जाते है एक व्यक्तित्व का विकास करना और दुसरा अर्थार्जन करना। भारत जैसे विकसनशील देश 80 प्रतिशत जनता रोटी - रोटी के लिए संघर्ष कर रही है। वहॉ शिक्षा को प्रथम स्थान मिलना सहज साध्य नही है। आज शिक्षा का प्रचार - प्रसार जरूर हो रहा है परंतु जिस परिवार में शिक्षा पहुँची है। वहॉ लडकों की शिक्षा की तरफ ध्यान दिया जाता है। आर्थिक विपन्नता के कारण लडकियों को शिक्षा देने के बजाय मजदूर, किसान वर्ग परिवार की आय बढाने के लिये लडकियों को खेती, खदान, आदि पर काम करना पडता है। अत: लडकियों घर के काम, छोटे भाईयों को संभालना, या मा - बा पके साथ काम पर चले जााना इन कारणों से शिक्षा से दूर ही रहना पडता है। जे.सी.अग्रवाल ने लिखा है - ''सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों के अलावा, लडकियों की शिक्षा वस्तुत: एकल परिवारों को उपलब्ध पानी, ईधन, चारे और शिशुओं की देखभाल आदि की सुविधाओं से गुडी है। छोटी लडकियों के कुल समय का 29 प्रतिशत समय देहातों में लकडियॉ बीनने और 20 प्रतिशत समय पानी लाने में लग जाता है। लडकियों का काफी समय अपने सगे भाई - बहनों की देखभाल में चला जाता है। यह बात विशेष रूप से गरीब देहाती परिवारों पर लागू होती है। उदाहरण के तौर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश में देखा गया है कि घर - गृहस्थी का 30 प्रतिशत भाए और, खेती के काम का 20 प्रतिशत भार लडकियों को उठाना पडता है।'' 10

इस तरह गरिबी यह भी एक प्रमुख कारण स्त्री शिक्षा की समस्या में रहा दिखाई देता है। जिसके परिणामस्वरूप ; प्रतिकूल परिस्थिती में भी शिक्षित होकर अपने उपजीविका का माध्यम शिक्षा को हासील करने से ही आज के भारतीय नारी को रोक जा रहा है। बल्की; अर्थाजन के लिए देहात में लडकियों को काम की जिम्मेदारी देनी की परम्परा आज भी चली आ रही दिखाई देती है।

4.1.7 शिक्षा केंद्रे स्थल का दूरस्थल पर होना :-

आज भी स्वतंत्र भारत में पर्वत - पहाडियों में दूर - दूर बसे गावों प्राथमिक शिक्षा से आगे के शिक्षा केंद्र उपस्थित नही है। परिणामस्वरूप गांव के बाल - बच्चे प्राथमिक

शिक्षा तक ही पढते है। लडके दूरस्थल के शिक्षा केंद्रो मे चले जाते है परंतु अवागमन की असुविधा के कारण ज्यादा तर लडकियॉ आगे कि शिक्षा हासिल नहीं कर पाती और गांव के लोग भी लडकियों को दूर - दराज में शिक्षा के लिए भजने के लिए तयार नही होते है और परिणाम स्वरूप लडकियों कि शिक्षा रुक जाती है।

'इदननमम' उपन्यास के 'सोनपुरा गांव' में पॉचवी क्लास तक की शिक्षा दि जाती है वह वहॉ की उच्चतम शिक्षा मानी जाती है । इदन्नमम की नायिका 'मंदा' श्यामली गांव के मकरंद को कहती है। ''उसकी बात करते हुए मकरन्द कुछ बैठे, ''तुम पढी है?'' ''कक्षा पॉच तक।'' उसने तुरन्त सगर्व उत्तर दिया। ''बस?'' मरकन्द की 'बस' उसे बडा बुरा लगा। बडी तुच्छ। गंभीर स्वर में बोली, '''कक्षा पांच तो सबसे उँची कक्षा है हमारे स्कूल की।'' 11 गांव में पॉचवी कक्षा तक ही स्कूल होने के कारण मंदा सिर्फ पांचवी कक्षा तक ही पढ पाई थी।

गांव से दूर शिक्षा केंद्र रहने के कारण ग्रामीण क्षेत्र की लडकियों की शिक्षा बीच में ही रोकी जाती है साथ ही घर के कामकाज भाई - बहनों को संभालेन का जिम्मा इन्ह कारणों से लडकियॉ आगे की पढाई नहीं कर पाती इस समस्या को हल करने के लिए भारत सरकार के इ.1963 के भक्तवत्सलम् समिति ने यह सुझाव रखा था कि - ''सरकार को शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने का कार्य सभी स्थानों पर करना चाहिए जिससे स्थानीय लोग उनका लाभ उठा सके - भले ही वहॉ थोडे लोग रहते हो। सरकार का उद्देश्य होना चाहिए कि वह प्रत्येक तीनसौ की आबादी (जनसंख्या) वाले क्षेत्र में एक प्राथमिक स्कूल स्थापित करे। फिर पहाडी और छितरी जनसंख्यावाले क्षेत्रो में तो तीनसौ से कम जनसंख्यावाले क्षेत्रों में भी प्राथमिक स्कूल स्थापित करे, जिससे कि समस्त जनसंख्या को एक मील के अंदर ही शिक्षा सुविधा मिल जाए। तीन मील अर्धव्यास के घेरे में एक हजार पॉचसौ और इससे अधिक जनसंख्यावाले क्षेत्र में मिडिल स्कूल स्थापित किए जाएँ। माध्यमिक स्कूलों का आयोजन किया जाए ताकि वे क्षेत्र के प्राथमिक तथा मिडिल स्कूल छोडनेवाले छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। साधारण तथा पॉच मील अर्ध्दन्यास के पेरे में एक माध्यमिक स्कूल होना चाहिए।'' 12

ग्रामीण क्षेत्रों में अगर स्त्री शिक्षा को बढावों देना हो तो वहॉ स्कूलों का होना आवश्यक है। गांव में ही माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्कूल रहेंगे तो स्त्रिया उच्च शिक्षा को ग्रहण कर सकती है।

4.1.8 शिक्षा केन्द्रो में स्त्री छात्राओं पर होनेवाले अत्याचार :-

स्त्री शिक्षा प्रचार - प्रसार के कारण आज स्त्री शिक्षा का प्रमाण बढ रहा है तो दूसरी तरफ जहॉ आज भी ग्रामीण इलाकें में अपने गांव से दूर दूसरे गांव जाकर एक लडकी उच्चशिक्षा हासिल करना चाहती है तो उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है उसमें प्रमुख समस्या है स्त्री के चरित्र रक्षा की। आज जहॉ स्त्री छात्राओं संख्या कम होती है ऐसे स्कूल, कॉलेजों में एकाध स्त्री छात्र को देखकर वहॉ के अध्यापक होया पुरूष छात्र हो स्त्रियों पर शारिरिक अत्याचार करने का प्रयत्न करते है और अत्याचार के डर से लडकियॉ शिक्षा लेना ही छोड देती है।

जिस भारतीय समाज में स्त्री की चारित्रिक शुध्दता की उसके श्रेष्ठतव का प्रथम प्रमाण माना जाता है, वहॉ दूर स्थलों पर स्त्री को शिक्षा के लिए भेजने के लिये तैयार नही होते है। घर - बाहर की दुनिया में अगर स्त्री चली जायेगी तो के स्त्रीत्व खंण्डीत होने के आशंका से ग्रामीण लोग लडकियों को शिक्षा केंद्रो मे नही भेजते है। इस तरह शिक्षा केंद्रो मे लडकियों कि असुरक्षिता के कारण शिक्षा से वंचित रखा जाता है।

भक्तवत्सलम् 1903 के समितीने इस समस्या को ध्यान में रखकर ही स्कूलों में अध्यापिकाओं का होना आवश्यक माना है। साथ - ही 1986 के समिती ने सहशिक्षा को महत्व देते हुए मूल्य - शिक्षा को पाठयक्रम में रखना आवश्यक बात कहीं है।

4.1.9 शिक्षा में अपव्यय :-

आज आजादी के 60 साल बाद भी स्त्री शिक्षा का प्रमाण कम ही है आज 50 प्रतिशत लडकियॉ शिक्षा से दूर ही है। जिसे हम दो तालिका से देख सकते है

1950 - 51 तथा 1995 - 96 में लडकियों की शिक्षा का विस्तार

(नामांकन लाख में)

अ.क्र.	विभिन्न स्तरोंपर नामांकन	1950 - 51	1995 - 96	बढोतरी
1	कक्षा 1 से 5 नामांकन क) लडकियों का ख) लडकों का	191.5 53.8 137.71	1097 474 623	साढे पांच गुना साढे आठ गुना साढे चार गुना
2	कक्षा 6 से 8 में नामांकन क) लडकियों का ख) लडकों का	31.3 5.4 25.9	410 160 250	तेरह गुना तीस गुना नौ गुना
3	कक्षा 1 ते 8 नामांकन क) लडकियों का ख) लडकों का	222.8 59.2 163.6	1507 634 873	सात गुना साढे दस गुना छह गुना

संदर्भ :-

''जे.सी.अग्रवाल, भारत में नारी शिक्षा' पृ.90 - 91'' 13

उपर्युक्त दोनों संदर्भो से यह ज्ञात होता है की स्वतंत्रता के बाद स्त्री शिक्षा में सुधार जरूर हुआ है परंतु लडकों के बराबर में स्त्री शिक्षा का प्रमाण नहीं बल्की लडकियों का अपव्यय लडकों के मात्रा में कई अधिक दिखता है। इस तरह आज भी समाज में 50 प्रतिशत स्त्रियों शिक्षा से दूर ही है। इसलिए ग्रामीण इलाकों में और उच्चशिक्षा में स्त्री शिक्षा का प्रमाण बढने की आवश्यकता है। डॉ.के.पी.माथूर कहते है - ''लडकियों की शिक्षा प्रमाण वर्तमान गति से होता रहा तो शिक्षा के क्षेत्र में लडकियॉ लडकों के समकक्ष पहुँचने के करीब एक शताब्दी लग जायेगी।'' 14

उपर्युक्त समस्याओं के साथ मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में लडकियों के छात्रावास, उच्चशिक्षा, स्त्री शिक्षा संबंधी सरकारी दृष्टिकोन इन बातों को लेकर आज के भारत में स्त्री शिक्षा के दशा एवं दिशा को चित्रित किया है। आज आवश्यकता है शिक्षा में लडकियों का लडकों के समकक्ष होना।

4.2 निष्कर्ष :-

प्राचीन काल से लेकर मुघल काल तक भारत में स्त्री को शिक्षा में न के बराबर स्थान था। परुतु, ब्रिटीश कालीन शिक्षा नीति और आधुनिक विचारों के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रेरणा स्वरूप स्त्री शिक्षा को बढावा मिला।

देश के स्वतंत्र हो जाने पर स्त्री - शिक्षा में क्रान्तिकारी विकास हुआ स्त्री शिक्षा ग्रहण करते हुए अध्यापिका, नर्स, ग्रामसेविका का काम करने लगी। परिवार के साथ - साथ शिक्षा कों हासिल करते हुए स्त्री नोकरी पेशा हुई है। आज की भारतीय स्त्री हर एक उच्चार पर अधीन होकर अपनी कार्यक्षमता का प्रमाण दे रही है। परंतु आज ज्ञान - विज्ञान के युग में ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा के आजभी प्रति उदासीनता है आज भी स्त्री को उनके समस्याओं को लेकर जीना पड रहा है। स्त्री के मुक्तिद्वार शिक्षा है। यह विचार रखनेवाली मैत्रेयी ने आज के स्त्री शिक्षा की समस्याओं में यहाँ के समाज के अज्ञान, अंधविश्वास, रूढिवाद्विता, तथा सनातनी वृत्ती, बेटा - बेटी भेदभाव, उच - नीच, जात - पात आदि कारणों से भारतीय समाज में स्त्री को किस तरह शिक्षा से दूर रहना पड रहा है। इसका यथार्थ चित्रण किया है। संकीर्ण और संकुचित विचारधारा, जन - साधारण का अशिक्षित होना गांव से दूर शिक्षा केंद्रो का होन, लडका - लडकी में भेद मंडली की चालिकता को महत्व ग्रामीण लोगों का पिछडा पन इन कारणों से देश की अधिकांश स्त्री समुदाय अशिक्षा के अन्धकार में जा रहा हैं इस सत्य को उजागर करना ही मैत्रेयी के साहित्य का उद्दश रहा है।

अध्याय चार

सन्दर्भ संकेत

1. पत्रिका - शोधदिशा (शोध अंक 13), जनवरी - मार्च 2011 (भारतीय महिलाएँ तब और अब एक परिदृश्य से) पृ - 257
2. मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', पृ - 50
3. जे.सी. अग्रवाल, 'भारत में नारी शिक्षा', पृ - 11
4. मैत्रेयी पुष्पा, 'चाक', पृ - 27 - 28
5. जे.सी. अग्रवाल, 'भारत में नारी शिक्षा', पृ - 38
6. मैत्रेयी पुष्पा - विजन, पृ - 80
7. वही, पृ - 81
8. जे.सी.अग्रवाल - भारत में नारी शिक्षा, पृ - 81
9. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम', पृ - 232
10. जे.सी. अग्रवाल - 'भारत में नारी शिक्षा', पृ - 53 - 54.
11. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 45 - 46
12. जे.सी.अग्रवाल - 'भारत में नारी शिक्षा', पृ - 38
13. जे.सी. अग्रवाल - 'भारत में नारी शिक्षा', पृ - 90 - 91
14. डॉ.के.पी.माथुर - 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ पृ - 114

अध्याय पाँच

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में 'दलित', आदिवासी जन - जातियों' की शिक्षा समस्याएँ

(उपन्यास - विजन, द्दन्नमल, अल्मा कबुतरी, चाक के संदर्भ के)

5.0 विषय प्रवेश :-

सदियों गुलाम रहे इस भारतभूमी में प्राचीन काल से वर्णव्यवस्था स्थित थी । ब्राहमण वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, वैश्य वर्ण और शुद्र वर्ण इन्ह चार वर्णो में बँटा यह समाज अपने जैसे ही मनुष्य रहे शूद्र वर्ण के लोगों पर सदियों से उनसे पशुवत व्यवहार करते हुए उन्हें किडे - मकौडी की तरह जिंदगी जिने के लिए बाध्य किया था । जातीयता पर आधारित इस वर्णव्यवस्थाने शूद्र वर्ण के लोगों को दास, गुलाम बनाकर रखा, उनपर, सदियों से अन्याय - अत्याचार किये । यहाँ तक की 'दलित मनुष्य' के स्पर्श, छाया और वाणी' को भी अस्पृश्य मानकर उनकी बस्ती गाँव के बाहर कर दी । जिस व्यवस्था ने मनुष्य बनकर जिने का अधिकार छिन लिया था । उस धर्म ने शूद्रो को शिक्षा से दूर ही रखा और शूद्रों को दास्य के रूप में ही रखा । हिंदू धर्म के इस वर्णव्यवस्था का विरोध बौध्द काल में हुआ । महात्मा बुध्द ने इस व्यवस्था से अलग व्यवस्था की स्थापना करते हुए अपने धर्म में सब जाती - संप्रदाय के लोगों को प्रवेश देते हुए भारतीय समाज के वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था को आव्हान दिया । बौध्द धर्म में ही स्त्री और शूद्रों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ दिखाई देता है । बाद में इस देश में हिंदू, मुस्लीम व्यवस्था ने समजा के शिक्षा की तरफ ज्यादा ध्यान नही दिया गया । इस्लाम धर्म में प्रचार - प्रसार तक मुस्लीम शिक्षा रही दिखाई देती है । अंग्रेजो के आगमन से भारत देश में शिक्षा का प्रचार - प्रसार तेजी से हुआ और यहाँ शूद्रों के जीवन का अंधकार मिटाने के लिए महात्मा जोतिबा फुले ने सर्व प्रथम भारत में शूद्रों के 'शिक्षा' के लिए कार्य किया । दलितों के महानायक डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकरजी ने सर्व प्रथम शूद्रों के लिए ''दलित'' शब्द का प्रयोग १९ नवंबर 1928 में अपनी 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्रिका में किया था । वे अपने पीडित एवं शोषित समाज को प्रतिष्ठित बनाना चाहते थे ।'' 1 'दलित', शब्द की व्युत्पत्ति 'दल' धातू से हुअी है जिसका अर्थ है 'रौदा गया; कुचला गया, 'मसला हुआ, विनष्ठ हुआ ।'' 2 इस तरह जिसे सदियों से रौंदा गया कुचला गया इस अन्याय अत्याचार से पीड़ीत

भारतीय दलित समाज को डॉ.बाबासाहेब आम्बेडकरजी ने 'शिक्षित बनों, संघटित बनो, संघर्ष करो ।'' यह मुक्ति का महामंत्र दे दिया । इस महामंत्र से चेतित भारतीय दलित समाज में शिक्षा का तेजी से प्रचार और प्रसार हुआ । आजादी के जंग के साथ - साथ भारतीयों में सामाजिक समता, सर्वधर्म समभाव, बंधुता का प्रचार डॉ.आम्बेडकरजी ने किया और स्वतन्त्रता के बाद संविधान के माध्यम से दलित समाज को मानवता का अधिकार प्रदान करते हुए उन्हें शिक्षा में आरक्षण रखा गया । आज दलित वर्ग शिक्षा को ग्रहण करते हुए मनुष्यत्व के अधिकार पाने के लिए संघर्षरत है उसने अनेक उच्चस्थानों में अपना कार्य कतृत्व सिध्द किया है । परंतु फिर भी सदियों से जिस भारतीय समाज पर वर्णव्यवस्था, उँच - नीचता का गहरा प्रभाव है, वह उच्चवर्णिय समाज आज भी दलितों के उपर अन्याय - अत्याचार करते हुए उसे शिक्षा के अधिकार से वंचित रखने के लिए प्रयत्नशील है । आज के वैज्ञानिक युग में भी उँच - नीचता, जातीयता का पालन करते भारतीय समाज में दलितों को शिक्षा से किस तरह दूर रखा जा रहा है, इस का चित्रण आज की समकालीन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में यथार्थता के साथ किया है । उपन्यास - विजन, इदन्नमम, अल्मा कबुतरी, चाक में दलित शिक्षा संबंधी समस्याओं का निम्न प्रकार सें, चित्रण आया है ।

5.1 वर्णवादी मानसिकता के समाज का दलित शिक्षा का विरोध :-

आज के विज्ञान युग में भी भारतीय समाज का आधार प्राचीन काल से चली आई वर्णव्यवस्था स्थित जातिव्यवस्था रही है । अनेक प्रयासों के बावजूद सामाजिक परिवर्तन के लिये किये गये समाजसुधारकों, संस्थाओं, सरकारी योजनाओं, के प्रयत्न से भी आज समाज से जातिवाद समाप्त नही हुआ है । जिससे समाज और व्यक्ति की हानी ही हो रही । यज्ञदत्त शर्मा के मतानूसार - ''हिंदू धर्म में जातियों का उदय हुआ, जिससे जातिविद्वेष की मात्रा बढी और पारंपारिक घृणा को प्रश्रय मिला । जाति के उत्थान में यह सहायक न होकर बाधक हुई । मानवता एवं सभ्यता का धीरे - धीरे -हास हुआ ।'' 3

आज भी भारत में जातीप्रथा का कठोरता से पालन होता दिखाई देता है । दलितों के विकास का माध्यम 'शिक्षा' का अधिकार देने के लिये यहाँ का उच्चवर्ण आज भी तैयार नही है ।

आज भी भारती समाज में जाति के श्रेष्ठता के कारण जाति - जातियों में संकिर्ण भावना रहने के कारण उच्च जाति के लोग दलित समाज के लोगों को शिक्षा का अधिकार प्रदान नही करना चाहते शिक्षा लेने वाले दलितों पर अपनी रूढीवादी मानसिकता के कारण कई प्रकार के अत्याचार करते है।

मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में अल्मा के पिता रामसिंह को पढाने के लिए उसकी माँ को अपने इज्जत को निलाम करना पडा था। स्वतन्त्रता के समय तो आदिवासी जन - जातियों को चोर - उचुके कहकर गांव के बाहर ही भटकते हुए जिंदगी बीतानी पडती थी। उसी समय रामसिंह की माँ भूरी ने अपने बेटो को पढाने कि मशा पाली थी। उसके लिए उसे अपने स्त्रीत्व को लुटाना पडा - ''माते, पुजारी, सिपाही, मास्टरों के जरिए रामसिंह के लिए इज्जत खरीदनेवाली माँ बेहिचक बेइज्जत होती रही।'' 4

''उसने समझ लिया मद और खुद को लुटाना जरूरी है। राह पगड़ियों के खेतों - मैदानो के, गाँवपुरा के मालिकों की भूख नहीं रहेगी तो हम भी नहीं रहेंगे। खरपतवार की तरह उखाडकर, सुखाकर जला दिए जाऐंगे। विद्या का दामन थामा है तो बेबसी और बदरंगतो से गुजरना होगा। माँ के घावों पर जैसे रामसिंह की छोटी - छोटी उँगलियों ने स्याही लेप दी हो। कहे फटे बदन के चलते भी मोरनी - सी नाची फिरती। समय जाँच रहा था। औरत में कितनी ताकत है। भूरी समझ रही थी। बेटे का उजाले - भरा रास्ता माँ की देह से गूजर रहा है।'' 5

आदिवासी भोरी को अपने लडके को पढाने के लिये उच्चवर्णिय लोगों के हवस का शिकार बनना पडा था। इस तरह दलित - आदिवासी लोगों के 'शिक्षा' के विरूध्द खडे होकर अन्याय अत्याचार करते रहते है। दलित - आदिवासियों को आज भी मानवाधिकार से वंचित रखा जा रहा है। उनकी अवस्था के बारे में डॉ.नीवन एम.कलाथी कहते है। ''उन्हें अपना अधिकार न मिलने पर या हमने ले लिये है; इसलिये उसे यह, असहय जिंदगी जीनी पडती है। समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व की स्वातं™योत्तर संविधानिक अधिकारिता आज भी नसीब नहीं। जहाँ रोटी का सवाल है, जिंदा रहने का सवाल है, उसे

जिस्म से क्या लेना - देना। चरित्र से क्या लेना - देना। अरे! चॉंद पर पानी है कि नहीं, उसे क्या लेना - देना।'' 6

इस तरह जिस जातिवादी समाज ने दलित - पददलितो, आदिवासियों को उनके अधिकारों से वंचित रखकर समाज, देश के विकास को रोका है जब तक यहॉं हर व्यक्ति को जीवन जीने का समानाधिकार प्राप्त नही होगा तब तक इस दो का विकास असंभव ही दिखाई देता है।

5.2 शिक्षा केंद्रो में दलित :-

आदिवासी छात्रों पर अध्यापकों द्वारा किये जानेवाले अत्याचार :-

मातृ देवोभव, पितृ देवोभव, आचार्य देवोभव इस उक्ती को लेकर चलनेवाला समाज आचार्य को ईश्वर मानता है। यह 'ईश्वर' उच्चवर्णीय छात्रों पर ही कृपादृष्टी रखता है। क्योंकि उसी उच्चवर्णीय समाज का ही हिस्सा यह अध्यापक वर्ग रहता था। परंतु आज हर एक जाती जनजाति के लोग अध्यापक का कार्य कर रहे है। परंतु जातिय श्रेष्ठता को लेकर जानेवाले उच्चवर्णीय लोग आज भी दलित आदिवासी छात्रो को पढाने के लिये तयार नही है। हमारे प्राचीन इतिहास में जैसे रामायण में शिक्षा से शम्बूक को दूर रखा, तो महाभारत में द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगुठा गुरुदक्षिणा में मागकर उसके शिक्षा को खण्डित करना चाहा। उसी प्रकार आज भी दलित - आदिवासी छात्रों को निम्नजाती को दोहराते हुए उनका अपमान करते हुए उन्हें शिक्षा से दूर रखने की कोशिश की जाती है। उन्हें हरपल अपमानित किया जाता है। 'अल्माकबूतरी' उपन्यास में राणा जब पढने लिये जाता है तब स्कूल का अध्यापक उसका अपमान करता है - ''वह आधे दिन स्कूल की चौहद्दी के बाहर मुर्गा बना खडा रहा। मास्टरजी ने संतोष के साथ कहा था। स्कूल में घूस ही आया है तो सजा भुगत। बस्ता उतरवाना ही था तो किसी ब्राहमण लडके से कह देता, पर वही चोरी से सबकुछ करने की आदत। तुम नही सुधरोंगे।'' 7 इस तरह अध्यापक उसके जाती को लेकर उसे अपमानित करते है साथ ही अस्पृश्यता का पालन करते हुए उसे हैडंपंप का पानी पीने से रोकते है। ''मास्टरजी ने कह दिया था। तू नल नहीं छुएगा। नल के आसपास भी देख लिया तो.... याद रखना, यहॉं सिपाही आते हैं, पकडवा दुँगा। प्यास के कारण उसका गला चटकने को आ गया, नल नहीं छू सका।

‘‘पानी !’’ मास्टरजी ने सुझाव दिया ‘तालाब में से पीकर आ।’ राणा देखता रह गया। पाँचवी कक्षा का बच्चा। ‘पानी की स्वच्छता’ वाला पाठ अभी दो दिन पहले पढाया था। मास्टरजी को पता नहीं कि किताब में कज्जा लागोंके बच्चे टट्टी पेशाब फेंकते हैं। औरतें आदमी शौचते हैं।’’8 इस तरह आज भी रूढीवादी भारतीय समाज से जातीप्रथा छुआछुत नष्ट नही हुई है कतिपय अध्यापक आज भी छात्रों के साथ भेदभाव का व्यवहार करते है। इस अध्यापक वृत्ती के कारण और डर के कारण दलित, आदिवासी छात्र बीच में ही स्कूल छोड देते है। यहा दलित आदिवासी छात्रों का शिक्षा से दूर रहना निश्चत ही देश के विकास को पीछे धकेल रहा है।

5.3 शिक्षा केंद्रो में दलित :-

आदिवासी छात्रोंपर उच्चवर्णीय सहपाठियों द्वारा किये जानेवाला अत्याचार :-

जो शिक्षा मनुष्य को पशु से अलग करके एक श्रेष्ठ वरदान बुध्दी को प्राप्त करते ‘इन्सान’ बनाती है, वह शिक्षा अगर उच्चवर्णिय गुरू को इन्सानियत नही सीखा सखी वहाँ पढनेवाले उच्चवर्णिय छात्र भी वही आदर्श पालते हुए अपने दलित सहपाठी पर क्रुर अत्याचार करते है। मैत्रेयी पुष्पा ने ‘अल्माकबूतरी’ उपन्यास में कदमबाई का राणा जब शिक्षा हासिल करने गाँव के स्कूल में दाखिल होता है तब गाँव के उच्चवर्णीय सहपाठी उसपर क्रुर अत्याचार करते है। ‘‘राणा पिटा। जिंदा रहने के लिए पिटना माँ को बुरा नहीं लगा। हाँ, स्कूल को बुरा लगा उसका पानी पीना। तभी तो चार स्थाने बच्चों ने उसे उठाकर तालाब में पटक दिया था ले, खुब पानी पी। राणा तैरने लगा। उन्हें नही पता था कि कबुतरा बालक मछली से ज्यादा तेज तैर सकता है। वे तो समझ रहे थे कि पानी के जीव - जन्तु ही इस लडके को चबा जाएँगे, लेकिन राणा इतना मुलायम कहाँ था? तालाब को छका दिया।’’9 दलितों के उपर उच्चवर्णियों द्वारा किये जानेवाले अत्याचार का कारण वेदप्रकाश अमिताभ बताते है।‘‘जिनके वर्ग हितों पर आँच आएगी वे दलितों के उत्थान को नहीं सह सकते। अजादी के बाद हरिजन - सवर्ण - संघर्ष और हरिजन - दहन की ढेरों घटनाएँ सिध्द करती हैं कि संविधान और सरकार द्वारा निम्न वर्ग उपर उठने की हीमायत के बावजूद उच्चवर्ग इस परिवर्तन के लिए तैयार नहीं है।’’ 10 इस तरह सदियों से जिस वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था ने उच्चवर्णिय समाज रूढी परम्पराओं के साकल से

बांध रखा है उसे वह अपना श्रेष्ठतव मानकर चलते है । उच्चशिक्षित होकर भी आज का उच्चवर्णीय समाज जाती - वर्ण से आई श्रेष्ठत्व को त्यागना नही चाहता । इसलिए ज्ञान लेकर कोई अपने से श्रेष्ठ बन जाये यह उन्हें कतई पसंत नही है । इसलिए आज भी भारतीय समाज का उच्चवर्ण अपनी श्रेष्ठता कायम रखने के लिए दलित - आदिवासियों पर अन्याय - अत्याचार कर रहा है ।

'इदन्नमम' उपन्यास का भृगुदेव यह दलित पात्र अपनी डॉक्टरी कि शिक्षा बीच में छोडने की कथा नायिका 'मंदा' को बताना है । ''मै मेडिकल की पहली परीक्षा में ही जब मैं प्रथम आया तो उच्चवर्णी लडके बैर मानने लगे । नीचा दिखाने की जुगत में लगे रहते । हमारे पुश्तैनी पेशे का घृणित रूप में बखान करते । ''मेरे सामने पॉलिश के लिए जुतों का ढेर रख दिया जाता । हॉस्टल में रिवाज - सा चल पडा कि जो धोबी जाति से हो, कपडे छुलाओं, कहर हो, बर्तन मॅंजवाओ, और चमार हो तो ...

''शिकायत करने की बात कहता तो बुरी तरह पीटते ।'' 11

अपने उपर होनेवाले अत्याचार से व्यथित होकर भृगुदेव आज के पढे - लिखे शिक्षित समाज को हो सवाल पूछता है । '' विद्या, शिक्षा आदमी को पशु से अलग करती है, ज्ञान उसको ब्रहम के पास पहुॅंचाता है तो फिर यहा ँ अपवाद क्यों? '' 12 आजादी के बाद भी जिस संविधान मे समाज के प्रत्येक मनुष्य को जीवन जीने का समानाधिकार प्रदान किया उसे सार्वभौमिक गणतंत्र देश के उच्चवर्णियों ने 'मनुस्मृति' के विचार आज भी त्यागे नही है । ज्ञान के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ती होती है यह संदेश देनेवाली 'मनुस्मृति' ही शूद्र वर्ण के मनुष्य को ज्ञान से वंचित रखनी की नीति अपनाते हुए सदियों से समाज में भेद - भाव बनाकर रखने में सफल हुई है । उसी नीतिपर आज का दलित वर्ग सवाल पुछते हुये संघर्ष करते हुए, मनविय अधिकार पाने के लिए छटपटा रहा है । उसे वह अधिकार मिलने चाहिए नही तो आज के वैज्ञानिक युग में भी यह भारतीय समाज विश्व के सामने असभ्य संस्कृति का परिचालन करनेवाला उदाहरण बन जायेगा । इसलिए आधुनिक भारत में भी जाति पाती, वर्णव्यवस्था को हटाने के लिए समाजसुधारकों ने कार्य करना आवश्यक है । वर्तमान काल में भी दलित समाज को उपर उठाने की आवश्यकता है, इसलिए सामाजिक क्रांति का होना अनिवार्य है । जगजीवन रामजी के शब्दों में ''जातिवाद और जातिगत भावनाओं के कारण हमारी सामाजिक और

आर्थिक प्रगति में बाधा पडी है । जातिवाद का शिकार सिर्फ हरिजन ही नहीं है । उन्हें अपनी स्थिति सुधारने के लिए सामाजिक क्रांति की शुरूआत करनी चाहिए ।'' 13

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है की स्वतन्त्रता के बाद स्वतन्त्र भारत में दलितों को सवर्णो के समान सर्व अधिकार संविधान ने प्रदान किये । परंतु, आज भी शिक्षित समाज में ही ज्यादातर छूआ - छूत चल रही है । अपना वर्चस्व, बनाये रखने के लिए जातिवाद की अमानवीय परंपरा का आज भी सवर्ण पालन कर रहे है । इसलिए इस समाज में एकता, भाईचारा निर्माण करने के लिए सवर्णो कों जातीवाद, वर्णवाद को छोडना होगा और दलितों को अपने विकास के लिए संघर्ष करना ही होगा ।

5.4 दलित - अनुसूचित जातियों का अशिक्षित होना :-

अंग्रेजों के आगमन से भारत में शिक्षा का प्रचार - प्रसार हुआ । इस देश पर प्रशासन चलाने हेतू यहाँ के लोगा को शिक्षा देकर उनका उपयोग प्रशासन सेवा मे करा लेने के लिए अंग्रेजों ने यहाँ शिक्षा का उपयोग शहरों में रहनेवाले लोगों को हुआ । भारत में ब्रिटीशकाल में, ग्रामों में शिक्षा का सही मायने में प्रसार नही हुआ । देश के स्वतन्त्रता के बाद देश के आर्थिक, सामाजिक, राजकीय विकास के शिक्षा यह माध्यम स्विकारते हुए भारत सरकारने शिक्षा का प्रचार - प्रसार किया । ग्रामीण क्षेत्रों में पाठशालों का निर्माण करना, छात्रवृत्ति देना, छात्रावास निर्माण करना आदि योजनाओं के माध्यम से शिक्षा का प्रचार - प्रसार का कार्य होता रहा है । परंतु, परंपरागत जातिवादी मानसिकता के उच्चवर्णिय लेागों ने दलितों के शिक्षा अधिकार नकारते हुए आजादी के प्रारंभ में दलितों के साथ एक ही पाठशला में पढन से इन्कार किया था । जाति - पाति के कारण उच्चवर्णिय मानसिकता के लोग दलित छात्रों को पाठशाला में प्रवेश नही दिया जाता था। उन्हें पाठशाला के बाहर बिठाया जाता था । महात्मा जोतीबा फुले, डॉ.आम्बेडकरजी की प्रेरणा से स्वतन्त्रता के बाद दलित वर्ग शिक्षा को अपने मुक्ति का द्वार मानने लगा और दलित वर्ग बडी संख्या में शिक्षा को ग्रहण करने लगा । परंतु, आज भी ग्रामीण क्षेत्र में अशिक्षित, अज्ञानी परंपरागत दलित समाज अपना पेशा, कला स्विकारते हुए अपने बच्चों को शिक्षा से दूर ही रखते है । शिक्षा को हासिल करे तो परंपरागत व्यवसाय भूल जाऐंगे तो रोजी - रोटी की समस्या खडी हो जाएगी इस डर से आज भी अशिक्षित, दलित, आदिवासी शिक्षा से दूर रह रहा है । मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में

‘कबूतरा’ आदिवासी ‘राणा’ के शिक्षा का विरोध करता है - ‘‘कदमबाई से पहले राणा की काकी भजनी रामसिंह के पास आ पहुँची। मोंठ के बाजार महुआ लेने गई थी, छोटी सी गठरी अब भी सिर पर लदी थी, उसी को पकडकर रामसिंह से दो - चार हुई। ‘‘तुम ही हो रामसिंह। तुम्हारी सलाह पर राणा मदरसे गया था। हमारे बच्चा ने टैम खराब किया और देह चिथवाई। बस यही पाया। हमने तुम्हारे कहने पर पूत के हाथ से उंडा - कुल्हाडी छीने और कलम - पारी पकडाई। सो जान के लाले पड गए। यह कौन -सी विद्या बता दी, जो बच्चा को मरवा डराए। उपर ये यह मलियां सिर्री कहता है कि अपनी बेटी तुम बाबू ऐलकार से ब्याहोगे। राणा बाबू ऐलकार होने से पहले भगवान का प्यारा हो जाएगा। कदमबाई से ऐसा बैर मत निकालो। अपनी बेटी का ब्याह किसी कज्जा ऐ कर दो, जिनकी तुम होड कर रहे हो।’’ 14

यहाँ स्पष्ट है कि दलित आदिवासी लोग अपने बच्चों को शिक्षा देने से डरते है। अशिक्षा के कारण ‘शिक्षा’ हासिल करना उन्हें अपना धंदा, परंपरागत व्यवसाय को भूल जाना है। साथ ही उन्हें डर है कि शिक्षा को ग्रहण करना याने उच्चवर्णियों से होड करना है। जिससे उन्हे पीडा, यातना ही मिल सकती है। उच्चवर्णिय अपनी बराबरी करने नहीं देंगे और इसी कारण वह हमारे बच्चों पर अन्याय - अत्याचार करते रहेंगे, इस डर से दलित, आदिवासी समाज अपने बच्चों को शिक्षा से दूर रखते है।

अशिक्षा के कारण और उच्चवर्णियों के डर से आज भी दलित, आदिवासी शिक्षा से दूर रह है। इसलिए आवश्यकता है उनके मन में बसा हुआ जाति - पाति को डर निकालते हुऐ उन्हें शिक्षा का महत्व समझा देना आवश्यक है साथ ही उच्चवर्णियों का मन भी परिवर्तित करना चाहिए। नही तो इस देश का समाज कभी अखण्ड नही रहेगा। सदियों से चले आये खण्डित समाज की अवस्था ने इस देश को गुलाम बनाकर रखा था। जिसने इस देश की एकात्मता को दूर ही रखा। डॉ.दिवेश ठाकूर कहते है। ‘‘व्यक्ति समाज जातिगत आधार पर अलग - अलग समूहों में विभाजित और विछिन्न होकर, परस्पर द्वेष, ईर्ष्या और शत्रुता के भाव को बढाता हुआ राष्ट्रीय शक्ति, एकता और उदात्त मानवी मन के आदर्शो को धूमिल कर रहा है।’’ 15

अज्ञान, अशिक्षा एक बडी समस्या है उसे समाज के विकास के लिए दूर करना आवश्यक है। जब तक यह समाज शिक्षा से दूर रहेगा तब तक उसका शोषण होता रहेगा।

इसलिए इस समाज में सामाजिक संस्था, शिक्षा संस्था, समाजसुधारको और शासन ने शिक्षा का प्रचार - प्रसार करना आवश्यक है।

5.5 दलित - आदिवासी समाज की निर्धनता :-

भारतीय समाज में स्थित वर्णव्यवस्था ने समाज के शूद्रवर्ण के लोगों को सेवा करने का काम सौंप कर उन्हें दास बनाया। परिणाम स्वरूप ; शूद्र वर्ग कभी संपत्ती का संग्रह नही कर पाया सेवा के बदले एक घोटभर पानी और कोर भर रोटी के लिये उसे सदियों से काम करवा लिया। सेवा के बदले रोटी पानेवाला शूद्र समाज निर्धन ही रहा और गरीबी के कारण वह अपनी उन्नती नही कर पा रहा था।

स्वतन्त्रता के बाद जागृत हुआ दलित वर्ग शिक्षा को ग्रहण करते हुए रोजी - रोटी का साधन जुटाने लगा। परंतु पुरा दलित समाज संपन्न नही बना है, आज भी ग्रामीण क्षेत्र में दलित समाज निर्धन और गरिबी का जीवन जी रहा है। इस गरिबी के कारण आज भी वह शिक्षा से दूर है। दलित वर्ग के लोग रोजी - रोटी कमाने के लिए बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय काम पर ले जाना उचित समझते है। जिससे रोटी का जुगाड तो हो जाता है। यही भावना लेकर वह बच्चों को स्कूल नही भेजते। पढ़ - लिखकर परंपरासे चले आये काम ही करने है, इस धारणा के कारण भी दलित - आदिवासी बच्चों को शिक्षा से दूर ही रखते है।

'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका 'मदा' क्रेशर पर काम करते राउत आदिवासी लोगों के बच्चों को स्कूल भेजना चाहती है। राउत आदिवासी समाज के निर्धनता का चित्रण इसमें मिलता है। ''प्रधान काकी लोटे में जल भरे खडी है', बोली 'मन्दा, जे बच्चा मजूरी नहीं करते मताई - बाप के संग? इनके तो बिटिया, पैदा पीछे होते हैं, काम धन्धे की पहले सोचने लगते हैं बाप - मताई।'' ''मजूरी तो नहीं, बेगार करते हैं काकी। दिन - भर छिटकी हुई गिट्टी बीनते रहते है। बदले में किसी ने दस पैसे हथेंली पर रख दिये तो बडी बात। एकाध रोटी दे देते हैं ठेकेदार लोग। जो तनिक बडे है। वे शराब के ठेके से बोतल - मोतल लाने, नमकीन और बीडी - माचिस की व्यवस्था करने में लगे रहते है। दारू के लिए गिलास और मग धोते रहते है। नहीं करते तो पिटते हैं। सो सोचा है कि स्कूल में रहेंगे तो इन सब बातों से कुछ समय को बचे ही रहेंगे।'' 16 आज भी बेगारी पर जीनेवाला दलित, आदिवासी समाज, गरीबी, निर्धनता के कारण व्यथित होकर

व्यसनाधिनता की ओर मुडता है। साथ ही बच्चे भी कम उम्र में गलत काम पर लगने के कारण व्यसनाधीनता की ओर आकृष्ट होकर शिक्षा से दूर ही रहते है।

शिक्षा हासिल करने के बाद भी दलित - आदिवासी समाज में परिवर्तन नही हुआ उच्चवर्णियों ने उन्हें अपने जैसी प्रतिष्ठा सम्मान मिलने से दूर ही रखा जो दलित - आदिवासियों के मन मे सवर्णो प्रति क्रुरता निर्माण होती है। वह अपने जाती - बिरादरी के बच्चों के शिक्षा लेने से रोकते है और साथ ही जिन्होंने शिक्षा ग्रहण की है उन्हें कौसते रहते है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास भूरी कबूतरी अपने स्त्रीत्व का सौदा करते हुए अपने बच्चे रामसिंह को पढाती है। परंतु, उच्चवर्णिय उसका सम्मान करने के बजाय पद - पद पर उसका अपमान करते है। जिससे तंग आकर रामसिंह अध्यापिक को नौकरी छोडता है और अपने आदिवासी के जाति चोर - उचके लोगों को पुलिस से छुडवाने का काम करता रहता है। फिर भी शिक्षा का महत्व समझा रामसिंह राणा अपनी बेटी 'अल्मा' को पढाता है। कदमभाई के डेरे पर आकर 'राणा' को 'शिक्षा' देने के लिए जाना चाहता है। तब कदमभाई के डेरे के लोग उसका विरोध करते है। ''काका, यही बात तो समझ लो, पढ-लिख भी लो, जाति नहीं बदलाती। तुम्हारे रामसिंह की नाकर बेपढा लडका चढेगा? और कबुतराओं में पढा - लिखा मिलेगा नहीं। उससे कहो, कोई कज्जा तलाश लो।'' '' ठिक है री, जाति नहीं बदलती, रहन - सहन और व्यवहार तो बदल सकता है?'' रामसिह कहता है। कज्जालोंगों के बच्चा पढते है, हमारे चोरी - चकारी में लगे रहते है ?

''काका पाठशाला का संस्कार डालकर अपने धंधे से हाथ धोना है। देखा नहीं रहे राणा ने दो पोथी क्या पढ ली, मुखिया के माथे पर जूता मार दिया। यह नहीं सोचा कि यह मार उसकी मॉ की कमर तोड देगी। रामसिंह पढ गया, तो क्या उसने दुनिया शर कर ली? कर लेता तो बेटी अब तक कुँआरी न बनी रहती।'' 17

निर्धनता, अशिक्षा, अज्ञान के कारण शिक्षा से बाहर रहने की दलित एवं आदिवासीयों कि स्थिती आज के बाजारीकरण के युग में और ही दयनीय हो चुकी है। उनकी शिक्षा स्थिती पर डॉ.के.पी. माथूर कहते है - ''1991 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जाति के लोगों की संख्या 6.8 करोड है। यह कुल देश की जनसंख्या का

8.01 प्रतिशत है । इतनी विशाल जनसंख्या की उपेक्षा नहीं की जा सकती । युगों से पीडित इन जातियों का उध्दार करना लोकतन्त्र को सार्थक बनाये रखने के लिए आवश्यक है ।'' 18 इस तरह दलित, आदिवासियों को शिक्षा से दूर रखकर उनको सामाजिक तत्वों से अस्तिवहीन और अर्थहीन कर दिया जाना है । उन्हें देश के मुख्य प्रवाह में लाने के लिए शिक्षा यही प्रमुख माध्यम रहेगा ।

5.6 दलित - अनुसूचित जनजातियॉं और आरक्षण नीति ।

सवर्ण वर्गो के समान सामाजिक, राजकीय, आर्थिक स्तर पर दलित आदिवासियों को समानता प्राप्त हो इसलिए संविधान में आरक्षण रखा गया । 'आरक्षण' के कारण आज प्रशासन, राजनीति, शिक्षा क्षेत्र में दलित आदिवासी लोग मानवाधिकार को प्राप्त कर रहे है । परंतु आज भी सवर्णो के मन में यह भावना है कि 'आरक्षण' के कारण ही इन्होंने हमारी बराबरी साध ली है । आज सवर्ण वर्गो के लोग दलित - आदिवासी लोगों की श्रेष्ठ बौध्दिकता को स्विकारते नही है । आरक्षण मिलने के कारण ही आज प्रत्येक क्षेत्र में दलित आदिवासी सवर्णो से होड कर रहा है । इस भावना से सवर्ण लोग आरक्षण नीति का विरोध करते है, साथ ही दलित आदिवासियों की घृणा करते है ।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में भूरी कबूतरी का लडका रामसिंह पढ लिखकर अध्यापक बनता है । तब सवर्णे वर्ग के पुलिस नीति को लेकर बात करते दिखाई देते । ''ये साले तो अपना रोजगार बदल रहे है । एक दिन ऐसा आएगा कि पुलिस महीना हप्ता तो क्या पगार तक को तरस जाएगी । आरक्षण के जरिए बढे आ रहे है अभी तो, फिर खुद - ब - खुद जागरूक हो जाऐंगे ।'' 19 आरक्षण के सहारे हीं उन्हें नौकरी मिलती है और यह हमसे बराबरी करते है इस भावना से 'आरक्षण' नीति का विरोध होता रहता है । आज दलित आदिवासी छात्रों को आरक्षण का फायदा उठाने पर सवर्ण छात्रों की घृणा का पात्र बनना पड रहा है । 'इदननमम' में भृगुदेव कहता है - ''असल में हरिजनों को देखते ही कॉलेज में और कॉलिज के बाहर लोग एक धारणा कायम कर लेते हैं कि निश्चित ही यह छात्र आरक्षण से आया है ।..और फिर होती है अन्दरूनी बैर की शुरूआत, जिसमें उपेक्षा, ईर्ष्या, द्वेष और कुठाये पनपने लगती हैं । मुझे सहन नहीं हो सका तिरस्कार ।'' 20

आरक्षण नीति दलित - आदिवासियों के सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, शैक्षिक स्तर में उन्नति लाने साहय रही। परंतु, इस नीति के कारण यह वर्ग इतनी घृणा झेल रहा है कि उसे ही अब 'आरक्षण' शब्द के प्रति ही घृणा उत्पन्न हो रही है। क्योंकि इस 'आरक्षण' शब्द के कारण उनकी काबिलीयत, बौध्दिकता को ही ठुकराया जा रहा है। ''काश, वह दिन आये कि अनुसूचित जाति में आनेवाले छात्र आगे बढे और अस्वीकार कर दें आरक्षण की बैसाखी को। वह हौसला आये हमारे भीतर कि इस हय भीख से मुक्ति पायें। अपंग ही न बनी रहें आनीवाली पीढियॉं। वोटों का व्यापार है यह। अपने मत के बदले में पाते हैं हम लडखडाती हुई उपाधि, डिग्री, पद - प्रतिष्ठा।'' 21

आरक्षण नीति की सवर्णो द्वारा द्वेष करना दलित - आदिवासी छात्रों को फिर एक बार शिक्षा से दूर ले जा सकता है। सवर्णो के द्वेष, ईर्ष्या के कारण वह 'आरक्षण' कि बैसाखी को फेंकना चाह रहे है। परंतु, आज भी दलित आदिवासी लोगों को आरक्षण कि आवश्यकता है ग्रामीण भारत के दूर - दूर के पर्व पहाडी इलाकों मे रहनेवाले आदिवासियों तक शिक्षा की गंध भी नही पहूँची है इसलिए 'आरक्षण' आवश्यक ही है। भारत सरकार विभाग ने दिये सन 2009 - 10 के दलित आदिवासियों के शिक्षा की तालिका में निम्न प्रकार से है जो दलित आदिवासियों को 'आरक्षण' की आवश्यकता को उजागर करती है।

उपर्यूक्त तालिका को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि आज भी दलित - आदिवासी लोगो को 'आरक्षण' की आवश्यकता है। कल नामांकन प्राथमिक शिक्षा में भी उनकी संख्या २० प्रतिशत से कम है और यह स्थिती चिंताजनक है।

शैक्षिक अवसरों की समानता का महत्व स्पष्ट करते हुए शिक्षा आयोग ने कहा है। ''शिक्षा का एक करना जिससे कि पिछडे तथा दलित वर्ग और व्यक्ति शिक्षा के द्वारा अपनी स्थिति को सुधार सकें। जो भी समाज, सामाजिक न्याय को अपने आदर्श के रूप में स्वीकार करता है और सामान्य व्यक्ति की दशा सुधारने तथा सम्पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने योग्य व्यक्तियों को शिक्षा देने को उत्सुक है, उसे यह व्यवस्था करनी ही होगी कि जनता के सब वर्गों को अवसरों की अधिक से अधिक समानता प्राप्त होती जाए। एक समता - मूलक तथा मानवता - मूलक समाज, जिसमें दुर्बलों का शोषण कम से कम हो, के निर्माण करने था यही एक सुनिश्चित साधन है।'' 22

देश में समता मूलक तथा मानवता - मूलक समाज निर्मिती के लिए शिक्षा यह माध्यम है। दलित आदिवासियों को आरक्षण देते हुए शिक्षा के लिए प्रेरित करते हुए शिक्षा का प्रचार - प्रसार करना आवश्यक है।

अशिक्षा, निर्धनता, शिक्षा केंद्रो की असुविधा, सवर्णो की द्वेष नीति, आरक्षण नीति इन समस्याओं के साथ - साथ छात्रावासों की असुविधा, वन - पर्वत - पहाडियों में बसे आदिवासी पाडों पर शिक्षा की व्यवस्था न होना, दलित - आदिवासी स्त्री पर शिक्षा केंद्रो में होनेवाले अत्याचार आदि कई समस्याओं के रहते हुए आज दलित आदिवासी वर्ग शिक्षा से दूर है। अत: स्पष्ट कह सकते है कि असफलता अशिक्षा, निर्धनता, सवर्णों का द्वेष, सरकारी योजनाओं की असफलता आदि कारणों आज भी दलित आदिवासी वर्ग शिक्षा से दूर ही है।

5.7 निष्कर्ष :-

हिंदी साहित्य में आधुनिक महिला लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान शिर्षस्थ है। आज आधुनिक भारत के ग्रामीण क्षेत्र की शौचनीय स्थिती का यथार्थ चित्रण करना उनके साहित्य की विशेषता है। ग्रामीण समाज के पीछडे पन में दलित आदिवासी वर्ग का पीछडना पन भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस बात की ओर संकेत करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में दलित आदिवासी वर्ग का चित्रण यथार्थता से है।

दलित - आदिवासियों के पीछडेपन का मुख्य कारण शिक्षा से दूर रहना है। इसका यथार्थता से चित्रण करते हुए ग्रामीण समाज में दलित - आदिवासियों के शिक्षा से दूर रहने के कारणों खोजते हुए उनकी समस्याओं का बयान मैत्रेयी पुष्पा ने इदन्नमम, चाक, अल्मा कबुतरी उपन्यासों किया है। जातिभेद वर्णभेद के कारण 'इदननमम' के भृगुदेव को डॉक्टरी की शिक्षा अधुरी रखनी पडी थी। 'अल्मा कबूतरी' में आदिवासी कबूतरा जाती के राणा को उच्चवर्णियों नें कुत्ते से कटवाया था। इस प्रकार आज के शिक्षित समाज में भी दलित - आदिवासी वर्ग के लिए उच्चवर्णिय लोगों के मन में अपनत्व नहीं है, सदियों से शोषण, अन्याय - अत्याचार करते हुए उसे 'शिक्षा' से दूर रखा जा रहा है यह देश के लिए नींदनीय बात है।

पंचम अध्याय
संदर्भ - संकेत

1. संपा - डॉ.अशोक धुलधुले - 'इक्कीसवी शती के हिंदी साहित्य में स्त्री एवं दलित विमर्श, पृ.202
2. करूणापति त्रिपाठी - 'लघु शब्द सागर, पृ - 439
3. यज्ञदत्त शर्मा - 'प्रबंध सागर', पृ - 153
4. मैत्रेयी पुष्पा - 'अल्मा कबूतरी', पृ - 77
5. वही, पृ - 75
6. सं.डॉ.शैलजा भारद्वाज - 'हिन्दी साहित्य में युगीन बोध', पृ - 123
7. मैत्रेयी पुष्पा - 'अल्मा कबूतरी', पृ - 81 - 82
8. वही, पृ - 82
9. वही, पृ - 83
10. वेदप्रकाश अमिताभ - 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों मे मूल्य संक्रमण', पृ - 95 - 96
11. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 342
12. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 342
13. जगजीवनराम - 'भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या', पृ - 91
14. मैत्रेयी पुष्पा - 'अल्मा कबूतरी' पृ - 107
15. देवेश ठाकूर - 'मैला आँचल की रचना प्रक्रिया', पृ - 68
16. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 218
17. मैत्रेयी पुष्पा - 'अल्मा कबूतरी', पृ - 71
18. डॉ.के.पी.माथूर -'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ पृ - 135
19. मैत्रेयी पुष्पा - 'अल्मा कबूतरी' पृ - 105
20. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 342
21. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 342
22. भाई योगेन्द्रजीत - 'शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियाँ', पृ - 83

अध्याय छ:

''मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में अध्यापकों से सम्बन्धीत समस्याएँ''

(उपन्यास - इदननमम, चाक, अल्मा कबुतरी, विजन के संदर्भ में)

6.0 विषय प्रवेश :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए मनुष्य को मनुष्य बनाने की प्रक्रिया शिक्षा के माध्यम से होती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक औपचारिक शिक्षा पध्दती में आचार्य (अध्यापकों) को महत्वपूर्ण स्थान है। ''गुर्रु ब्रह्मा, गुर्रु विष्णू, गुर्रु देवो महेश्वरा'' हमारे संस्कृति में गुरू को ईश्वर के समान स्थान दिया गया है। क्योंकि ज्ञान दान का सर्व श्रेष्ठ काम गुरू करता है, हर मनुष्य के अंदर छीपे हुये पशुत्व का नाश करते हुए एक मनुष्य निर्माण करने की प्रक्रिया में गुरू का स्थान महत्वपूर्ण होता है। इसलिए ज्ञान दाम को श्रेष्ठ दान माना है। शिक्षा का ज्ञान देनेवाले गुरू के माध्यम से ही एक व्यक्ति, एक समाज, एक राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए गुरू को समाज का अभियंता कहा गया है। यह गुरू किस गुणों का होना चाहिए इस बारे में स्वामी विवेकानंद जी कहते है। ''प्रथम गुण है उसका शास्त्रज्ञान। अच्छा शिक्षक शास्त्रों के मर्म को जानता है, वह शब्दों के परे अर्थ को जानता है। दुसरा गण है निष्पापता। उसे हृदय और मन से पवित्र होना चाहिए। चित्त की शुध्दता के बिना वह छात्रों में अध्यात्मिक शक्ति का संचार नहीं कर सकता। तीसरा गुण यह है कि शिक्षक को धन, नाम या यश सम्बन्धी स्वार्थ सिध्द के लिए धर्म शिक्षा नहीं देनी चाहिए। अत: गुरू में त्यागभाव आवश्यक है।''1 इस तरह शिक्षक ज्ञानसंपन्न, नि:पक्षपाती वृत्ती और 'नाम' प्रतिष्ठा से दूर रहकर ज्ञान दान करे तो शिष्य के हृदय में उच्च आदर्शो स्थापित करते हुए एक श्रेष्ठ गुरू बन जाता है। और ज्ञान दान जैसे शिक्षा क्षेत्र के पावित्रता का जतन कर सकता है। इस तरह 'शिक्षक' छात्रों के लिए आदर्श स्थापित करनेवाले होने चाहिए, जिससे आदर्श समाज की निर्मिती हो।

आज परंपरा से चली आई 'गुरू' की महत्ता शिक्षा क्षेत्र में दिखाई नही देती है। शिक्षा क्षेत्र पवित्र माना जाता था, आज वही क्षेत्र अपवित्र होता चला जा रहा है। शिक्षा दान को श्रेष्ठ समझनेवाला गुरू आज की दुनिया में स्वार्थांधतासे लिप्त होकर अनेक

अवगुणों को धारण करते हुए शिक्षा क्षेत्र को अपवित्र बना रहा है। आदर्श अध्यापकों के साथ - साथ दुगुर्णोनों का पालन करनेवाले अध्यापकों की संख्या आज बढ रही है। परिणामस्वरूप; अध्यापकों से सम्बन्धीत अनेक समस्याएँ शिक्षा जगत् में उभरकर सामने आ रही है। जिसका यथार्थ चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में किया है। 'शिक्षा' को मुक्ती का द्वार माननेवाली मैत्रेयी पुष्पा ने आधुनिक युग के अध्यापकों की स्थिती और उनके गुण - अवगुणों का चित्रण अपने साहित्य में निम्नप्रकार से किया है।

6.1 अध्यापकों का भ्रष्टाचार में हिस्सा :-

आज के आधुनिक समाज को अधोगती की ओर ले जानेवाला सबसे बडा रोग लगा है - जिसका नाम है - 'भ्रष्टाचार' जिसे रिश्वत कहा जाता है। एण्ड्रिस्की ने 'भ्रष्टाचार' के संबंध में कहा है - ''ऐसे तरीके में सार्वजनिक शक्ति का नीजी लाभ के लिए प्रयोग जो कानून का उल्लंघन करता है। भ्रष्टाचार कहलाता।'' 2 आज भौतिक सुख प्राप्ती के लिये लालयीत समाज प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार करते हुए सुख को पकडने की कोशिश कर रहा है। अपने परिवेश से प्रभावित होकर 'शिक्षा दान' जैसे पवित्र क्षेत्र में काम करनेवाला शिक्षक भी आज भ्रष्टाचार से लिप्त है।

'इदन्नमम' उपन्यास में चित्रित गांव के शिक्षा व्यवस्था में गाँव के प्रधान, अध्यापक, हेडमास्टर से लेकर नेताओं तक सभी भ्रष्टाचार से लिप्त है। पडोस के गांव में एक भी स्कूल नही है। परंतु सडक के किनारे के गांवों में चुनावी वोट पाने के लिए नेता लोग एक ही गांव में दो - दो स्कूल बनाते है जिसमें रिश्वत पाने के लिए प्रधान, अध्यापक, हेडमास्टर सभी शामिल है। गोंति गांव के प्रधान कहते है, ''मबूसा में दो - दो स्कूल है, पहला स्कूल ओवरसियर और प्रधान ने खारिज कर दिया है। इसलिए कि, पंद्रह प्रतिशत कमिशन लिया है ओवरसियर ने। कुछ उपर भी पहँचाया होगा, उपरवालों ने और उपर। और एम.एल.ए.जी. के लिए सत् - प्रतिशत वोट।'' 3 अत: स्पष्ट है कि राजनीति ने शिक्षा क्षेत्र में प्रवेश करते हुए इस व्यवस्था को भ्रष्ट किया है। आज नेता लोग 'वोट' पाने के लिए शिक्षा क्षेत्र का बडे पैमाने पर उपयोग कर रहे है।

मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास तो 'शिक्षा' विषय पर ही आधारित है। आज के ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षा व्यवस्था का यथार्थ चित्रण 'चाक' उपन्यास है। 'चाक' उपन्यास में

शिक्षा क्षेत्र में आये भ्रष्टाचार का यथार्थ अंकन आया है। 'अतरपुर' गांव के हेडमास्टर थानासिंह से लेकर गांव के प्रधान फत्तेसिंह तक सब लोग भ्रष्टाचार में शामिल है। हेडमास्टर थानासिंह खुद स्कूल में पंद्रह - पंद्रह दिन नही जाता है, अपने बदले प्रधान फत्तेसिंह का बेटा हुकमा को महिना तीनसौ रूपये पर पढाने के लिए कहता है। गांव में नये आये श्रीधर मास्टर को अपनी तरकीब बताते हुए थानासिंह कहता है। ''मास्टर के हाथों में कुबेर का खजाना नहीं होता, सृष्टि का खजाना होता है, अब की बार छमाही इम्तहान में आधे से ज्यादा बालक फेल कर दो, सालाना में दूसरे आधे .... म्हातारी बाप भागे - भागे आएंगे तुम्हारे पास और टयूशन के लिए गिडगिडाएँगे। यह कोई इण्टर कॉलेज नहीं कि हर बच्चा टयूशन की नसैनी चढे बिना अगली कक्षा में चढ जाता है। यहाँ तो हमें ही युक्ति सोचनी पडगी। सो सोचली तरकीब। मनमाने पैसे माँग लेना। थोडा नामालूमासा कमीशन मेरा।'' 4 इस तरह अज्ञानी गाँववालों का फायदा उठाते हुए पैसा कमाने कि तरकीब बताते हुए थानासिंह अपने साथ - साथ श्रीधर मास्टर को भी भ्रष्टाचार के लिए प्रेरित करता है। यहाँ अज्ञानी पालकों का फायदा उठाते हुए बच्चों के साथ खिलवाड करने की अध्यापकों की वृत्ति सामने आती है।

'चाक' उपन्यास में 'स्कूल' की इमारत पुरानी हो जाने पर 'अतरपुर' गांव में स्कूल की नई इमारत बनाने के लिए फंड आता है। हेडमास्टर थानासिंह फंड के पैसे हडपना चाहता है नया मास्टर श्रीधर नेक किस्म का है, यह जानते हुए भी वह उसे लालच दिखाता है। ''हिस्सा तुम्हारा भी होगा। मुफ्त में नहीं लेना चाहते तुम्हारे दस्कत। जब सबके दस्कत की कीमत है, तो तुम्हारे दस्तकों की क्यों न होगी? दो कोठरा भी खडे नहीं करने। इसी स्कूल की रंगाई पुताई करवानी है, बस। इंजीनियर बिल्डिंग पास कर देगा, अहलकार दस्कत करके मंजूरी दे देंगे। बोलो तुम कितना माँगते हो? दस हजार? बारह? चलो पंद्रह हजार तक।'' 5 इस तरह शिक्षा क्षेत्र भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ है जिसके उपर देश कि इमारत खडी करने का जिम्मा सौंपा है, वही बच्चों की स्कूल की इमारत बेचने चला है।

'इदन्नमम' उपन्यास में 'श्यामली' गांव का मकरंद स्कूल शिक्षा के बाद डॉक्टरी पढने इलाहाबाद जाता है। इलाहाबाद के में मेडिकल कॉलेज में चलनेवाले भ्रष्ट नीति का चित्रण वह पत्र के माध्यम से मंदा के सामने प्रस्तुत करता है। ''मेहनत तो की थी मैंने,

लेकिन डर लगता था, यहाँ चलती राजनीति से। प्रोफेसरों की औलाद राज करती है यहाँ। उन्हीं के बेटों - बेटीयों से खतरा रहता है। अंधेर मचा रखा है इन लोगों ने। श्रम पर गुना भाग का कब्जा।'' 6 इस तरह पैसा देकर 'बुध्दिमता' को खरीदने की परंपरा निर्माण हो रही, जिसम वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कडी मेहनत, लग एवं श्रम से अध्ययन करनेवाले छात्रों पर अन्याय हो रहा है। सत्ताधारी, धनिक लोग पैसे देकर मनचाही डिग्री अपने बच्चों के लिए खरीद रहे है। जिससे ग्रामीण इलाके के गरीब, मेहनती, बुध्दीमान छात्रों के साथ पक्षपात हो रहा है। भ्रष्टाचार के संबंध मे डॉ.अनिता रावत कहती है। ''आज सर्वत्र नौकरशाही, भ्रष्टाचार, दाँवपेच की राजनीति और नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है जिसके जिम्मेदार हमारे नेतागण है।'' 7 इस तरह आज के शिक्षा क्षेत्र पर राजनीति हावी हुई दिखाई देती है।

'विजन' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के नेत्र विभाग में चलनेवाले भ्रष्टाचार का चित्रण किया। मेडिकल कॉलेज यह शिक्षा क्षेत्र में उच्चशिक्षित लोगों सबसे श्रेष्ठ, समाजसेवी क्षेत्र, माना जाता है। परंतु, इस क्षेत्र में भ्रष्टाचार परमसीमा पर पहुंचा दिखाई देता है। 'विजन' उपन्यास की नायिका 'नेहा' की शादी प्रसिध्द नेत्र चिकित्सक डॉ.आर.पी.शरण के 'बेटे' अजय शरण से तय होती है। तब नेहा की सहेली आभा दी उसे बताती है कि अजय बेंगलोर जाकर सात लाख डोनेशन देकर मेडिकल की डिग्री खरीदकर आता है। ''और तुमने कहा - ''बडे बाप का बेटा बडी रकम की थैली लेकर डॉक्टर बनने गया, क्योंकि बाप के आई सेंटर का वारिस जो बनना है। नेहा, वारिस और सर्जन में बहुत फर्क होता है। डॉक्टर की डिग्री चिपका लेना ही काफी नहीं होता।'' 8

मेडिकल क्षेत्र में पैसे देकर डीग्री खरीदना और डॉक्टरी करना यह लोगों के जान से खेलना है। क्योंकि पैसे देकर डॉक्टर बने अजय के हाथ से आखिर मरीज की मौत जाती है। यह भ्रष्टाचार का ही नतीजा है कि आम - आदमी के साथ खिलवाड करते हुए अपने सुखी जीवन के लिए तिजोरी भरना भ्रष्टाचार में आम बात हो गई है।

6.2 पद नियुक्ती में धाँधली :-

आज शिक्षित लोगों की संख्या बढी है तो दूसरी तरफ बेरोजगारी बढती जा रही है । परिणाम स्वरूप सुशिक्षित बेरोजगार युवक खेती करना पसंद नही करते है, नौकरी पाने के लिए किसी भी हद तक पहुँच सकते है । 'चाक' उपन्यास में प्रधान फत्तेसिंह के लडके को पढ - लिखकर नौकरी नही है जो सौतेली माँ बार - बार टोकती है । प्रधान फत्तेसिंह महिना तीन सौ रूपये पगार पर हेडमास्टर थानासिंह के जगह पढाने के लिए हुकमा को भेजते है । यह बात जब अतरपुर गांव मे आये नये मास्टर श्रीधरजी को पता चलती है तब उन दोनों में झगडा होता है ''मैं रोज सोचता था । आज कहूँ, आज कहूँ कडाई के साथ । लेकिन तुम पढे - लिखें हो हुकमसिंह, लियाकत बरतते हो व्यवहार में, इसलिए मैंने इशारा किया था, पर तुम समझना नहीं चाहते, या जानबुझकर...? थानसिंह गैरहाजिर रहते है तो उनकी हाजिरी भरने की तुक?

हुकमा शरीफों की तरह सिर झुकाकर खडा हो गया । 'कितने रूपए लेते हो?

'तीन सौ' यह कहकर हुकमासिंह ने रजिस्टर फिर झपट लिया । और इसी छीना - झपटी में श्रीधर और हुकमा गुँथ पडे । स्कूल के बच्चे इधर - उधर भागने लगे ।'' 9 इस तरह अपने पद पर थानासिंह प्रधान के बदले हुकमासिंह को काम पर लगाता है और अपने हेडमास्टर पद का गलत इस्तमाल करता है ।

'विजन' उपन्यास डॉ.आलोक पूल ऑफिसर थे, सोनियर रेजीडेंसी खत्म होने पर वह असिस्टेंट प्रोफेसर बनना चाहते थे जो पोस्ट उन्हें नही मिल रही थी । तब उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री को पत्र लिखा था कि इस पोस्ट के लिए चालीस लोगों का साक्षात्कार हुआ था । और पोस्ट पाने के लिए वरिष्ठों की पूछताछ की बात वह करता है जिससे वरिष्ठ डॉ. चोपडा डॉ.जगोरा उस पत्र का जवाब मिलकर तो देते है परंतु असिस्टंट का पद माँगने वाले अलोक को स्कूप के जरिए आँख निकालने के झूठे केस में फँसवाकर उसका इस्तिफा लेते है -

''सर्जन डॉ.आलोक !

''लापरवाही और असावधानी.... मरीज लाखों का दावा करनेवाला है । लगभग छ! लाख । देख लो अपनी सामर्थ्य या फिर सजा.. चीफ तो सी.बी.आई को केस दे देंगे ।''

डॉ.आलोक में इतनी भी ताकत नहीं कि आश्चर्य से मुँह खोले रह जाए ।

‘‘अब ऐसे मुर्दे की तरह क्या देख रहे हो? तुमने ही इसे राजनीतिक रूप दिया है। सोचकर देखो। दूसरे की पोजीशन भी समझो।’’

डॉ.चोपडा ने सारा खेल खुलासा कर दिया।

‘‘द बॉल इज इन युअर कोर्ट डॉ.आलोक (गेंद अब तुम्हारे कोर्ट मे हैं) बोलो क्या मंजूर है।’’

डॉ.आलोक ने शायद ही पन्द्रह मिनट सोचने का वक्त किया हो।

‘‘सर आय विल रिजाईन ! सर मैं त्यागपत्र देता हूँ !’’ 10

इस तरह डॉ.आलोक एक मेहनती, इनामदार डॉक्टर थे वह अपना हक माँग रहे थे। परंतु, वरिष्ठ लोग उसे असिस्टंट प्रेफिसर’ का पद तो नहीं देते बल्की उसे ही पुराने केस में फसाकर उसका त्यागपत्र लेते है। यहाँ गरीब मेहनती छात्रोंपर वरिष्ठोंसे अन्याय होता है और बुध्दीमान युवक बेरोजगारी में जीते - जीते कुण्ठाग्रस्त हो जाते है। उन्हें इस व्यवस्थों पर ही क्रोध आने लगता है। इस तरह श्रेष्ठता का मापडन धन बनता जा रहा है। बौध्दिकता का कोई मूल्य ही नही रहा है। ‘चाक’ उपन्यास में भी ‘पद नियुक्ती’ में धांधली का यथार्थ चित्रण आया है। ‘अतरपुर’ गांव के राकेश और छोटा भाई उच्चशिक्षित होकर खेती - बाडी संभालते है। उन्होंने अध्यापक की नौकरी क्यो त्याग दी इसका वह बयान करते है - ‘‘ भवर, तब तो तू भी पढता था इगलास में। जबरदस्ती प्रिंसिपल साहब ने मुझसें मास्टर की पोस्ट के लिए अर्जी लिखवा ली। उन्हीं का लिहाज करके इण्टरव्हयू देने चला गया। साली कक्षा छ और सात को पढाने के लिए मैं तैयार होता? पर सोच लिया था, प्रिंसिपल साहब आदरणीय हैं, इनकी अवज्ञा करना ठीक नहीं। मैं अपने आपको यहीं सर्वश्रेष्ठ सावित कर दूँगा।

‘उम्मीदवार मैं था और था लाला के साले का, लडका। मेरे नंबर ज्यादा थे। पूरा रिकॉर्ड उस पर भारी पडता था। पर जहाँ पहले ही साजिश कर ली गई हो, वहाँ तो आदमी भारी पडेंगे, योग्यता नहीं। प्रिसिपल साहब अड गए थे। यहाँ तक कि इस्तीफा देने को तैयार हो गए थे कि भाई भतीजावाद योग्यता को पीछे नहीं ढकेल सकेगा। मुठभेड तगडी थी। कमेटी का चेयरमैन बनिया, प्रिंसिपल नवनिहारायसिंह जाट। वे ऐंसे प्रधानाचार्य नहीं थे कि कमेटी के इशारे पर उठक - बैठक करें। चेयरमैन से हार नहीं मानी। अंत में एक ही उपाय रह गया। नियुक्ती दोनों की हुई।

एक अध्यापक की पोस्ट पर स्कूल को दो मास्टर मिले।

'वेतन आधा - आधा बॉट देनें की बात थी। डयूटी थी पहला अध्यापक यानि विशन गुप्ता छठी - सांतवी को कृषि विज्ञान पढाएगा और मैं वे कक्षाएँ लुँगा जिनके अध्यापक गैरहाजिर है। अर्थात हर विषय का मास्टर। मन में आया कि कह दूँ, भाड में गई तुम्हारी नौकरी। लो रखों अपना नियुक्तिपत्र।'' 11

इस प्रकार आज शिक्षा व्यवस्था शिक्षा - संस्थाओं के शासकों को हाथों मे चली गई है। वह उन्हें जो छात्र नियुक्ति करना है उसे ही नियुक्ति देते है उस समय छात्र कि काबिलियत, बौध्दिकता देखी नही जाती है, तो रिश्ते - नातेंदार, ज्यादा धन देनेवाला इन बातों पर नियुक्ति की जाती है। जहॉ आज शिक्षा संस्थाएँ सत्ता, भ्रष्टाचार और धन कमाने के अड्डे बनते जा रहे है।

6.3 अध्यापकों की चरित्रहीनता :-

माध्यमिक और कॉलेज में किशोरावस्था तथा युवा वर्ग के छात्र छात्राएँ पढते है, इनमें शारिरिक तथा मानसिक आकर्षण रहता है। निसर्ग नियम के अनुसार इस उम्र में स्त्री - पुरूष का एक दुसरे की ओर आकर्षण बढता है। छात्राएँ अपने कॉलेज के अध्यापकों की तरफ आकर्षित हो जाती है। तो कभी अध्यापक छात्राओं को आकर्षित करते है। मैत्रेयी पुष्पा ने भी अपने साहित्य में चरित्रहीन, व्यसनाधीन अध्यापकों का विविध प्रकार का चित्रण प्रस्तुत किया हुआ दिखाई देता है।

'चाक' उपन्यास की नायिका को सौतले मॉ के सुख में खलल डालनेवाली 'सारंग नैनी' को पिता 'कन्या गोकुल आश्रम' में पढने के लिये छोड आते है। कन्या आश्रम के अनुशासन के कारन वहॉ किसी पुरूष को रहने की इजाजत नही है, सिर्फ संस्कृत पढानेवाले शास्त्रीजी है। जिनपर मधुमक्खियों की तरह लडकियॉ भिनभिनाती है। चालीस साल के शास्त्रीजी इसका फायदा उठाते हुए अनेक छात्रोंओं के साथ सम्बन्ध बनाते है। जिसकी शिक्षा छात्राओं को मिलती रहती है। सारंग नैनी भी शास्त्रीजी के प्रति आकर्षित हो जाती है। ''कोई विलासी नहीं शास्त्रीजी। चालीस वर्ष की अवस्था के गोरे रंग और लंबे कद के मुलायम मुखवाले शास्त्रीजी की छबी बुरी तरह तंग किए थी। बंधन परमराने लगे। मैं शास्त्रीजी के कमरे में अनायास ही चली गई। महूरत अच्छा था कि किसी ने देखा नहीं। वर्षा ऋतु की तीखी उमस भरी गर्मी। खादी के वस्त्र पहने हुए ...

काश, महीन कपडे होते। वह आलिंगन से चुंबन तक पहुँचने का समय था। मैं भोग की इच्छा रखती हुई भी शास्त्रीजी की बाँहों से फिसल रही थी कि भडाक से दरवाजे की किवाडे खुली।

तुरंत सँभल गई। शास्त्रीजी ऐसे खडे हो गए जैसे किताब में से कोई कठिन श्लोक समझा रहे हों। सतर्क और सावधान मुद्रा के नाटककार शास्त्रीजी।'' 12 इस प्रकार शास्त्रीजी अपने जाल में कई छात्राओं को फसाते है। कई छात्राओं को गुरूकूल आश्रम के कडे अनुशासन के कारण कडे दंड को भुगतना पडता है, तो कई लडकियाँ माता - पिता ने न स्विकारने के कारण और कडे नियमों के कारण तंग आकर जान दे देती है। इस तरह युवावस्था में स्त्री छात्राओं का पुरूष वर्ग की तरफ आकर्षित होने का दंड मौत तक भी ले जाता है।

'चाक' उपन्यास में 'अतरपूर' में नये आये मास्टर श्रीधर प्रजापती ईमानदार, नेक काम पर श्रध्दा रखनेवाले है, परंतु चारित्रिक दृष्टी से उनका पतन हुआ दिखाई देता है। सारंग नैनी और श्रीधर मास्टर के अवैध सम्बन्ध दिखाई देते है ... मैंने लाज मानी न व्यभिचार ! श्रीधर को आनंद सरोवर में खीच लिया। कोठे में रस बरस रहा था। छत पर फागुन ने जैसे फूलों की डोली उतारी हो। लहरों में बहते रहे आखिरी हद तक ! रस की लहरों में ! अपना अंग - अंग भारी गागर की तरह उलीच डाला।'' 13 इस प्रकार बेटे चंदन की सुरक्षा हेतू सारंग श्रीधर मास्टर के साथ अपनत्व बढाती जाती है।

'इदननमम' उपन्यास में भी कैलास मास्टर अत्यारी के रूप में दिखाई देता है। कुसमा भाभी का सौतेला पीहर 'बिरगाँव' में नायिका 'मंदा' को लेकर भारत मामा के गांव आ जाती है। दादा पंचमसिंह ने 'मदा' को सुरक्षित रखने को भारत को कहा था। परंतु कैलास मास्टर जो रिश्ते मे 'मंदा' का मामा है वह मंदा पर अत्याचार करता है।

'इदननमम' उपन्यास के 'श्यामली' गांव मे आये मास्टर व्यसनाधीन है। वह हमेशा नशे में धूत रहते है। ''अरे काहे को ! वे तो कब के बदल गये। अब तो है एक सराबी - कबाबी। नासियां को तन - बदन की ही सुरत नहीं रहती, पढायेगा क्या? जे कुंवर बई स्कूल में बरबाद हो रहे हैं। चाली हो गया यह लरका। तमाम गारी - मारी सीख

गया है।'' 14 'इदन्नमम' मै मैत्रेयी पुष्पा ने आदर्श अध्यापकों के साथ - साथ दुगुर्णो से युक्त मास्टरों के रूपों का चित्रण किया है। जिसका आसर छात्रों पर होता है।

'विजन' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने मेडिकल कॉलेज के अत्याचारी डॉक्टर का चित्रण किया है। मेडिकल कॉलेज के नत्र विभाग के डॉ. अनुज वर्मा मरिज सरोज पर बलात्कार करता है। पच्चीस साल की लडकी सरोज को डॉ.आभा साथ देती है, पर पति के डर से सरोज बयान बदल देती है। अत्याचारी डॉ.अनुजवर्मा का चित्रण लेखिका इस प्रकार करती है।'' लेकिन सब कुछ कहने हुए भी डिपार्टमेंट में जो अनकहा चल रहा था, वह था डॉ.अनुज ऐसा काम कर सकता है। उसकी हवस ऐसी ही है। ही इज सिक अबाऊट विमैन।'' 15 रूग्णों के सेवा करनेवाले डॉक्टर अनुज सरोज के अंधपन का फायदा उठाकर उसपर अत्याचार करते है, इससे स्पष्ट होता है की जो मेडिकल क्षेत्र सेवा का श्रेष्ठ स्थान माना है, उसका ही पोस्टमार्टम मैत्रेयी पुष्पा ने 'विजन' में किया है। जिसमें मेडिकल कॉलेज के भ्रष्टाचार, व्यभिचार और नारी शोषण का यथार्थ चित्रण अंकित किया गया है।

शिक्षा क्षेत्र ज्ञान दान का पवित्र क्षेत्र माना जाता है। अध्यापकों के हाथों देश का भविष्य छात्रों के रूप में दिया जाता है। परंतु एकाद - दुसरे चारित्रिहीन, व्यसनी दुगुर्णो के अध्यापकों के कारण शिक्षा क्षेत्र की नींव पर ही हातोंडा डाला जाता है। जिससे शिक्षा क्षेत्र तह से हिल उठता है। अपनी घिनौनी हरकत से दुगुर्णो को लिए अध्यापक शिक्षा को बदनाम कर रहे है। बदलते परिवेश से भौतिक सुख के पीछे पडा अध्यापक भी भ्रष्टाचारी अन्यायी होते हुए दुगुर्णो की तरफ किस प्रकार बढ रहा है इसका यथार्थ चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने सफलता से लाया है।

6.4 दलित - आदिवासी अध्यापकों पर होनेवाले अत्याचार :-

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में दलित - आदिवासी अध्सापकों पर होनेवाले अत्याचार की समस्या को उजागर किया है। दलित - आदिवासी लोग पढ - लिखकर नौकरी पाने की कोशिश करते है बडे प्रयास अनेक कठिणाईयों का सामना करने पर नौकरी तो प्राप्त होती है। दलित आदिवासी जाति के होने कारण सवर्ण - उच्चवर्णिय

मानसिकता के लोग बार - बार अनेक जाति का उल्लेख करते हुए उनका अपमान करते है। जिससे पढे लिखे दलित - आदिवासी नौकरपेशा वर्ग कुण्ठाग्रस्त जीवन जीता है।

'चाक' उपन्यास में श्रीधर प्रजापति मास्टर कुम्हार जाती का है। जो भारतीय समाज में निम्न जाति में आ जाति है। बचपन में ही माँ का साया उठा जाने के कारण श्रीधर के पिताजी बेटे को शिक्षा की ललक देखकर सहपऊ इण्टर कालिज के प्रवक्ता श्रीप्रसाद वर्ष्णिय जी के घर शिक्षा प्राप्त करने के लिये छोडते है। वहाँ श्रीधर वार्ष्णेय जी के घर का काम करते हुए उनके बच्चों का पालन - पोषण करते हुए शिक्षा ग्रहण करते हुए अध्यापक बनता है। परंतु उसके श्रम की तरफ कोई नही देखता बल्कि उसके प्रति दिखाया गया दयाभाव को लेकर उसे बार - बार उसके जाति को लेकर अपमानित किया जाता है। श्रीधर ने सोचा था आदमी तरक्कीयाक्ता हो जाता है, तब लोग भूल जाते हैं पिछली बातें। लेकिन कितनी गलत साबित हुई यह धारणा - उन्हें लग रहा है कि उन्नतीशील आदमी के पहले जीवन की खुदाई फिर से चालू कर दी जाती है .... सहपऊ - अलीगढ की बातें यहाँ तक आना कोई कठिन है। 'कौन है तुमरे गांव में मास्टर? अच्छा, अच्छा? श्रीधर प्रजापति। अच्छा है बेचारा। गू - मूत धोकर पढाई की है। आधे पेट खाकर सोया है। बडी उन्नति की। भगवान घूरे की भी सूनता है एक दिन। बारह वर्ष बाद दरिद्री के भी दिन फिरते है।' ये बातें श्रीधर की छाती पर हथौड। सी बजती है, और वे सो नहीं पाते।'' 16 इस तरह आश्रित बनकर और निम्न जाति का होकर उच्चशिक्षा हासिल किया है इस बात का गौरव करने के बजाय लोग उसे बार - बार उसके आश्रित होने को याद करा देते थे जिससे श्रीधर मास्टर के मन को कचोटता था और वह व्यथित हो जाते थे

'चाक' उपन्यास में कबूतरा जाति की भूरी कबूतरा अपने बेटे रामसिंह को पढाती है। जीवनभर के दर्द उठाकर भूरी ने रामसिंह को पढाया था रामसिंह अध्यापक बनकर अपने समाज की सेवा करना चाहता था परंतु वह आदिवासी जाति का था जो सवर्ण लोगों ने से पद पद पर मुश्किल कर दिया। ''वह एक अर्जी लिख रहा था। बरामदें में दूर बैठा हुआ। अर्जी में सताए हुओं की दास्तान थी। जन - कल्याण ऑफिस में देता जाएगा इन सबके खिलाफ।

तभी चपरासी की हँसी कंधे पर ततैया - सी काटती चली आई - सुन लों कबूतरा की बातें बडे बाबू? हथकडी नहीं लगीं, सो कलाइयाँ खुजाने लगीं। साले ऊँची जाति के

लडकों के हकों को हडपकर चोर - उचक्कों से मास्टर - फास्टर बन गए। अब तक अम्मा लहँगा उठाए फिरती थी। बेटा कुर्सी पर क्या बैठा अम्मा सती - सावित्री हो गई ? सिपाही अब तक चाहते है बुढी हो गई तो क्या औरत नहीं रही? और यह अपनी माँ का भडुआ, तुम्हें अपनी है सियत समझा रहा है।

रामसिंह शेर की तरह कुदा। चपरासी की गर्दन पकड ली। टाँग उठाकर पलट डाला।

उसकी खोपडी अपनी जाँघों के बीच फँसा ली और दाँती पीसता हुआ जाँघे भींचता चला गया - मेरी माँ दुष्टों को ऐसे मारती है, ऐसे.... खतम।

दफ्तर में भगदड मच गई। बडे बाबू की घिघ्घी बँध गई। लोग जब तक जुडे, वह उड आया। रामसिंह कबूतरा ... जिनके रास्ते जुदा होते हैं। गैल - पगडडियाँ अपनी बनाई हुई।

पछताता भी रहा। कैसा सपना देखा माँ ने, जो इस तरह कुचला गया। नौकरी निभाना बेखौफ जीना नहीं हो सकता। अपने लोगों को जगाने की बात सोची थी, वह भी बेकार है। सुख हमारी तकदीर में नहीं। नौकरी छूटने लायक अपराध कर आया। अब हथकडियों की बारी है। खुशी उनके लिए तो और भी नहीं, जो इंसान की तरह खुशी की छाया छूने को मरते हैं। माँ ने अपनी जिंदगी चुकाकर ऐसा ही सुख चाहा था, कितनी जल्दी दुख में बदल गया। इन लोगों को पता नहीं कि माँ अब इस दुनिया में नही। होती तो इन आततताइयों की पूरी बर्बरता के साथ जाँघों में भींचकर भार डालने का मौका ढूँढती। नौकरी नहीं छूटी, क्योंकि नौकरी से बाबुओं और दीवनसिपाहियों को अब भी कुछ उम्मीद थी।'' 17 कबूतरा जाती का रामसिंह मास्टर बना था जो बाबू लोग थे अगर समय पर हप्ता न दिया तो रामसिंह को चोरी के इल्जाम में हवालात में बंदी कराया जाता था। क्योंकि वह कबूतरा जाति का था। जिस जाति को समाज, सरकार ने चोर - उचके जातियों में दर्ज किया था। आखिर में रामसिंह अध्यापक की नौकरी छोड देता है। इस प्रकार आज भी आदिवासी लोगों को पढ - लिखकर इज्जत को जिंदगी जीने का अधिकार यह उच्चवर्णिय समाज नहीं देता। कई आदिवासीयों को अपराधी जनजातियों में अंग्रेजों जमाने में घोषित किया था। स्वतन्त्रता के बाद इन्ह लोगों को अपराधी चोर - उचके न मानकर उन्हें मनुष्य बनकर जीने का अधिकार है। यह बात भारत के प्रथम प्रधानमंत्री

जवाहरलाल नेहरूजी ने की थी। परंतु आज भी इन्ह अपराधी जनजातियों को अपराधी श्रेणी में ही देख जाता है और उनपर हर समय संदेह करते हुए उनकी जिंदगी नरक बना दी जाती है इस वास्तवता का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में किया है।

'इदन्नमम' उपन्यास में भी भृगुदेव दलित समाज का होने के कारण उसके उच्चवर्णिय सहपाठी उसकी घृणा करते है। उसे अपमानित करते छात्रावास के वार्डन के यहाँ शिकायत करने पर वह भी निम्नजाति के होन के कारण उन्हें भी माँफी माँगनी पडी थी। ''शिकायत करने की बात कहता तो बुरी तरह पीटते।

''मेरे प्रतिरोध करने पर एक लडके ने मेरी उंगलियों पर ब्लेड चला दिया। मैं पीडा से चीखूँ उसके पहले मेरा मुख भींच दिया।

''वार्डन ने सुना तो दौड आये।

''दुर्भाग्य से वे भी हमारी जाति के थे।

''दण्ड के तौर पर अपराधी लडके विरूध्द कार्यवाही की तो कॉलेज में हडताल हो गयी। वार्डन से माँफी मँगवाई गया।'' 18 इस प्रकार वॉर्डन आदिवासी जाति के थे उन्होंने दंड सुना दिया। इसलिए उच्चवर्णिय छात्र हडताल करके वार्डन को ही माफी माँगने के लिए मजबूर करते है। इस से स्पष्ट हो जाता है, कि पद, काबिलिय के बजाय जाति श्रेष्ठ होकर निम्नजाति के अध्यापकों पर अन्याय किया जाता है, उन्होंने न की हुई गलती की माँफी माँगनी पडती है। इस तरह दलित - आदिवासियों के प्रति स्वतन्त्रता के बाद उनके उन्नति के लिए समाज ने एक ओर सकारात्मक उपलब्धियाँ दी, तो दूसरी ओंर रूढीवादी विचारों के रहते, नकारात्मक दृष्टिकोन रखते हुए इस समाज को शक्तिहीन बनाने का प्रयास जारी है।

'मरे साक्षात्कार : मैत्रेयी पुष्पा' इस किताब में संगीता गुप्ता से मैत्रेयी पुष्पा कहती है ''दलित, जो आज भी अन्याय और गैरबराबरी के शिकार है जो अपमान और उपेक्षा को पीकर वोटर के रूप में प्रजातंत्र की धुरी हैं अब डगमगाने लगे हैं, क्योंकि दंशों के दर्द की तीव्रता बर्दाशत नहीं होती, अत: वे अपने ही जैसे प्रताडित समाज की सलाह पर, सहूलियतों (जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ और भोजन, कपडे और मकान की व्यवस्था) को देखकर हिंदू धर्म को त्यागने लगे हैं। उन्होंने माना यह भी है कि वे कभी हिंदू थे ही नहीं, यदि होते तो शोषित - वंचित क्यों रहते? जब तक निचले पायदान पर पटके गए

लोगों और अल्पसंख्यकों को हिंदू धर्म से उपेक्षा और सजाएँ मिलेंगी, तब तक स्थिति सुधरने वाली नहीं। कुछ हमें अन्य धर्मों से भी सीखना चाहिए कि वे 'इंसान' को गिराते नहीं, उठाते हैं। वे ईश्वर से अपने लिए 'वरदान' नहीं, इंसानियत के लिए सकून माँगते हैं। 19 भारतीय समाज में भी इंसानियत कि स्थापना करनी हो तो प्रत्येक मनुष्य को जीवन जीने का समान अधिकार प्रदान करना चाहिए यही विशेषता मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की रही है।

6.5 निष्कर्ष :-

भारतीय समाज में प्राचीन काल से शिक्षा को श्रेष्ठदान माना जाता था और वह कार्य करनेवाले गुरू छात्र, समाज के लिए आदर्श रहते थे। परंतु आधुनिक युग में अध्यापकों के जीवन को अनेक समस्याओं ने घेर लिया। परिणाम स्वरूप ; सुखी जीवन की आस में आज के अध्यापक ज्ञान दान के बजाय अन्य बातों की तरफ ज्यादा ध्यान देते है। इसका उदाहरण 'चाक' के संस्कृत पढानेवाले मास्टर और विजन के प्रोफेसर डॉ. अनुज इन्ह उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि अध्यापक ज्ञान दान से भटकते हुए दुर्व्यवहार, भ्रष्टाचार, धोका धडी की ओर झुक रहे। जिससे शिक्षा क्षेत्र बदनाम होता जा रहा है। इसका चित्रण मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य से यथार्थता के साथ चित्रित होता है।

अध्याय छ :

सन्दर्भ संकेत

1. डॉ.रामशुक्ल पाण्डे, डॉ.बीना कपूर - 'शिक्षा के दार्शनिक आधार' पृ- 162
2. राम अहुजा - 'सामाजिक समस्याएँ' पृ - 434
3. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम', पृ - 232
4. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 172
5. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 243
6. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम', पृ - 245
7. डॉ.अनिता रावत - 'अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता', पृ - 26
8. मैत्रेयी पुष्पा - 'विजन' पृ - 74
9. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 174
10. मैत्रेयी पुष्पा - 'विजन' पृ - 200
11. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 43 - 44
12. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 90
13. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 329
14. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 253
15. मैत्रेयी पुष्पा - 'विजन' पृ - 164
16. मैत्रेयी पुष्पा - 'चाक' पृ - 170
17. मैत्रेयी पुष्पा - 'अल्मा कबूतरी' पृ - 102
18. मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' पृ - 342
19. मैत्रेयी पुष्पा - 'मेरे साक्षात्कार', पृ - 97

अध्याय सात

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चर्चित शिक्षा की अन्य समस्याएँ

(इदन्नमम, चाक, अल्माकबूतरी, विजन के संदर्भ में)

7.0 विषय प्रवेश :-

देश स्वतंत्र हो जाने पर देश के सामाजिक, आर्थिक, राजकीय विकास के शिक्षा को माध्यम के रूप में देखते हुए शिक्षा का प्रचार - प्रसार जोर पर रहा। व्यक्ति शिक्षित बनकर समाज परिवर्तन की प्रक्रिया में भागीदार बनता है। इसलिए सरकार ने शिक्षा के प्रचार - प्रसार की ओर ज्यादा ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप; देश मे पढ़े - लिखे लोगों की संख्या बढी जरूर परंतु, वर्तमान स्थिती में बदलते परिवेश ने व्यक्ति को शिक्षा के माध्यम से एक सुसंस्कारित मनुष्य निर्माण करने के बजाय एक स्वार्थांध व्यक्ति बनने कि प्रक्रिया शुरू है। क्योंकि, आज समाज में राजनीति के प्रभाव के कारण भ्रष्टाचार, नेतागिरी, गुंडागर्दी का माहौल तयार हुआ है तो दुसरी तरफ मुक्त बाजारवाद ने मनुष्य को भौतिक सुखों के पिछे ऐसे दौडा है। कि वह नाते - रिश्ते, परिवार समाज को भूलकर स्वार्थाधता में पैसे को ईश्वर मानकर प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, नेतागिरी, असंगतियाँ, विकृतियाँ, मूल्यों का अवमूल्यन दिखाई दे रहा है। इससे शिक्षा क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। शिक्षा समाज बाँधने का माध्यम है। परंतु, वर्तमान स्थिती में शिक्षा क्षेत्र में भी समाजविघातक कृत्यों का बोलबाला बढता हुआ दिखाई रहा है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में शिक्षा क्षेत्र निर्माण हो रही समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है जिन्हें हम अन्य समस्याओं के अंतर्गत देखेंगे।

७.१ छात्रों से सम्बन्धित समस्याएँ :-

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय मांगो के अनुरूप नागरिकों का निर्माण करना यह उद्देश्य रहा है। परंतु आज के वर्तमान स्थिती में शिक्षा से व्यक्तित्व निर्माण, राष्ट्र निर्माण यह उद्देश्य दूर जा रहे है और भ्रष्टाचार के बढते प्रभाव ने छात्रों का नैतिक पतन जोरों पर हो रहा। जिससे शिक्षा क्षेत्र में छात्रों से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही है, जिससे शिक्षा संस्थाएँ, स्कूल, कॉलेज, छात्रावास, अशांति और अराजकता के केंद्र बनते जा रहे है।

आलोच्य साहित्य में निम्नलिखित छात्र सम्बन्धित समस्याएँ दिखाई देती है।

7.1.1 रैंगिग :-

स्कूल, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय शिक्षा के वह केंद्र जहाँ छात्र समूहजीवन को जीता है। जिसके माध्यम से सामाजिक विकास एवं नये सम्बन्ध बनते है। आज शिक्षा केंद्रो में रैगिंग चलता है ''रैंगिंग को मुख्य उद्देश्य विद्यालयीन वातावरण से निकलकर महाविद्यालयीन वातावरण में प्रवेश करनेवाले नये विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना, उनके मनोबल को बढाना और उनका मानसिक एवं शारिरिक विकास करना है।'' 1 परंतु आज महाविद्यालय, विश्वविद्यालय वरीष्ठ छात्रों की ओर से कनिष्ठ छात्रों पर अत्याचार करने के केंद्र बनते जा रहे है। महाविद्यालय, अध्यापकों, शिक्षा संस्थाओं का परिवेश आदि से परिचित होने के कारण इसका फायदा उठाते हुए वरिष्ठ छात्र कनिष्ठ छात्रों पर अन्याय - अत्याचार करते नजर आ रहे है। आज रैगिंग का प्रचलन शिक्षा केंद्रो में बढता जा रहा है। कनिष्ठ छात्रों का शारिरिक, मानसिक साथ ही यौन - शोषण भी होता नजर आ रहा है। जिससे तंग आकर कनिष्ठ छात्र शिक्षा को बीच में ही छोड देते या आत्महत्या करते है। इतना रैगिंग का भयानक रूप आज समाज के सामने आ रहा है। मैत्रेयी पुष्पा ने भी अपने 'इदन्नमम' उपन्यास में रैगिंग का शिकार बना भृगुदेव का चित्रण किया है।

'इदन्नमम' का भृगुदेव पात्र अस्पृश्य समाज का है, वह आरक्षण के माध्यम से आया है यह धारणा रखने वाले उच्चवर्णीय छात्र उसपर रैंगिंग करते है। ''मेडिकल की पहली परीक्षा में ही जब में प्रथम आया तो उच्चवर्णी लडके बैर मानने लगे। नीचा दिखाने की जुगत में लगे रहते। हमारे पुश्तैनी पेशे का घृणित रूप में बखान करते।

मेरे सामने पॉलिश के लिए जुतों का ढेर रख दिया जाता। हॉस्टल में रिवाज - सा चल पडा कि धोबी जाति से हो, कपडे धुलाओं, कहार हो, बर्तन मँजवाओ और चमार हो तो...

''शिकायत करने की बात कहता तो बुरी तरह पीटते।

''मेरे प्रतिरोध करने पर एक लडके ने मेरी उँगलियों पर ब्लेड चला दिया। मैं पीडा से चीखूँ उसके पहले मेरा मुख भींच दिया।'' इस प्रकार भृगुदेव शूद्र जाति का होने कारण उस पर उच्चवर्णिय छात्र रैंगिंग करते है अंत में तंत्र आकर भृगुदेव अपनी डॉक्टरी की

शिक्षा बीच में छोडकर भाग निकलता है। ''मेरा मन उचाट हो आया। ऐसी संस्था में नहीं पढूँगा मैं। दीन - दुखियों की सेवा-चिकित्सा की दीक्षा देनेवाले ये दीक्षालय दुमुँहे क्यों है।

''शिक्षा को छोडकर किसी विद्वान के पास जाना - चाहता था। सम्भवत: मेरे मन में जमा आक्रोश कुछ कम हो जाय। 2 भेद - विभेद का महाभारत शान्त हो जाय।'' इस प्रकार भृगुदेव डॉक्टरी कि शिक्षा छोडकर भाग निकलता है।

आज रैंगिंग ने शिक्षा केंद्रों में इतने पॉव फैलाये है कि हर केंद्र मं एखाद - दुसरी घटना रैंगिंग की चलती रहती है। जिससे कमजोर मन के छात्र शिक्षा को बीच में छोडकर भाग निकलते है या आत्महत्या कर लेते है। शिक्षा केंद्रों में भविष्य का सुंदर स्वप्न लेकर आये हुए छात्रों को रैंगिंग के बढते प्रभाव ने जीवन खण्डित होता जा रहा है। आज शिक्षा केंद्रों में विकृत रैंगिंग न हो इसलिए सरकार की ओर से कायदे - कानून निर्माण किये है, परंतु आवश्यकता रैंगिंग से दूर रखना, समूहजीवन का महत्व समझाते हुए भाईचारा निर्माण करने के लिए मार्गदर्शन करना आवश्यक है।

7.1.2 परीक्षा में नकल करना :-

आज शिक्षा का उद्देश्य, ज्ञानग्रहण करना, व्यक्तित्व का विकास करना यह न रहकर डिग्री हासिल करना, नौकरी पाना यहॉ तक शिक्षा का उद्देश्य सीमित होता जा रहा है। परिणाम : आज के छात्रों का ना मानसिक या नैतिक विकास हो पा रहा है। वह सिर्फ डिग्री या नौकरी पाने के लिए कोई भी तरकीब पूँछ निकालते है, जबसे ज्यादा चलनेवाली तरकीब परिक्षा में नकल करना।

''इदन्नमम' उपन्यास में इस स्थिति का चित्रण आया है। ''

''काहे की पढाई - मढाई। नकल कर आये और बैठे घरै। एक मोंडा इन्त्यान को जाता है तो संग में चार नकल करइया। अपने पिरकास तो अव्वल है। निकल कराते में। नथू ने दुसमनी छोड दी इसी कारन। उसके मोंडा को नकल कराने गये थे अपने पिरकास। पिछले तीन साल से करा रहे है।, पर मोंडा है कि हरदार फैल ही कड जाता है।

''लो अब कें तो दद्दा ने बखर थमा दिया कि लला, कलम तुम्हारे हाथ के लानें छोटी पडती है।'' 4

इस प्रकार बीना अध्ययन किये उत्तीर्ण हो जाना लिये छात्रों में नकल करने की प्रवृत्ती बढती जा रही है उसके ज्यादातर संख्या में नकल की ओर बढनेवाले छात्रों की संख्या पर मैत्रेयी ने यहाँ चिंता जताई है। अध्ययन में अरूचि रखते हुए 'नकल' माध्यम अपनाने वाले छात्र शिक्षा पूरी नही कर सकते बल्कि, शिक्षा को छोड देते है। इस तरह आज नौकरी पाना, डिग्री प्राप्त करना उत्तीर्ण होना यही शिक्षा का उद्देश रहा दिखाई देता है परिणाम स्वरूप ; नकल करने की प्रवृत्ति बढ रही है।

7.1.3 हडताल में भाग लेकर इच्छित फल प्राप्त करना :-

आज शिक्षा केंद्रों में अपनी मनोइच्छित बात को प्राप्त करने के लिए छात्र हो या अध्यापक हडताल का शस्त्र निकालते है। जिससे शिक्षा में अनुशासनहीनता बढती जा रही है। छात्र शिक्षा संस्थाओं, महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों के अनुशासन का पालन करने के बजाय अपनी युवाशक्ति का गलत प्रदर्शन करते हुए अपनी आकांक्षाओं, इच्छाओं को पूरा करने की प्रवृत्ती बढ रही है।

'इदन्नमम' उपन्या समें 'हडताल' का चित्रण आया है। पात्र 'भृगुदेव' अपनी डॉक्टरी शिक्षा के लिए जिस छात्रावास में रहता है वहाँ वह शुद्र जाति का है यह पता चलनेपर उच्चवर्णिय छात्र उसपर रैगिंग करते है साथ ही भृगुदेव को वार्डन ने साहय करने पर वार्डन के विरूध्द हडताल करते है।

''मेरे प्रतिरोध करने पर एक लडके ने मेरी उँगलियों पर ब्लेड चला दिया। मैं पीडा से चीखूँ उसके पहले मेरा मुख भींच दिया।

''वार्डन ने सुना तो वे दौडे आये।

'' दुर्भाग्य से वे भी हमारी जाति के थे।

''दंड के तौर पर अपराधी लडके के विरूध्द कार्यवाही की तो कॉलिज में हडताल हो गयी। वार्डन से मॉफी मँगवाई गयी।'' 5

''यह न्याय - अन्याय की बात मेरी समझ के बाहर थी। जिस ग्रामीण इण्टर कॉलिज से मैं पढकर आया था, वहाँ ऐसा भेदभाव कतई न था। हमारे अध्यापक किसी भी बुध्दिमान और परिश्रमी बालक को सिर आँखों रखते।

''शहर , जहाँ शिक्षा का प्रचार - प्रसार है? जहाँ प्रबुध्द लोग रहते हैं, वहाँ इतना भेदभाव ! रात में बेचैन रहता। दिन में भी उखडा - उखडा - सा फिरता। इसी तरह

तिरस्कृत रहना है तो पढकर भी क्या होगा? दलित दर्जे से एक भी उपर सीढी चढने की आज्ञा न अनपढ को है न पढे लिखों को।'' 6

आज शिक्षा केन्द्रों मे छात्र अपनी निराशा और असन्तोष को व्यक्त करने के लिए 'हडताल' का प्रयोग करते है उसी प्रकार गलत इच्छाओं की माँग की पुर्ति के लिये भी 'हडताल' इस शस्त्र गलत तरिकेसे उपयोग कर रहे है। यह उपर्युक्त संदर्भ से स्पष्ट होता। आज इस प्रकार की अनुशासनहीनता बढती जा रही है। सन १९६० में गठित कमेटी के अनुसार विद्यार्थी अनुशासनहीनता के बारे में कहा गया है। ''जनसमूह का नैतिक पतन एवं सत्ता का सामूहिक उल्लंघन तथा वास्तविक या काल्पनिक शिकायतों को दूर कराने के लिए ऐसे तरीकों का उपयोग जो विद्यार्थियों के लिए उचित नहीं है।''7 इस तरह युवाशक्ति अपने ताकत के आधार पर इकठ्ठा होकर एक - दुसरे के विरूध्द खडा होना सामाजिक तथा शैक्षिक व्यवस्था के लिए हानीकारक हो सकता है।

7.2 राजनीति का शिक्षा क्षेत्र में हस्तक्षेप :-

आज के आधुनिक भारत का प्रत्येक गांव राजनीति से प्रभावित है। आज झुंग्गी - झोपडियों से लेकर महल तक राजनीति की बात चलती है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य साहित्य संसार में प्रत्येक विधा में राजनीति पर विचार प्रकट किये है। उनके 'चाक' तथा 'इदन्नमम' उपन्यास ब्रजपद्रेश और बुण्देलखण्ड के आज के सामाजिक और राजनीतिक जीवन के दस्तावेज ही है। उन्होंने 'चाक' तथा 'इदन्नमम' उपन्यास में आज का ग्रामीण जीवन राजनीति और भ्रष्टाचार से किसी प्रकार प्रभावित हुआ है, इसका यथार्थ चित्रण किया है। सत्यदेव त्रिपाठी कहते है ''आज के गाँवों का सच्चा सटीक आईना, भी है 'चाक' गाँव में चलती राजनीति षडयंत्र, भ्रष्टाचार किसी भी मायने में राष्ट्रीयस्तर से कमतर नहीं है।'' 8

'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने बुण्देलखण्ड प्रदेश के आरेछा क्षेत्र का गाँव - अनगावों का चित्रण करते हुए। 'सोनपूरा' गांव के माध्यम से सम्पूर्ण भारत वर्ष के आज गांवों का प्रतिकात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है, 'सोनपुरा' अविकसित पीछडे, उपेक्षित गांव का प्रतिक है जहाँ स्वतन्त्रता के बाद भी माध्यमिक स्कूल, अस्पताल पक्के रास्ते जैसे सुविधाएँ उपलब्ध नही है। राजनीतिक दृष्टी से उपेक्षित रहा 'सोनपुरा' में

चुनाव के समय ही अवसरवादी नेता आगमन करते है, सरकारी विकास योजनाओं का अकार्यक्षम होना, सरकारी भ्रष्टाचारी अफसर और राजनेताओं की अंधनीति के कारण 'सोनपुरा' गांव में 'प्राथमिक स्कूल' के आगे का स्कूल खोला नही जा रहा है । राजनीतिक नेता और जहॉ वोटो का खजाना है उसी गांव की ओर ध्यान देत है और दूर - दराज के गावों को प्राथमिक सुविधाओं से वंचित रखते है इसका चित्रण 'इदन्नमम' मे आया है । नरसिंहगड गॉव के सरपंच शिक्षा व्यवस्था की अनुपलब्धता के बारे में कहते है । ''इस अंधेर को क्या करे किं, सडक के आसपास के गॉवों में दो - दो स्कूल और अपने दूर - दराजी गॉव मीलों पर एक स्कूल के लिए तरसते हैं ।

गोंती के प्रधान जी चिन्तित - से बोले, ऐन रूपया भेज रही है सरकार, पर यह नहीं देखती कि वह रूपया कहॉ लग रहा है । अपनी सुविधा अनुसार खर्च कर रहे हैं लोग । मंत्री, एम.एल.ए. भी उन्हीं की मदद - सहायता करते हैं, जिनसे ज्यादा वोट दिलाने का आश्वासन मिलता है उन्हें ।'

''अब की बार हम भी ऐन चेतन्त हैं । वे बेईमानी से नहीं चूक रहे तो हम ईमानदारी से क्यों चूकें । देखते हैं, ये कितनी चालाकी चलते हैं हमारे साथ । अपनी ऑखों देखकर आये हैं हम । मबूसा गये थे, रिश्तेदारी है हमारी । वहॉ एक स्कूल होते हुए भी उसके बराबर में दूसरा बन गया । हमने पूछा, भइया, तुमरे गांव में यह दूसरा स्कूल? बोले, पहला खारिज कर दिया ओवरसियर ने और प्रधान जी ने । अब यह मिली भगत ही तो ऐसा अंधेर कर रही है सो ऐन उजागर है । कहने वालों ने भी हमें बता दिया कि पन्द्रह प्रतिशत कमीसन लिया है । ओवरसियरने कुछ ऊपर भी पहॅचाया होगा, उपरवालों ने और उपर और एम.एल.ए. जी के लिए शत - प्रतिशत वोट ।'' 9 इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में स्वतन्त्रता के बाद देश औद्योगिकरण, यांत्रिकीकरण, शहरीकरण एवं शिक्षा प्रसार के माध्यम से देश को उन्नत बनाने की कोशिश मे लगा है । वहीं शासन का पैसा लेकर आज के राजनीतिक नेता लोग वोट पाने के लिए गंदी राजनीति खेलते हुए आरोग्य, शिक्षा जैसी प्राथमिक सुविधाओं से भी गॉवों को वंचित रख रहे है । जिसमें अपने 'अधिकार' प्रति सजगता निर्माण हो गई है आज ग्रामीण लोग अपने वोट के बदले अपना अधिकार, विकास की मॉग कर रहे है । 'इदन्नमम' में चित्रित गांव अनगांव के लोग अपने लिए प्राथमिक सुविधाओं की मॉग करते हुए राजासाहब के सामने 'वोट' न

डालने की धमकी देते है। इस तरह आरोग्य, शिक्षा विकास योजनाओं के प्रति जागरूक होता ग्रामीण भारतीय समाज और राजनीतिक लोगों की पोल खोलने का काम मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' के माध्यम से किया है। ए.आर. देसाई कहते है - ''ग्रामीण मताधिकार में ग्रामीण जनता के जीवन में प्रबल हलचल मचा दी है। और उन्हें अत्याधिक सीमा तक राजनीतिक दृष्टी से सचेत बना दिया है। ग्रामीण समाज के इतिहास में यह एक अपूर्व घटना है।'' 10

मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास तो एक ऐसा सिक्का है, जिसमें भारत देश के ग्रामीण जीवन का एक बाजू पर राजनीतिक चित्र है, तो दूसरी बाजू पर ग्रामीण जीवन के शिक्षा क्षेत्र का चित्रण है। जिसके माध्यम से ब्रजप्रदेश के ग्रामीण इलाकों के राजनीतिक और शैक्षिक वातावरण से पाठक परिचित हो जाता है। आजादी के बाद भारत देश में खुशी की लहर दौड पडी थी। देश आजाद हो गया अब चारो तरफ सुख, शांती, चमन का वातावरण होगा। सबको जीवन जीने का समानाधिकार प्राप्त होगा। यह देश समता, बंधुता, न्याय, सर्वधर्म समभाव आदि नीतीमूल्यों के साथ चलेगा। परंतु, स्वतन्त्रता के पश्चात भारतवासियों का यह सुंदर सपना टूट गया। क्योंकि सत्तालोलुप नेताओं ने लालच के कारण, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी, शोषणकर्ता बना दिया परिणामस्वरूप; प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति ने प्रवेश करते हुए इस देश को भ्रष्ट कर दिया है। इस संदर्भ में डॉ. प्रेमकुमारजी कहते है - ''ग्रामांचल में राजनीति पहले भी थी, किंतु उस समय औसत ग्रामीण उसकी उपेक्षा करता था। परंतु अब भी सभी गॉव और कस्बे राजनीति के संक्रामक रोग से ग्रस्त हो गए है।'' 11

'चाक' उपन्यास में 'अतरपुर' गॉव के लिए स्कूल की इमारत मजबूत बनवाने के लिए सरकार की ओर से पैसे आये है इस पैसे को हडपने के लिये स्वार्था स्वार्थी प्रधान फत्तेसिंह राजनीति के अनेक दावपेंच अपनाते है।

''श्रीधर डाल - डाल तो प्रधान पात - पात।

दो दिन बाद - फिर - 'यार बख्त बरबाद मत करो। एक - एक दिन टैम निकलता जा रहा है। सारी भाग - दौड अकारथ हो जाएगी। नैम - कानून पीछे समझाते रहना भइया, अभी तो तुम इस काम को पार पर डालो। बात गॉव के हित की है सोलहों आना।'

'प्रधानजी, गॉव के हित की ही बात है, लेकिन जिन गॉवों में इमारतें खण्डहर हो गई, या बनी ही नहीं, उनका हक ?

'श्रीधर मास्टर, तुम बार - बार उन गॉवों की बात क्यों ले पडते हो? उन गॉवों के प्रधान साले गावधू हैं। अपना भला - बुरा नहीं सोचते कुऍ के मेंटक। उनके नाम पर तुम बेकार ही ढप बजाने में लगे हों', कहकर गुस्साते हुए चले गए थे प्रधानजी।

'प्रधानजी श्रीधर के करीब खिसक आए। फुसफुसाकर बोले-अगले दिन..।'' 12 इस तरह स्वार्थी प्रधान फत्तेसिंह मास्टर श्रीधर को डराकर, फुसलाकर, मीठे बोल बोलकर अर्जी पर दस्तक लेना चाहता है।

''प्रधानजी के जुबान में शहद घुल आया।

''मारो गोली। नहीं मन मानता तो न सही। हमारा मास्टर कह रहा है कि यह बिल्डिंग सही - सलामत है, तो हम उसके कहे को गलत कैसे ठहरा सकते हैं? अफसर - अहलंकार भी हमें जाल में फॉसने की जुगत बिठाते रहते हैं, मास्टरजी। साले अपना तो ईमान बिगाडने ही हैं, हमारा भी लोक - परलोक मेटने पर तुले हैं।''

''प्रधानजी ने अर्जी उसी जगह फाडकर फेंक दी। श्रीधर ने ऑखे फैलाकर देखा।,

'ऐसे क्या देख रहे हो मास्टरजी? साले चुनाव ने हमें भी पागल बना दिया कि नब्बे हजार मिलेंगे, काट - पीटकरजो बेचेंगे, चुनाव में काम आ जाऍगे। फसल आने पर भर देंगे या न भरेंगं। बी.डी.ओ. साहब ने खास तौर पर कहा था कि लगाओं अर्जी। फंड आ रहे है। बेईमानों की जमान जुडी है। गॉव के आदमी हमने खूब जॉच लिखा। हमारे और हमारे गॉव के भाग्य कि आप जैसा हीरा आदमी...' प्रधान का कंठ भर सा गया।'' 13 इस तरह अवसरवादी नेता का प्रतिक फत्तेसिंह समय आते ही रंग बदलने वाले राजनीतिक नेता का रूप है। जिसके सिर पर राजनीति हावी हो गई है। इसलिए वह गांव के बच्चों के स्कूल के इमारत के लिए आये फंड का उपयोग चूनाव के लिए उपयोग में लाना चाहता है। इस प्रकार गंदे राजनीतिक खेल और अवसरवादी नेताओं का यथार्थ चित्रण करते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास के माध्यम से शिक्षा क्षेत्रों में फैले भ्रष्ट राजनीति का चित्रण किया है।

7.3 शिक्षा में भ्रष्टाचार :-

आज भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार नाम के भस्मासूर ने अपने हॉथ - पॉव फैला दिये है । आज के स्वार्थी, भोगवादी मनुष्य ने समाज में अराजकता का वातावरण निर्माण किया है । जिसे राजनीति साथ कर रही है । कह सकते है कि राजनीतिक क्षेत्रे ने प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार की गंदगी को पनपने के लिए प्रोत्साहन दिया है। जिससे भारतीय समाजजीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नही रहा है। शिक्षा के माध्यम आधुनिक समाज की निर्मिती चाहनेवाले शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार ने प्रवेश किया है । जिससे क्षेत्र में भी शिक्षा, विभाग, शिक्षा अधिकारी, कुलपती, कुलगुरू, प्राध्यापकों से लेकर अध्यापकों तक सब शामिल हो गये है। साथ ही शिक्षा संस्थाओं को चलाने वाले शिक्षा संस्थापक, चेअरमन, सदस्य, गॉव के प्रधान से लेकर शिक्षामंत्री तक सब लोगों शिक्षा केंद्रो को राजनीति के अड्डे बनाकर शिक्षा और राजनीति में भ्रष्टाचार का गठबंधन हुआ है । जिससे देश का भविष्य निर्माण करनेवाली भावी पीढी को सुसंस्कारित बनानेवाला क्षेत्र के लिए, यह स्थिती चिंताजनक है । यह स्थिती देश के भविष्य के लिये चिंताजनक शाबीत हो सकती है।

आज देश के ग्रामीण समाज में भी राजनीति के माध्यम से भ्रष्टाचार के किस प्रकार प्रवेश किया है, इसका चित्रण मैत्रेयी पुष्पाने अपने 'इदन्नमम' और 'चाक' उपन्यास में किया है। शिक्षा क्षेत्र भ्रष्टाचार को प्रवेश हो जाने से शिक्षा व्यवस्था खोखली बनती जा रही है, और छात्रों का भविष्य खतरें में दिखाई दे रहा है। 'इदन्नमम' में गोंती के प्रधान अपने स्कुल में आगे के शिक्षा का कोई इंतजाम नही है, इस पर दु:खी, चिंतीत होकर अपने पासवाले 'मबूसा' गांव में राजनीतिक नेता लोग और शिक्षा क्षेत्र के लोग मिलीभगत करते हुए किस प्रकार एक ही गांव में दो - दो स्कूल बनवाकर पैसा हडपने की तरकीब निकालने है इसका यथार्थ चित्रण आया है। ''गोंति के प्रधान कहते हैं, ''मबूसा में दो - दो स्कूल है, पहला स्कूल ओवरसियर और प्रधान ने खारिज कर दिया है । इसलिए कि, पंद्रह प्रतिशत कमिशन लिया है ओवरसियर ने । कुछ उपर भी पहुँचाया होगा, उपरवालों ने और उपर। और एम.एल.ए.जी. के लिए सत - प्रतिशत वोट।'' 14

'चाक' उपन्यास तो शिक्षा क्षेत्र में चलनेवाले भ्रष्टाचार का 'दर्पण' ही है । इस उपन्यास में 'अतरपुर' गांव का चित्रण आया है । गांव के प्रधान फत्तेसिंह, हेडमास्टर

थानासिंह से लेकर सब लोग भ्रष्टाचार मे शामिल है । 'अतरपुर' गांव में स्कूल की इमारत है । परंतु उसी इमारत को मजबूत बनाने के लिए शासन - दरबार से फंड आ जाता है और उसी फंड को हडपने के लिये प्रधान फत्तेसिंह, हेडमास्टर थानासिंह से लेकर गांव के शिक्षित युवक रंजीत तक शामिल हो जाते है । परंतु, गांव में आये नये मास्टर श्रीधर प्रजापति फंड के अर्जीपर दस्तक करने के लिये तयार नही है, तो उनकी अहवेलना करते हुए उनका अपमान, प्रताडना की जाते है । अंत में तो गुंडों के द्वारा उन्हें पीटा भी जाता है ।

श्रीधर प्रजापती नेक, इमानदार एवं मेहनती मास्टर है वह गॉव के बच्चों की शिक्षा, उनके हक के बारे में सोचते रहते है । इसलिए अतरपुर गांव में स्कूल की इमारत मजबूत होने पर उसे नई बनवाने के लिये रोक लगाते है । बॉदिपूर गांव से तबादला होकर श्रीधर अतरपुर आये है, उनका कहना है बॉदिपुर के गॉव के बच्चों को नये स्कूल की आवश्यकता है क्योंकि वहॉ के बच्चे स्कूल की इमारत न होने की वजह से पेड के नीचे तीखी धूप, किरकिराती ठंड और ऑधी पानी के मौसम में भी वहॉ बैठकर ही शिक्षा हासिल करते है । उनका अधिकार छिनने का हमे हक नही है । इसलिए वह अतरपुर में स्कूल बनवाने के लिए विरोध करते है । गांव के प्रधान फत्ते सिंह उन्हें हर प्रकार से समझाने कि कोशिश करते है यहॉ तक की उन्हें भी भ्रष्टाचार में शामिल करने की सोचते हुए उन्हें कहते है । ''हिस्सा तुम्हारा भी होगा । मुफ्त में नही लेना चाहते तुम्हारे दस्तक । जब सबके दस्तक की कीमत हैं तो तुम्हारे दस्तकों की क्यों न होगी? दो कोठर भी खडे नहीं करने । इसी स्कूल, की रॅगाई पुताई करवानी है, बसा इंजिनियर बिल्डिंग पास करा देगा, अहलाकार दस्तक करके मंजूरी दे देंगे । बोलो तुम कितना मॉगते हो? दस हजार? बारह? चलो पंद्रह हजार तक ।'' 15 इस तरह शिक्षा विभाग में के अधिकारियों से लेकर गांव के प्रधान तक सब भ्रष्टाचार में शामिल होते है इसका उदाहरण 'चाक' उपन्यास है ।

'चाक' उपन्यास के 'अतरपुर' गॉव के हेडमास्टर थानासिंह भ्रष्टाचारी है वह स्कूल में पंद्रह - पंद्रह दिन तक आते नही है अपने गैरहाजिरी में प्रधान फत्तेसिंह के लडके हुकमा से कामकरवाते हुये उससे जाली दस्तक करवाते हैं । नये मास्टर श्रीधर प्रजापति इसका विरोध करते है । तब शिक्षा विभाग, स्कूल यह पैसे कमाने के अड्डे है यह बात श्रीधर मास्टर को समझााते हुए हेडमास्टर थानासिंह पैसे कमाने कि तरकीब श्रीधर

मास्टर को बताते है । ‘‘मास्टर के हाथों में कुबेर का खजाना नहीं होता, सृष्टी का खजाना होता है । जिसके बालक की चुटिया हमारे हाथ में हो, फिर क्या दुर्लभ, क्या कठीन? मैने एक बात सोची है । अब की बार छमाही इम्तहान में आये से त्यादा बालक फेल कर दो, सालाना में दूसरे आधे .... म्हतारी बाप भागे - भागे आएँगे तुम्हारे पास और टयूशन के लिए गिडगिडाएँगे । यह कोई इण्टर कॉलेज नहीं कि हर बच्चा टयूशन की नसैनी चढे बिना अगली कक्षा में चढ जाता है । यहाँ तो हमें ही युक्ति सोचनी पडेगी । सो सोचली तरकीब । मनमाने पैसे माँग लेना । थोडा नामालूमसा कमीशन मेरा ।’’ 16 इस तरह गाँवे के अशिक्षित, हेडमास्टर थानासिंह बच्चों को टयूशन भेजने के लिए गांववालों को विवश करता है और पैसा कमाता है ।

‘चाक’ उपन्यास के ‘अतरपुर’ गाँव में आये नये मास्टर श्रीधर प्रजापति भ्रष्टाचार का विरोध करते है । मेहनत लगन एवं इमानदारी से शिक्षा हासिल लिये श्रीधर मास्टर गरीब और सर्वहारा वर्ग के प्रतिक है वह गाँव के प्रत्येक बालक का शिक्षा को अधिकार प्राप्त होना चाहिए इस विचार के है । निम्न जाति के श्रीधर मास्टर ने कठीण परिस्थितियों का सामना करते हुए शिक्षा हासिल की है । इसलिए शिक्षा विभाग में चलनेवाले भ्रष्टाचार का वह हर समय विरोध करते है परिणामस्वरूप उनका बार - बार तबादला होता रहता है । ‘‘बाँदीपूर से चौबीस घंटे के नोटिस पर निकाला गया । ऐसे ही हसनगढ में बच्चों की पास कराई को लेकर हंगामा किया था कि बच्चे तो अपनी मेहनत से पास होते हैं । पास - कराई की रकम बढती चली जा रही है, गरीब और छोटी जाति के बालकों को इसलिए फेल किया जाता है । श्रीधर आदर्श का पुतला है, कहते हैं, अफसरों के खिलाफ भी... परीक्षा परिणाम शीट पर एस.डी.आय.दस्तखत नहीं करता । कारण । लोभ - लालच ! मैं पर्दाफाश करके रहूँगा ।’’ 17

इस तरह ‘चाक’ उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने भारतीय समाज के शिक्षा व्यवस्था में फैले राजनीति और भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण करने के साथ - साथ समाधान ढुँढते हुए नये अध्यापकों को भ्रष्टाचार को विरोध करना चाहिए । यह श्रीधर मास्टर जैसे मेहनती, ईमानदार अध्यापकों के माध्यम से चित्रित करते हुए भ्रष्टाचार का विरोध किया है ।

‘इदन्नमम’ उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने उच्च शिक्षा क्षेत्र में चलनेवाले भ्रष्टाचार का चित्रण किया है । ‘इदन्नमम’ उपन्यास का पात्र ‘मकरंद’ इलाहाबाद के कॉलेज में

डॉक्टरी की पढाई करता है । कॉलेज में चलनेवाले राजनीति एवं भ्रष्टाचार का वर्णन 'मंदा' को लिखे पत्र में वह इस प्रकार करता है । ''मेहनत तो की थी मैंने, लेकिन डर लगता है यहाँ। उन्हीं के बेटों - बेटियों से खतरा रहता है। अंधेर मचा रखा है इस लोगों ने । श्रम पर गुना भाग का कब्जा ।'' 18 इस तरह उच्चशिक्षा विभाग में भी प्राध्यापकों, अध्यापकों, उनके बच्चों का अधिकार लक्षीत होता है । जिससे धन और पद का गलत इस्तमाल करते हुए डोनेशन के माध्यम से धनिक लोग, प्राध्यापकों के बच्चों को प्रवेश मिलता है और गरीब, मेहनती छात्रों पर अत्याचार होता रहता है। इससे स्पष्ट होता है कि आज शिक्षा क्षेत्र धनिको, राजनीतिक नेता लोग, संस्थाचालाकों, प्राध्यापकों के शिकंजे में कसता जा रहा है । परिणाम स्वरूप ; मेहनती, गरीब, बुध्दिमान छात्रों पर अन्याय होकर वह शिक्षा से दूर होते जा रहे है । इस का यथार्थ चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से किया है।

7.4 विद्यालय भवनों की दयनीय स्थिती :-

'शिक्षा' मनुष्य के महत्वपूर्ण सुविधा के अंतर्गत आती है । शिक्षा के माध्यम से एक सुसंस्कसरित नागरिक देश को प्रदान किया जाता है। इसलिए शिक्षा क्षेत्र पर शासन ढेर सारा पैसा खर्च करते हुए अनेक योजनाओं के माध्यम से शिक्षा सुविधा देने का प्रयास करता है। परंतु शिक्षा क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार के कारण आज भी ग्रामीण इलाकों में शिक्षा केंद्रो की दुरावस्था ही है छात्रों को स्कूलों में प्राथमिक सुविधा तक उपलब्ध नहीं है।

'इदन्नमम' में चित्रित 'श्यामली' गांव का स्कूल प्राथमिक सुविधाओं से दूर है । ''दादा ने कहा था कि स्कूल में एक बाथरूम होना चाहिए। पढनेवाली मोडियन को पेसाब - मेसाब की दिक्कत रहती है। बस किरिया भर जगह चाहिए, पर कौन देता है, चुप लगा गये देते थे स्कूल के लिए, पर अब तो लल्ला भी विवस हो गये। नर्सरी तो पराये मोंडों के नाम चली अभी ।'' 19 इस प्रकार देश के स्वतन्त्रता के पचास साल बाद भी ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में बाथरूम, पीने काजल, आरोग्य जैसी सुविधाएँ उपलब्ध नही है जिससे ग्रामीण समाज की ज्यादातर, छात्राये शिक्षा से वंचित रहती है प्राथमिक सुविधा के न रहते माँ - बाप लडकियों को स्कूल नही भेजते दूर - दराज के गावों में पढने के लिये भजने से तो उनका इनकार ही होता है । परिणामस्वरूप स्कूलों की दूरावस्था भारतीय

शिक्षा व्यवस्था की दूरावस्था का यथार्थ चित्रण करती है और सवाल खडा करती है कि क्या इन स्कूलों के माध्यम से भारत का भविष्य निर्माण होगा? यह सवाल खडा करते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने की अपेक्षा व्यक्त की है।

'चाक' उपन्यास में चित्रित 'अतरपुर' गांव के स्कूल के इमारत का उपयोग हर प्रकार से होता है। ''स्कूल का काम बहुआयामी है। बरातघर, पंचायतघर, मेहमानघर, दावतघर और प्रधानजी यदि अपनी फसल समय पर न बेचना चाहें तो उनका बीजयोदाम भी । आजकल स्कूल राजनीति का मोहरा बना हुआ है। भँवर जैसे युवक यहीं कहते हैं।'' 20

इस तरह ग्रामीण इलाकों मे राजनीति और भ्रष्टाचार के पनपते बच्चों को शिक्षा के लिए स्कूल की इमारते नही है। तो दूसरी तरफ जो इमारते है उसका गलत इस्तमाल होता नजर आ रहा है। ऐसी दशा में भारत के बच्चों से उच्चशिक्षा की अपेक्षा करना व्यर्थ है। इस स्थिति को बदलने के लिए शासन दरबार से शिक्षा क्षेत्र में पनपते भ्रष्टाचार को रोकना चाहिए साथ ही बालकों को प्राथमिक सुविधाएँ उपलब्ध करा देना आवश्यक है।

7.5 निष्कर्ष :-

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' और 'चाक' उपन्यास के माध्यम से ग्रामीण जीवन के शिक्षा क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार और राजनीति के प्रभाव को दृष्टी गोचर किया है।

आज की वैज्ञानिक एवं संगणक युग में हमारे देश के बच्चों को उन्नत बनाना हो शिक्षा व्यवस्था को सक्षम बनाना आवश्यक है। यह विचार रखते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण जीवन के अशिक्षा, पिछडेपन का वर्णन करते हुए वहाँ शैक्षिक सुधार की आवश्यकता की ओर ध्यान खींचा है। देश स्वतन्त्रता के पचास साल बाद भी शिक्षा के प्रचार - प्रसार की आवश्यकता है। साथ ही समाज के तह तक शिक्षा के प्रचार - प्रसार के लिये शिक्षा क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार को जड से हटाने कि आवश्यकता है। इस बात को अंजाम देने के लिए गांव के विकास में राजनीति में मंदा और सारंग जैसे स्त्रियों का आना आवश्यक है जो देश, समाज का भविष्य सोचत हुए एक उज्वल भारत का निर्माण कर सकती है। इस अपनी इच्छा को मैत्रेयी पुष्पा ने 'मंदा' और 'सारंग' के माध्यम से स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज के राजनीति और शिक्षा विभाग में बदला की कामना की है।

अध्याय सात

संदर्भ संकेत

1) डॉ.नीता पांढरपांडे, 'हिन्दी उपन्यासों में शैक्षिक समस्याएँ', पृ - 114

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', पृ - 342

3) वही, पृ - 343

4) वही, पृ - 253

5) वही, पृ - 343

6) वही, पृ - 342

7) अनिल कुमार पाण्डा, 'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें' पृ-314

8) डॉ.सत्यदेव त्रिपाठी, 'हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्श', पृ - 22

9) मैत्रेयी पुष्पा 'इदन्नमम' पृ - 232

10) ए.आर.देसाई, 'भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र', पृ - 156

11) डॉ.रामदरश मिश्र, 'डॉ.ज्ञानचंद गुप्त (संपा), 'हिंदी के ऑचलिक उपन्यास' पृ - 43 - 44

12) मैत्रेयी पुष्पा, 'चाक', पृ - 243

13) वही, पृ - 244

14) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', पृ - 232

15) मैत्रेयी पुष्पा, -चाक', पृ - 243

16) वही, पृ - 172

17) वही, पृ - 168

18) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', पृ - 245

19) वही, पृ - 253

20) मैत्रेयी पुष्पा, 'चाक' पृ - 30

उपसंहार

साहित्य समाज का धरोहर है, एक - दुसरे पर अन्योन्यश्रित साहित्य और समाज का अटूट एवं सदूर सम्बन्ध है । किसी भी देश, समाज को समजने के लिए साहित्य साहय करता है । साहित्यिक क्षेत्र में उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसके द्वारा समस्त मानव - जीवन की भावनाओं एवं चिन्ताओं, समस्याओं को अभिव्यक्ति मिलती है । इसलिए साहित्य को समाज का 'दर्पण' कहा जाता है । उपन्यासकार समाज का अभिन्न अंग होने के नाते अपने समय के जीवन की यथार्थता, सत्यता, आवश्यकता तथा संभावनाओं को अनुभवों के आधार पर चित्रित करता है । हिंदी उपन्यास साहित्य में भी समय के साथ लेखिकोंने अपने - अपने परिवेश, जीवन अनुभवों की पृष्ठभूमी पर आधारित उपन्यास साहित्य लिखा ।

भारत देश का सच्चा रूप 'गाँवों' में दिखाई देता है । आज देश स्वतंत्रता के ५० साल बाद वैज्ञानिक, प्रायोगिक विकास का स्विकार करते हुए आधुनिक भारत के रूप में 'संगणकीय युग' में जी रहा है । परंतु, फिर भी भारत देश के दूर - दराज में पर्वत - पहाडी इलाकों में बसे 'गाँवों' में कोई बदलाव नही आया है । परंपरागत वर्णव्यवस्था, अन्याय - अत्याचार, रूढी - परंपराओ, अंधश्रध्दाओं में जीनेवाला अज्ञानी समाज विकास से कोसो दूर है । शिक्षा, आरोग्य, जल, बिजली जैसी प्राथमिक आवश्यकता में भी कई गांवों में पहुँची नही है । आज भी वह मध्यकाल में जी रहे है, ऐसे गाँवों के विकास के लिए सरकार प्रयत्नशील है । परंतु, गिने, चुने शिक्षित लोग और स्वार्थी नेता लोग अपने स्वार्थ के लिए समाज में फैला अंधकार मीटाना नही चाहते है । ऐसे ही गाँवो का यथार्थ चित्रण

करनेवाली समकालीन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण जीवन को अपने साहित्य का केंद्र बनाकर आज के आधुनिक भारत में पीछडे ग्रामों का यथार्थ समाज के सामने लाने का बेबाकी से प्रयास किया है । और उसमे वह सफल भी हुई है । आज हिंदी साहित्य मे 'दबंग' लेखिका के रूप में मैत्रेयी पुष्पा अपना स्थान निर्माण कर चुकी है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में शैक्षिक समस्याओं के सन्दर्भ में प्रस्तुत अध्ययन से निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त होती है।

उपलब्धियाँ :-

१) समकालीन महिला लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान शीर्षस्थ है। उनके साहित्य को परखने के लिए लेखकिय व्यक्तित्व से परिचित होना आवश्यक होता है । क्योंकि साहित्यकार जिस समाज, परिवेश मे पलता - बढता है उसका प्रभाव उसके साहित्य पर रहता है। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 'गॉव' मे हुआ, बचपन से ही ग्रामीण समाज जीवन को नजदीकता से देखा परखा और भोगा है । जो मैत्रेयी का साहित्य उसके अनुभवजन्य जीवन का यथार्थ है। स्वतन्त्रता के पूर्व तीन साल जन्मी मैत्रेयी ने अपने समय में भी गांववालों के मन में कुर्की - निलामी और सेठ - साहुकारों का डर देखा है । गांव के लोकगीतों, लोककथाओं के माध्यम से ग्रामीण नारी की यातनाओं, शोषण को सुना और देखा है। अपने गांव के बुंदेलखण्डीय प्रदेश के पर्वत - पहाडी इलाको में रहनेवाले शोषित किसान, मजदूर, भूमीहीन लोगों का जीवन, उनकी यातनाओं, पीड़ाओं को वास्तविकता के साथ चित्रित किया है। मॉ 'कस्तूरी' जो शिक्षा को स्त्री मुक्ती का द्वार मानती थी। ऐसी दबंग नारी की पुत्री मैत्रेयी पर भी अपने परिवेश, समाज का व्यक्तित्व निर्माण में गहरा प्रभाव दिखाई देता है। बचपन से ही दीन - दलित, शोषितों के प्रति सहानुभूति रखनेवाली मैत्रेयी 'मानवता' की सजग प्रहरी है । उन्होंने समाजवाद और लोकतंत्र विश्वास रखा है, जो अपने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण समाज को बदलने का चक्र उन्होंने स्त्रियों के हाथों में सौपा है।

२) प्राचीन गुरूकुल पध्दती में गुरू और शिष्य दोनों आचार - विचार के लिए व्यक्तिमत्व विकास कि ओर ध्यान दिया जाता था । आज के आधुनिक युग में शिक्षा केंद्रों की

संख्यात्मक वृध्दी हुई, गुणात्मक वृध्दी के लिए मूल्य शिक्षा, अनुशासन कि आवश्यकता है।

३) देश के स्वतन्त्रता के ५० साल बाद भी दूर - दराज के गॉवों में शिक्षा कि सुविधा नही है। परिणामस्वरूप आज समाज शिक्षा दूर रह रहा है। आवश्यकता है प्रत्येक गांव में स्कूल होने चाहिए।

४) दूर - दराज के गांवों में उच्चशिक्षा की सुविधा न रहने के कारण गांव की लडकियों को आज भी शहर में शिक्षा के लिये भेजा नही जाता है। इसलिए उच्चशिक्षा केंद्र तहसिलों में तैयार होने चाहिए।

५) लडकी पराये घर का धन है इसलिए उसे शिक्षा देने की आवश्यकता नही है। यह ग्रामीण लोगों की धारण बदलने की आवश्यकता है। लडकों के बराबर लडकियों को शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए।

६) ग्रामीण क्षेत्र की लडकियॉ शिक्षा ग्रहण करे, इसके लिए स्कूलों में आवश्यक सुविधाऍ उपलब्ध करा देनी चाहिए।

७) परिवार कि जिम्मेदारी, बच्चों की परवरीश के कारण आज भी स्त्री को उच्चशिक्षा लेने से रोका जा रहा है। उसके 'कैरियर' विकास के लिए उच्चशिक्षा आवश्यक है। लडकों की बराबरी में वह भी हर क्षेत्र को सभाल सकती है। 'विजन' की 'नेहा' और 'आभा' को उच्चशिक्षा के लिए संघर्ष करना पडा। शहरों में बसे पढे - लिखे माता - पिता ने भी पुराने रीति - रिवाजों को छोडकर लडकियों के उच्चशिक्षा के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। एक स्त्री है इसलिए वह परिवार का पदक बनके न रहे। बल्कि, उसे भी प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने का मौका उपलब्ध करा देना चाहिए।

८) भ्रष्ट राजनेता, अध्ययन विरोधी अध्यापक, भ्रष्ट अध्यापकों के कारण आज भी ग्रामीण इलाकों में सरकार ने दी हुई शिक्षा संबंधी सुविधाऍ उपलब्ध नही कराई जाती है। परिणामस्वरूप आज भी 'बांदीपूर' और 'आतरपूर' की गांव की तरह बच्चों कों पेड के नीचे बैठकर शिक्षा हासिल करनी पडती है। इसलिए शिक्षा क्षेत्र में बढते भ्रष्टाचार, एकांतिक प्रवृत्तियॉ, विषमताओं, सामाजिक विद्रुपताओं, अनैतिकता आदि का यथार्थ चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' और 'चाक' उपन्यास में किया है और उसका

समाधान ढूँढते हुए ईमानदार, नेक श्रीधर मास्टर और सारंग, मंदा जैसी स्त्रियों के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने की आवश्यकता को स्पष्ट किया है।

९) मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य चिंतन और समीक्षा दृष्टि का अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि उनकी विचारधारा समाजवादी के निकट आवश्यक है । इसलिए समाजवादी समाज के निर्माण के लिए वह लोकतंत्र पर विश्वास करती है और 'वोट' के अधिकार का महत्व 'इदन्नमम' और 'चाक' उपन्यास के माध्यम से जनता के सामने प्रस्तुत करते हुए। चुनाव के माध्यम से योग्य लोकप्रतिनिधी चून कर देने से अपने गांव में हम सुधार ला सकते है। बिजली, रास्ते, आरोग्य, शिक्षा जैसी सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए भ्रष्ट राजनेताओं को हटाकर नेक राजनेता चूनकर हम गांव में सुधार ला सकते है । वह ताकत औरतों में भी है यह विचार मैत्रेयी पुष्पाने 'इदन्नमम' की 'मंदा' और 'चाक' की 'नेहा' के माध्यम समाज के सामने रखा है । आवश्यकता है स्त्रियों को राजनीति में स्थान देने की।

१०) समकालीन शिक्षा में व्याप्त अनैतिकता, भ्रष्टाचार, पदभ्रष्टता, अन्याय के प्रति रचनाकार के मन में चिंता दिखाई देती है। 'इदन्नमम' के 'मकरंद' और 'विजन' की 'आभा' के माध्यम से लेखिकाने आज के उच्चशिक्षा में फैली भ्रष्टता का चित्रण करते हुए उसे बदलने की इच्छा व्यक्त की है।

११) आज 'विश्व कुटुंबकम' की कल्पना वास्तवता में आ रही है, ऐसी अवस्था में भारत देश के समाज पर 'वर्णव्यवस्था, धर्म' का प्रभाव अत्याधिक है परिणामस्वरूप अपने ही समाज के दलित, आदिवासियों को आज भी वह अपने है इस भावना से स्विकारने के लिए तयार नही है। यह भावना देश के भविष्य के लिए भी खतरनाक है और आंतर्राष्ट्रीय स्तर भारत की शान को इस कुप्रथा के कारण शर्मनाक होना पडता है । इसलिए जातिप्रथा, समाज में स्थित कुप्रथाओं को खत्म करने के लिए शिक्षा के प्रचार - प्रसार कि आवश्यकता है।

१२) दलित - आदिवासी लोगों आज भी जातिप्रथा के शिकार हो रहे है। 'अल्मा कबूतरी' का 'रामसिंह' 'राणा' और 'इदन्नमम' का 'भृगुदेव' ऐसे ही उत्पीड़ीत, कुंठित और यातनाओं को भोगे पात्र है। जाति प्रथा व्यवस्था की चोट खा - खाकर वह लहुलुहान हुए है। 'शिक्षा' ही अपने मुक्ती का मार्ग है यह सत्य स्विकारते हुए मैत्रेयी पुष्पा ने इन्ह पात्रों

को अनेक संघर्ष के बावजूद हिम्मत न हारकर शिक्षा को ग्रहण करते दिखाया है। यह चित्र भारत देश के दलित, आदिवासी छात्रों के लिए प्रेरणादायी है।

१३) मैत्रेयी पुष्पा 'मानवता' पक्ष की धरोहर है। ग्रामीण लोगों यातना, पीडा वेदना को उन्होंने नजदीकता से देखा भोगा है। किसान, भूमीहीन, मजदूर, स्त्रियों की होनेवाली उपेक्षा को दिखते हुए वह समाजवादी समाज की माँग करती है। आज के आधुनिक समाज जटिलता से भरा पडा है। परंतु इससे मार्ग निकालने के लिए प्रत्येक मनुष्य को स्वतंत्र व्यक्ति बनकर अधिकार प्रदान करने के लिए अपने लोकतंत्र को सक्षम बनाने कि आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना है। जिससे समाज में व्याप्त समस्यायें तथा जटिलता पर हम मार्ग निकाल सकते है। वह ताकत समाजवादी व्यवस्था में होती है यह 'इदन्नमम' के पारीधा गांव के टिकमसिंह प्रधान की कथाा के माध्यम से स्पष्ट किया है। आवश्यकता है गाँव के लोगों को शिक्षित करना।

१४) मैत्रेयी पुष्पा का 'अल्मा कबूतरी' परंपरा से अलग लिखा गया उपन्यास है। सदियोंसे जिन्ह मानव समाज को अपराधी करार करते हुए मानवाधिकार से दूर रखकर गरिबी, यातना, पीडाओं की दर्दनाक जिंदगी बहाल की उस समाज के स्त्री कि कहानी नायिका 'अल्मा' अपने पिता रामसिंह द्वारा शिक्षा का मूलमंत्र ग्रहण करती है। अपराधी जनसमूह की होने के कारण उसके समाज पर होनेवाले अन्याय को दूर करने के लिए वह संघर्षो को झेलती हुई अपने समाज के लिए रामशास्त्री की विधवा होकर चुनाव में खडी हो जाती है। यहाँ आदिवासी समाज को मानवाधिकार देनी आवश्यकता स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज की बनावटी समाजव्यवस्था को तोडने कि क्रिया को अपने साहित्य के माध्यम से प्रारंभ किया है।

१५) विवेच्च उपन्यासों में रचनाकर ने मनुष्यजीवन के आवश्यक आवश्यकताओं को प्राप्त करने का संघर्ष चित्रित किया है। आरोग्य, शिक्षा जैसी सुविधाओं को प्राप्त करना यह उद्देश्य इन्ह उपन्यासों का रहा है। इसलिए संघर्षरत पात्रों कि निर्मिती करते हुए युवा पात्रों में समाज परिवर्तन कि शक्ति है यह दिखाते हुए, 'इदन्नमम' कि मंदा, मकरदं, इंद्रनील, भूगुदेव और 'चाक' उपन्यास के श्रीधर मास्टर और सारंग के हाथों समाज परिवर्ततन का चाक घुमाया है। 'युवा शक्ति' को लेखिकाने अपने साहित्य के माध्यम से उजागर करते हुए उपन्यास के पात्र और कथावस्तु को गरिमा और महत्ता प्रदान की है।

१६) विवेच्य उपन्यासों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है कि लेखिका ने प्रत्येक कथावस्तू में समाज परिवर्तन करने में स्त्री सक्षम है । अगर स्त्री शिक्षित हो जाती है तो घर - परिवार के साथ - साथ समाज में बदलाव लाने कि शक्ति रखती है, यह बात कलात्मक पध्दती से अभिव्यक्त की है।

१७) मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम', 'चाक', अल्माकबूतरी' और 'विजन' आदि विवेच्च उपन्यासों में राजनीति शिक्षा क्षेत्र आदि में चलनेवाले भ्रष्टाचार को नंगा कर दिया है । लेखिका उच्चशिक्षित है, वह समाजवाद में विश्वास रखती है । इसलिए समाज में चलनेवाली गंदी राजनीति, भ्रष्टाचार, स्वेच्छाचार, राजनीति और शिक्षा क्षेत्र में चलनेवाली गठ - जोड नीति, रिश्वतखोरी, दलबदल प्रवृत्ती आदि के विरूध्द समाज में विद्रोह जगाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष :-

मानव जीवन के विकास लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है । इसलिए आज भी शिक्षा से दूर रहे ग्रामीण समाज में शिक्षा का प्रचार - प्रसार आवश्यक इस बात को मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है । आज महानगरों में दी जानेवाली शिक्षा का अवमूल्यन बढता जा रहा है । रिश्वत, डोनेशन, रिश्तेदार, राजनीतिक नेता लोग और अध्यापकों का गठ - बंधन इन कारणों से शिक्षा क्षेत्र भ्रष्ट होता जा रहा है । इसका चित्रण मैत्रेयी ने 'विजन' और 'इदननमम' 'चाक', उपन्यासों के माध्यम से करते हुए सरकार द्वारा उपेक्षित गॉव, अकार्यक्षम प्रशासन, भ्रष्टाचारी अफसर, नेता लोग, व्यसनाधिन अध्यापक, अनैतिक, व्यभिचारी अध्यापक वर्ग, गॉवों में अधूरी शिक्षा व्यवस्था, शैक्षिक साधन - सुविधाओं का अभाव, ईमानदार, मेहनती अध्यापकों की कमी दलित - आदिवासी समाज का शिक्षा से दूर रहना, स्त्री को पराये घर का धन मानकर शिक्षा से दूर रखना आदि कई समस्याओं चित्रण करते हुए, इन बुराईयों पर व्यंग्य के कठोर प्रहार भी किये है । परंतु आवश्यकता है वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को बदलने की । शिक्षा केंद्रो का संख्यात्मक विकास न करते हुए गुणात्मक विकास की आवश्यकता है । शिक्षा क्षेत्र में फैली अव्यवस्था का उचित और मार्मिक चित्रण करते हुए मैत्रेयी पुष्पा शिक्षा समस्याओं को सफलता के साथ समाज के सामने पेश करने में सफल हुई । परंतु, उचित समाधान दे नही पाई है 'चाक' के माध्यम से मेहनती, ईमानदार

भ्रष्टाचार के विरोधी नेक श्रीधर मास्टर का चित्रण करते हुए शिक्षा के भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने का प्रयास प्रशंसनीय है। परंतु चाक, अल्मा कबुतरी, इदननमम, विजन के स्त्री पात्रों को समस्याओं झुजते दिखाया है उससे समाधान निकल आता तो समाज के लिए विकास का मार्ग प्राप्त हो जाता। फिर भी मैत्रेयी पुष्पाने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में स्थित विसंगतियों का जो से चित्रण किया है वह प्रशंसनीय है समाज मैत्रेयी के साहित्य को पढकर जरूर विचार मंथन करेगा। आनेवाली पीढी के लिए सक्षम शिक्षा व्यवस्था का निर्माण होगा इसलिए मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य ग्राम विकास के लिए दीप - स्तंभ का कार्य करते रहेंगे।

परिशिष्ट

साक्षात्कार

'शिक्षा संबंधी समस्याओं पर - प्रा.जमीर मोमीन से बातचीत'

प्रश्न - 1 प्राचीन शिक्षा प्रणाली के बारे में आप की क्या राय है ?

उत्तर - भारत के साथ - साथ पूरे विश्व में प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था 'धर्म' पर आधारित थी। धार्मिक साहित्य का विकास और प्रचार - प्रसार यह प्राचीन शिक्षा पध्दती का उद्देश था। छात्रों के व्यक्तित्व संवर्धन के साथ - साथ 'धर्म का प्रचार - प्रसार शिक्षा का मूल हेतू रहता था। भारत में प्राचीन काल से शिक्षा वर्णव्यवस्था पर आधारित थी। जिसमें शूद्रों और स्त्री को शिक्षाधिकार से दूर रखा था। बौध काल से शूद्रों और स्त्री को शिक्षा अधिकार प्राप्त हुआ। परंतु, फिर भी शूद्र और स्त्री शिक्षा से दूर ही रही। प्राचीन शिक्षा पध्दती गुरूकुलों में दि जाती थी जो गुरू केंद्रित थी। 'गुरू' को शिक्षा में उच्चस्थान था 'गुरू' याने 'सत्य' यह भावना रहने के कारण 'गुरूकूल' 'गुरू' के विचारों पर चलते थे। परिणाम स्वरूप ; लोकतंत्र पध्दती और व्यक्ति स्वातं™य को नकारा गया था। प्राचीन शिक्षा पध्दती में वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक, विवेकवादी दृष्टीकोन का अभाव था। परिणाम स्वरूप 'धर्म' के आधार पर संस्कृति का निर्माण करनेवाली शिक्षा पध्दती पुरूष प्रधान, भावनाप्रधान और धर्मप्रधान रही।

प्रश्न 2 - स्वतंत्रता के बाद 'स्त्री शिक्षा' की स्थिती के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर - स्वतंत्रता से लेकर आज तक स्त्री शिक्षा में सुधार होते हुए, विकासात्मक चित्र दिखाई दे रहा है। आधुनिक स्त्री कला, वाणिज्य, विज्ञान, अभियांत्रिकी, वैद्यकीय, कृषी तंत्रज्ञान अवकाश विज्ञान साथ ही स्पर्धा परिक्षाओं के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में अपना स्थान निर्माण कर रही है । आज के वर्तमान कालीन शिक्षा पध्दती में छात्राऐं ज्यादा अनुशासन प्रिय दिखाई देती है । परिणामस्वरूप लडकों से ज्यादा ज्ञान को आत्मसात करने की ललक उनमें ज्यादा है । शायद उन्हें सदियों से शिक्षा से दूर रखने का यह परिणाम है। परंतु, आज भी ग्रामीण भारत में अंधश्रध्दा, कुप्रथा, गलत रूढी - परंपराओं के कारण स्त्री को शिक्षा से दूर रखा जाता है और यह समाज विकास के लिए घातक है।

प्रश्न 3 - वर्तमान युग में दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यांक शिक्षा के प्रवाह में कहा तक है ?

उत्तर - 'शिक्षा' ही दलित, आदिवासी और अल्पसंख्याकों के मुक्ति के मार्ग है। किसी भी समाज की उन्नती शिक्षा के बिना नही हो सकती है । इसलिए दलित, आदिवासी, अल्पसंख्याकों ने 'शिक्षा' को अपनाना चाहिए । संविधान ने 'सामाजिक समता' प्रस्थापित करने हेतू दलित, आदिवासी, अल्पसंख्याकों को आरक्षण, अलग - अलग योजनाओं का निर्माण करते हुए 'शिक्षा' का मार्ग सूकर बना दिया है, आवश्यकता है इनका लाभ उठाकर शिक्षा को हासिल करना।

मुस्लिम समाज के 'मदरसा' में आज भी पारंपारिक उर्दू भाषा में धर्म की शिक्षा दि जाती है। परंतु आवश्यकता है समय के साथ बदलते हुए मुस्लीम समाज सुधारकों ने स्वायत्त शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से मराठी, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में विज्ञान, तंत्रज्ञान, अभियांत्रिकी, एवं वैद्यकीय ज्ञान उपलब्ध कराते हुए अपने समाज में परिवर्तन लाना चाहिए। रूढिगत समाज को मानसिकता को बदलकर स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना चाहिए।

प्रश्न 4 - नीजिकरण, बाजारीकरण और वैश्विकीकरण के दौर में भारतीय शिक्षा की स्थिती क्या है ?

उत्तर - नीजीकरण, बाजारीकरण और वैश्विकीकरण ने शिक्षा को बहुत प्रभावित किया है। इसलिए भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विश्व की शिक्षा नीति को जानकर - समझकर उसके अनुरूप अपने शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करते हुए, भारतीय समाज में

अत्याधुनिक शिक्षा प्रणाली का स्वागत करते हुएँ । संगणक माहिती - तंत्रज्ञान, व्यवस्थापन, वैद्यकीय, वाणिज्य क्षेत्र में आये हुए अलग - अलग पाठयक्रमों को स्त्रिकारना चाहिए। अधिक व्यापक, व्यावहारिक, गतिमान पाठयक्रमों का निर्माण करना चाहिए। साथ ही नैतिक मूल्यों का समावेश करते हुए शिक्षा को व्यावहारिक बनाया जाए जिससे कार्य कुशल छात्रों की निर्मिती हो सके।

प्रश्न 5 - सरकार की शिक्षा संबंधी योजनाओं की सफलता - असफलता के बारे में आपके विचार क्या है ?

उत्तर - सर्व शिक्षा अभियान, ऑपरेशन ब्लैक - बोर्ड, नवोदय विद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय, प्रौढ शिक्षा यह योजनाएँ समाज विकास के लिए एवं शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने हेतू अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। परंतु दुर्भाग्यवश यह कहना पडता है कि यह योजनाएँ कागजी ही रह जाती है क्योंकि प्रशासन की अधिकारी, शाला प्रशासन की उदासीनता के कारण यह योजना समाज के तह तक पहुँच नही पाती है और सरकार के शिक्षा प्रचार - प्रसार के हेतू असफल होते जा रहे है, यह कि दु:ख कि बात है।

साक्षात्कार
प्रा.जमीर मोमीन, शिक्षणतज्ञ,
M.A.,M.Ed.,NET/SET., L.L.M.
शिक्षणशास्त्र विभाग अध्यक्ष,
कला वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा - ४१५००२, महाराष्ट्र।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ :

मैत्रेयी पुष्पा - 'इदन्नमम' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय सं. 2007

वही - 'अल्मा कबूतरी' राजकमल पेपर बैक्स, नयी दिल्ली, प्रथम सं.2004

वही - 'चाक' राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, तीसरी आवृत्ती सं.2009

वही - 'विजन' वाणी प्रकाशन, 21 ए दरियांजन नयी दिल्ली, प्रथम सं.2002

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची :

सम्पा. विजय बहादूर सिंह - मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.2011

मैत्रेयी पुष्पा - 'मेरे साक्षात्कार', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2010

मैत्रेयी पुष्पा - 'कस्तूरी कुंडल बसै, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.१ बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नयी दिल्ली, प्र.सं.2002

मैत्रेयी पुष्पा - 'गोमा हँसती है' किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र.सं.1998

मैत्रेयी पुष्पा - 'सुनो मालिक सुनो; वाणी प्रकाशन, 21 ए, दरियागंज, नयी दिल्ली प्र.सं.2006

मैत्रेयी पुष्पा - 'गुडिया भीतर गुडिया' राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली प्र.सं.2008

प्रा.एल.जी.देशमुख - 'भारतातील शिक्षणाचा विकास ; फडके प्रकाशन, कोल्हापूर, प्र.सं.2004

डॉ.नीता पांढरी पांडे - 'हिन्दी उपन्यासों में शैक्षिक समस्याएँ ; अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं.2008

आर.ए.शर्मा - 'भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास ; आर.लाल. बुक डेपो, मेरठ, प्र.सं.2007

डॉ.के.पी.माथूर - 'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ ; आर.एस.ए.इण्टरनेशनल, आजरा, प्र.सं.2008

अनिल कुमार पाण्डा - 'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ ; साहित्य रत्नालय, कानपूर, प्र.सं. 2010

जे.सी.अग्रवाल - 'भारत में नारी शिक्षा ; विद्या विहार, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2009

संपा डॉ.अशोक धुलधुले - 'इक्कीसवी शती के हिंदी साहित्य में स्त्री एवं दलित विमर्श, ब्रेन टॉनिक प्रकाशन.

यज्ञदत्त शर्मा - 'प्रबंधसागर', अक्षरम प्रकाशन, सोनीपत, प्र.सं.1989

वेद प्रकाश अमिताभ - 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण', वाणी प्रकाशन प्र.सं.1997

जगजीवनराम - 'भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या', राजपाल एण्ड संस,दिल्ली, पृ.सं.1996

डॉ.देवेश ठाकूर - 'मैला आँचल की रचना प्रक्रिया', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.1987

भाई योगेन्द्रजीत - 'शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियाँ', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा - 2, प्र.सं.2009

डॉ.रामशकल पाण्डेय, डॉ.बीना कपूर - 'शिक्षा के दार्शनिक आधार विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्र.सं.2008

राम अहूजा - 'सामाजिक समस्याएँ', रावत पब्लिकेशन, जयपूर, द्वि. सं.2000

डॉ.अनिल रावत - 'अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता', चंद्रलोक प्रकाशन, कानपूर, प्रं.सं.1998

डॉ.सत्यदेव त्रिपाठी - 'हिंदी उपन्यास : समकालीन विमर्श', अमन प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं.2000

ए.आर.देसाई - भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, रावत पब्लिकेशन, जवाहरनगर, जयपूर, प्र.सं.1999

डॉ.रामदरश मिश्र, डॉ.ज्ञानचंद गुप्त (संपा.) - हिंदी के ऑंचलिक उपन्यास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1984

विवेकराय - 'स्वातं™योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्रामजीवन लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, अप्राप्त

विद्या सिन्हा - 'आधुनिक परिदृश्य : आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.2001

पत्रिका

'शोधदिशा' (शोध अंक - 13) जनवरी मार्च 2011

शब्दकोश

नवलजी (संपा) 'नालन्दा विशाल शब्द सागर', आदर्श बुक, नई दिल्ली, प्र.सं.2003

महेंद्र चतुर्वेदी 'साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश, पूनम प्रकाशन एवं प्रो.तारकानाथ बाली 1993

करूणा त्रिपाठी 'लघुशब्दसागर' अप्राप्त